भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 **फरवरी-मार्च** 2010 **अंक** 2-3

सद्ग्रन्थ, तुम हो अमर

शून्य का वह नाद शाश्वत,
नाट्य ताण्डव नटराज का।
ओ३म् से उत्पन्न, वाणीकृत अक्षर;
शब्द रसराज का।

ऋषि योग से श्लोक-ऋचाएँ,
वेद, उपनिषद, स्मृति, रामायण।
मृत्युलोक में प्रकृति संग
बने आज जीवन्त सहचर।

सद्ग्रन्थ तुम हो अमर!

हर भाव, रस, छंद, राग-
रागिनियों में ताल कलरव।
हर भाष, रास, प्रेम, प्रणय,
सौन्दर्य, प्रकृति में रव-रव।

पुलकन, थिरकन, काम मज्जन,
ज्ञान, गुण, आलोक, तमस;
असीमित समेट निज में
सिन्धु जल पीने को तत्पर।

सद्ग्रन्थ, तुम हो अमर!

केवल तुम हो, बस तुम हो,
सोऽहम्-सोऽहम् उच्चारण।
चिरंजीव सत्य श्री चिरन्तन,
हो सदैव सतत् प्राण भर।

जिजीविषा का अंकन,
चिन्तन, मंथन, कथा, कथन।
दिव्य रूप तारक छटा व्योम,
क्या होंगे दृश्यमान, डर।

सद्ग्रन्थ, तुम हो अमर!

—सुशील दाहिमा 'अभय'

ग्रन्थ-गरिमा

दुख-हरण का साधन है पुस्तक,
सुख-सुविधाजनक है पुस्तक।
ज्ञाननेत्र है पुस्तक,
मार्गदर्शक है पुस्तक॥

दुविधा में दिखाती हल पुस्तक
भयान्दोलन में दिलाती धैर्य पुस्तक।
एकान्तवास की साथिन है पुस्तक,
सच्चरित्र-निर्मात्री है पुस्तक॥

—अमरजी

नये क्षितिज की ओर

'होमोसेपियन' आदमी के मस्तिष्क में जैसे ही स्पंदन शुरू हुआ कि उसमें जिज्ञासा जागी, कुछ जानने की इच्छा तीव्र हो उठी। आदिम मनुष्य की यही जिज्ञासा आज तक विकसित ज्ञान-विज्ञान का प्रथम बिन्दु है। आरम्भ में यह ज्ञान (अनुभूति-जन्य एवं चिंतनपरक) मौखिक-परम्परा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित होता रहा और कालान्तर में लिपि के विकास ने ज्ञान की संरक्षा के लिए पुस्तकों का आकार दिया। आज यही पुस्तकें हमारी जानकारी का स्रोत हैं; वैश्वक-स्तर पर प्रचलित भाषाओं, बोलियों में उपलब्ध हैं पुस्तकें और पुस्तकें।

पुस्तकों का यही संसार, मनुष्य की जिज्ञासु-वृत्ति के समाधान के लिए हर दूसरे साल नया खजाना लेकर एकत्र होता है 'विश्व पुस्तक मेला' में। इस वर्ष भी नयी दिल्ली के प्रगति मैदान में दिनांक 30 जनवरी से 7 फरवरी 2010 तक की अवधि में आयोजित हुआ 19वाँ 'विश्व पुस्तक मेला'। इस द्विवार्षिक मेले का विषय (थीम) था 'रीडिंग अवर कॉमन वेल्थ' अर्थात् 'हमारे साझा वैभव का अध्ययन'। राष्ट्रमण्डल खेलों के परिप्रेक्ष्य में भारतीय प्रकाशन उद्योग के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए युवा पीढ़ी के पाठकीय विकास हेतु राष्ट्रीय कार्य योजना के अन्तर्गत एक विशेष मण्डप में भारत में प्रकाशित खेल पर केन्द्रित पुस्तकों के अन्तर्राष्ट्रीय स्वत्वाधिकार का प्रदर्शन भी आयोजित किया गया।

19वें विश्व पुस्तक मेला का उद्घाटन 30 जनवरी को पूर्वाह्न 10 बजे मानव-संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री कपिल सिब्बल ने किया। अपने उद्बोधन में श्री सिब्बल ने कहा कि ''इस विश्व पुस्तक मेला में एकत्र पुस्तकों के संसार का अभिनन्दन करते हुए मैं अभिभूत हूँ। यद्यपि आज अध्ययन में तकनीक का समावेश हो चुका है किन्तु पुस्तकें ही वह प्रारूप हैं जिनसे ज्ञान का सम्प्रेषण सम्भव है।''

पुस्तक मेला के एक विशेष मण्डप में पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखित एवं उन पर लिखी गयी पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया। इसके साथ पं० नेहरू पर बनाये गये वृत्तचित्रों और 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' पर आधारित श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित धारावाहिक 'भारत एक खोज' का प्रदर्शन भी चलता रहा। मेला के दरम्यान प्राय: हिन्दी के स्टालों पर प्रासंगिक गोष्ठियों और नये प्रकाशनों के लोकार्पण का सिलसिला भी जारी रहा जिनमें प्रबुद्ध-वर्ग की भागीदारी उल्लेखनीय थी।

वस्तुत: यह विश्व पुस्तक मेला अपने स्वरूप में ज्ञान-विज्ञान का विश्वरूप बन जाता है। इस विशाल वैश्वक-मंच पर प्रकाशन, वितरण, विपणन और प्रसारण के व्यवसाय संबद्ध लोगों में जहाँ पारस्परिक अंतर्सम्बन्धों के सुदृढ़ होने का अवसर मिलता है वहीं व्यवसाय से जुड़े लोग निरन्तर विकास के नव्य-आयामों से परिचित होते हैं। इस तरह के उपयोगी सन्दर्भों और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के रू-ब-रू पुस्तक मेला के इस महायज्ञ की सार्थकता असंदिग्ध है।

यद्यपि 2010 का यह द्विवार्षिक विश्व पुस्तक मेला अपनी सार्थक परिणति के साथ सम्पन्न हो चुका है तथापि कुछ त्रुटियाँ लगातार खटकती रहीं जिन्हें बिन्दुवार जान लेना

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

जरूरी है ताकि अगले आयोजन में सुधार किया जा सके। त्रुटि-सन्दर्भित कुछ बिन्दु—

(क) मेला में सिर्फ घूमने के शौकीनों को दूर रखने के लिए प्रवेश शुल्क की व्यवस्था सराहनीय थी, किन्तु शुल्क राशि 20/- रुपये कुछ ज्यादा थी, जिसे 10/- रुपये या उससे कम रखना ही उचित होगा।

(ख) प्रगति मैदान के विशाल क्षेत्र में विश्व पुस्तक मेला के लिए आवंटित हालों में अपेक्षाकृत ज्यादा दूरियाँ अंग्रेजी, हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के समान पाठकों, खरीददारों को भी दूर रखने का कारण बनीं। हॉल नं० 3, 4, 5, 6, 7, 14 अंग्रेजी और दूसरी विदेशी भाषाओं के लिए आवंटित थे तो हॉल नं० 12 असमी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, सिन्धी, उर्दू, कन्नड़, तमिल, मलयालम और संस्कृत के लिए एवं हॉल नं० 12-ए हिन्दी भाषा के प्रकाशनों के लिए दिये गये थे। इस तरह हॉल आवंटन की दूरियों ने विश्व-मंच की अवधारणा के सह-सम्बन्धों के साथ प्रसारण और विपणन को भी प्रभावित किया।

(ग) हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के कई छोटे प्रकाशक जिनकी प्रकाशित सामग्री कई दृष्टियों से उत्तम कही जा सकती है किन्तु पाठकों तक नहीं पहुँच सकी। मेले में आवंटित स्टालों का किराया अधिक होने के कारण ऐसे प्रकाशक ज़्यादा प्रसार नहीं कर पाये। हालाँकि इनके लिए किराये में 50 प्रतिशत छूट का प्रावधान है किन्तु मूल किराया ही इतना अधिक है कि 50 प्रतिशत के बाद भी छोटे प्रकाशकों के लिए यह अधिक सिद्ध होता है। ऐसे प्रकाशकों के लिए स्टॉल/स्टैण्ड के किराये में विशेष अतिरिक्त छूट दी जाय। ऐसे छोटे प्रकाशक कभी-कभी 'गुदड़ी के लाल' साबित होते हैं जो साहित्य और संस्कृति की संरक्षा का दायित्व निभा रहे हैं। इनकी मेले में भागीदारी ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि दिल्ली जैसे महानगर में ऐसे प्रकाशक का अपने एक-दो कर्मचारियों के साथ आवास-भोजन, पुस्तकों की ढुलाई, रखरखाव, दैनिक मार्ग-व्यय आदि काफी व्ययसाध्य होता है। अत: कारपोरेट-जगत के विपणन-तंत्र के सामने ऐसे प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्तम पुस्तकों का पाठकों से दूर होना भी एक शोचनीय स्थिति है। जिज्ञासु पुस्तक-प्रेमियों के लिए यह मेला एक प्रतीक्षित अवसर होता है जहाँ वे किसी नयी खोज के लिए आते हैं किन्तु अपने उद्देश्य से किंचित वंचित रह जाते हैं। जबकि अधिक तामझाम वाले प्रकाशकों-विक्रेताओं की सामग्री कई बार 'ऊँची दूकान फीका पकवान' ही साबित होती है।

19वें विश्व पुस्तक मेले के उद्घाटन दिवस पर दिल्ली के कई प्रतिष्ठित विद्यालयों के सैकड़ों छात्रों ने 'बुक मार्च' किया। किशोरवय छात्रों का यह मार्च उस धारणा को बदल सकता है जिसके अनुसार बच्चे पुस्तकों से दूर होते जा रहे हैं। अब कुछ दिनों में ही परीक्षाओं के बाद अवकाश होगा और यह अवकाश प्रत्येक वर्ग के विद्यार्थियों, अध्यापकों, आचार्यों के लिए ऐसे अध्ययन का समय होता है जो रूटीन अध्ययन-अध्यापन के बीच सम्भव नहीं हो पाता। अत: हर-एक की अभिरुचि, जिज्ञासा और ज्ञान की तलाश उसे एक नये क्षितिज की ओर ले चलती है। उसी अनजाने क्षितिज के उद्घाटन का अवसर है 'विश्व पुस्तक मेला'।

चलो, चलें—
नये क्षितिज की ओर
जहाँ गूँजते रहस्यों के शब्दवेधी-स्वर
प्रश्नों से टकराते उत्तर/जहाँ—
खुल रहे नित-नये रंग-बिरंगे आयाम....!

सर्वेक्षण

● **हाशिये पर :** 21 फरवरी का दिन, अन्य दिवसों की तरह मातृभाषा को समर्पित एक दिवस है। मगर इस दिवस की कोई सरगर्मी हाशिये पर भी नज़र न आयी। जबकि उपनिवेशवाद के दरम्यान और फिर पूँजीपरक वैश्वक-बाज़ार की आपाधापी के बीच दुनिया के सैकड़ों कबीलों की भाषाएँ लुप्त हो चुकी हैं या लुप्त होने के कगार पर हैं। ऐसे में जहाँ इस 'विश्व-मातृभाषा-दिवस' की प्रासंगिकता है वहीं इस दिवस का हाशिये पर चले जाना एक कसक छोड़ गया। हमें याद है कि भाषा के प्रश्न पर आयरलैण्ड ने इंग्लैण्ड से और बांग्लादेश ने पाकिस्तान से अपनी आज़ादी हासिल की थी। किसी भी समाज और संस्कृति की अस्मिता है मातृभाषा और इस मातृभाषा-दिवस को सुर्खियों में होना चाहिए न कि हाशिये पर।

●● **सुरसा का मुँह :** हर साल की तरह इस बार भी फरवरी-मार्च में हमारी केन्द्र-सरकार ने बजट पेश किया जो हर साल की तरह, सुरसा के मुँह की तरह और विकराल हो गया है। पता नहीं कितनी श्रमशक्ति और भौतिक-संसाधनों को समेट कर इसकी क्षुधा मिटेगी। जरूरत की चीज़ों की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि ने आम आदमी का जीना मुहाल कर रखा है वहीं जी-डी-पी की विकास-दर को 8 प्रतिशत तक पहुँचाने के लिए वित्तमंत्री की कवायद तमाम तरह की आर्थिक चुनौतियों से परिपूर्ण दिखलायी पड़ती है। इस बजट की खूबियों और खामियों के आकलन का यहाँ अवकाश नहीं किन्तु एक बात गौर करने की है कि जहाँ सुविधासम्पन्न वर्ग को और सुविधाएँ मिली हैं वहीं सामान्य-जन का जीवन दूभर हो उठा है। सम्भवत: इस बात के मद्देनजर यह पहली बार हुआ कि वित्तमंत्री के बजट अभिभाषण के बीच लोकसभा में समूचे विपक्ष ने वाक-आउट किया। लगता है कि वातानुकूलित भवनों में बैठकर जनता का बजट बनाने वाली सरकार महँगाई और विकास की ज़मीनी हक़ीकत से नावाकिफ़ है। इसीलिए तो प्रधानमंत्री ने विदेश-यात्रा से लौटते ही सपाटबयानी की कि 'बढ़ी हुई कीमतें कम नहीं होंगी।' इस संवेदनहीनता का जवाब तो समय ही देगा। हमें तो सुनायी पड़ती हैं आम-जन की चीत्कारें—

श्वानों को मिलता दूध
भूखे बच्चे बिलबिलाते हैं,
दूध-दूध, ओ वत्स!
तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं।

भाषा-साहित्य, संस्कार-संस्कृति के सृजन-संवेग के क्षण में नूतन वर्षाभिनंदन के साथ—

—परागकुमार मोदी

धार्मिक ठेकेदारी

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र

मध्यकाल में जब हिन्दू-मुस्लिम धार्मिक कट्टरता शिखर पर पहुँच गई तब परमेश्वर की कृपा से राष्ट्ररक्षा के लिये सन्तों का अवतरण हुआ। गुरुनानक, रैदास, कबीर, तुलसी, सूर, मीराबाई, दादूदयाल, मलूकदास, नामदेव, एकनाथ, नरसी मेहता आदि सैकड़ों सन्तशिरोमणि तथा महाप्रभु चैतन्यदेव, स्वामी रामानन्द, वल्लभाचार्य, विट्ठलाचार्य तथा स्वामी हरिदास जैसे श्रेष्ठ आचार्य प्राय: एक ही समन्वित कालखण्ड में पैदा हुए। इनमें से कुछेक सगुणोपासना के पक्षधर थे तो कुछेक निर्गुणोपासना के। सबने अपने-अपने ढंग से भगवद्भक्ति का प्रचार-प्रसार किया, जातिभेद एवं वर्णभेद ही नहीं प्रत्युत हिन्दू-मुस्लिमभेद को भी निरर्थक सिद्ध किया।

परन्तु ये सन्त धर्म के ठेकेदार नहीं थे। इनका न कोई स्थायी आवास था, न ही सम्पत्ति। ये यायावर वृत्ति के थे। प्रसुप्त जनता को प्रबुद्ध करना तथा उनमें जिजीविषा का महामन्त्र फूँकना ही उनका उद्देश्य था। उन्होंने शासकीय, सामाजिक तथा साम्प्रदायिक अत्याचारों में पिसती, क्षत-विक्षत जनता के घावों पर भगवद्भक्ति का मलहम लगाया। नानक, चैतन्य एवं स्वामी रामानन्द ने तो समस्त जातियों, यहाँ तक कि मुस्लिमों को भी हरिभक्ति में दीक्षित कर, हिन्दू एवं इस्लाम के कट्टरपंथियों को हतप्रभ कर दिया।

सन्तों का आन्दोलन शास्त्रीय रूढ़ियों का विरोधी था। वह उपास्य (ईश्वर) एवं उपासक के बीच कोई व्यवधान (शैक्षिक योग्यता, पुंस्त्व-स्त्रीत्व, शारीरिक शुचिता अथवा वर्ण) नहीं मानता था। उसकी तो खुली उद्घोषणा थी—'जाति पाँति पूछे नहीं कोय! हरि का भजे सो हरि का होय!!'

आजीवन ये सन्त फकीर के फकीर ही रहे—सर्वथा अकिञ्चन! परन्तु वे गुरु, पिता, माता, बन्धु, सखा एवं सगे सम्बन्धी बन कर जनता को अत्याचारों से बचाते रहे। वस्तुत: सन्तों ने ही धर्म की रक्षा की।

परन्तु आज क्या हो रहा है? धार्मिक ठेकेदारी प्रारम्भ हो गई है। गली-गली धार्मिक ठेकेदार तथा ठेकेदारिनें पैदा हो गई हैं। इनकी साज सज्जा, नेपथ्य-विधान, लटके-झटके, अधकचरे संस्कृत उद्धरण और पदे-पदे उद्धृत चुटकुले, कहानियाँ, अखबार की कतरनें—सब सुनते ही बनता है। बीच-बीच में औरतनुमा घुँघराली केशराशि की झटकन तथा आसन पर बैठे ही बैठे गायकी के अनुकूल प्रयुक्त इनका अंगहार (नृत्यमुद्रा) देखते ही बनता है।

एक कथावाचिका के मेकअप से तो मैं हतप्रभ हूँ। जिस रंग की साड़ी उसी रंग की टोपी, उसी रंग की माला, उसी रंग की....। अद्युत सौन्दर्य-चेतना (Aesthetic Sense) है जो बालीवुड से स्पर्धा कर सकती है। इनकी लन्तरानियों, बकवासों तथा लतीफाबहुल कथाओं में क्या मिलता है, यह तो श्रोता जानें? परन्तु मैं इतना अवश्य अनुभव करता हूँ कि ये हिन्दू धर्म के बचे-खुचे स्वरूप में घुन की तरह लग गये हैं।

मैं अपना बचपन याद करता हूँ। शिक्षित-अशिक्षित सभी धर्मभीरु थे, ईश्वरभीरु थे। गंगा-गीता तथा बेटे की कसम के नाम पर क्षुद्र से क्षुद्र गवाह काँप जाता था और कचहरी में सच बक देता था। हर महिला स्नान के बाद नीम के पेड़, तुलसी, केले अथवा पीपल की जड़ पर एक लोटा जल अर्पित कर अपना दिन सार्थक कर लेती थी। धर्म उनके रक्त में था, विचारों में था, चेतना में था।

परन्तु आज वही धर्म सीमित हो चला है धार्मिक ठेकेदारों के सर्वसुविधा-सम्पन्न आश्रमों में। ये आश्रम सर्वसुविधा-सम्पन्न हैं। इनमें सामान्य जनता से लेकर श्रीमन्तों, धनकुबेरों तक के ठहरने की व्यवस्था है। इन आश्रमों में महीनों चलने वाली शाक-सब्जी और वर्षों तक खाने योग्य राशन सुरक्षित रहता है। शुद्ध देशी घी का अम्बार है। अच्छे से अच्छा धनी-मानी गृहस्थ जो सुख-सुविधा नहीं जुटा सकता, उससे भी बड़ी सुविधायें इन धर्माचार्यों, कथावाचकों तथा तथाकथित सम्प्रदाय-गुरुओं के पास हैं। यह सब गेरुवे वस्त्र की महिमा है।

अधिकांश धर्माचार्य विवादास्पद हैं। भयावह मुकदमेबाज हैं, कुछेक न्यायालय से दण्डित भी हैं। चरित्रभ्रष्टता का राहु उनके कीर्तिचन्द्र पर लगा ही रहता है। प्राय: सबको संरक्षक, सचिव, सेवक अथवा आश्रम व्यवस्थापक के रूप में कोई कोमलांगी रमणी ही पसन्द है जो स्वयं या तो अज्ञातकुलशील होती है या फिर प्रच्छन्न सम्बन्ध वाली। इन आश्रमों में अप्राकृतिक मैथुन, तान्त्रिक हत्यायें, आतंकवादाश्रय तथा कालेधन का श्वेतीकरण जैसी घटनायें फर्राटे से चल रही हैं। सारा राष्ट्र इन कलंकित घटनाओं को टी०वी० चैनलों के माध्यम से देख रहा है।

वैदिक हिन्दू धर्म का मजाक बना रहे हैं ये कथावाचक। पैसा कमाने का इनका लटका-झटका देखते ही बनता है। कृष्णजन्म की कथा आते ही कथा का यजमान, परिवार के किसी नवजात शिशु को टोकरी में लेकर चल पड़ता है। अब वह वसुदेव है और कथावाचक जी के आसन का समक्षभाग यमुना है। कृष्ण के पालने में आते ही भक्त-भक्तिनें न्यौछावर के लिए मर-मिटते हैं और मात्र पन्द्रह-बीस मिनट में बीस-पच्चीस हजार एकत्र हो जाता है। कथा में ऐसे पैसा-कमाऊ पड़ाव प्राय: आते ही रहते हैं—पूतनावध, अघासुरवध, नागनथैया, गोवर्धनधारण। कथा के अन्त तक प्राय: बीस-पच्चीस लाख की आय हो जाती है। गुरु महाराज का जन्मदिन ही उन्हें कई लाख की आय करा देता है। क्योंकि वह परमेश्वर से भी बड़े हैं। उन्होंने भक्तों को स्वर्ग और मुक्ति की गारण्टी दे रखी है। मानों उन्होंने भक्तों को सान्त्वना दे रखी है—बेटों! अर्थ और काम तुम सँभालो। तुम्हारा धर्म और मोक्ष मैं सुनिश्चित करूँगा। गुरुओं के प्रति इस अन्धनिष्ठा एवं आसक्ति के ही कारण, सामान्य जनता दिन-ब-दिन अधार्मिक होती जा रही है। जैसे इलाहाबाद के वकीलों को भ्रम है कि नित्यगंगास्नान के कारण वे सर्वथा निष्पाप एवं स्फटिकधवल हैं, वैसे ही अब जनता को भ्रम है कि तीन-चार दिन गुरु महाराज के आश्रम में रह कर ही वे मुक्ति के अधिकारी बन गये हैं। उन्हें क्या पता कि धर्म न तो धर्मज्ञानमात्र है, न सिद्धगुरु का आश्रयमात्र है, और न ही पाप की कमाई से धर्मकार्य करना। **धर्म तो है मन, वचन एवं कर्म से धर्माचरण का सम्पादन।**

कथा के नाम पर इन धर्मधुरीणों को श्रीमद्भागवत का हिन्दी उल्था ही शरण है। उसी में नमकमिर्च लपेट कर, बीच-बीच में कवित्त-सवैया-दृष्टान्त-भदेस का पुट देकर ये जनता को परोसते रहते हैं। जब कथा नीरस होने लगती है या कथावाचक जी का स्मृतिकोष जवाब देने लगता है तब वे शुरू कर देते हैं सिने-तर्ज पर कोई भक्तिगीत (?) भक्ति-गीत प्रारम्भ होते ही सारे पण्डाल में जोश आ जाता है। पहले दो-चार बूढ़े और बुड्ढियाँ, फिर युवतियाँ और अन्तत: षोडशियाँ-कुमारियाँ उठ खड़ी होती हैं नाचने के लिये। सिने-तारिका न बन पाने की उनकी सारी कोफ्त अब रंग लाती है। एक अद्भुत प्रतियोगिता सी छिड़ जाती है नर्तकियों में।

दुपट्टे को तो कुमारियों, युवतियों ने विदा ही दे दी है। अब वे जीन्स तथा मिनी बनियान में ही रहना पसन्द करती हैं। ट्रेनों में देखा है इन आधुनिकाओं को। शिक्षागर्विता ये कुमारियाँ धड़ल्ले से 'एकाकी' यात्रा करती हैं। ऊपरी बर्थ पर चढ़ते समय जीन्स नीचे आ जाते हैं, उटंग बनियान बाँहों के साथ ऊपर चढ़ जाती है। फलत: नाभि से नितम्ब तक नंगा दीखने लगता है। शर्म से आँखें स्वत: बन्द हो जाती हैं! ऐसी नग्नता में दुराचार, मानसिक व्यभिचार न होगा तो क्या होगा?

मैं अत्यन्त सन्तप्त एवं व्यथाविदीर्ण भाव से, ध्यानाकर्षण हेतु, यह संस्मरण लिख रहा हूँ। जो माँ-बाप अपनी बेटियों को इन कथाओं में ले जाते हैं वे अन्धे क्यों हैं? वे बेटियों की वेशभूषा पर ध्यान क्यों नहीं देते? वे जब जीन्स-बनियान में हाथ उठाये नाचती हैं तो दर्शक क्या देखते हैं—उनकी कृष्णभक्ति-तन्मयता अथवा सतही आवरण को फाड़ कर प्रकट होता यौवन! धर्मासन पर बैठे उन 'कृष्णात्माओं' से भी पूछना चाहता हूँ कि क्या वे अपनी पत्नी, युवती बेटियों को भी उन्हीं वस्त्रों में नाचते देखना पसन्द करेंगे? भदेसपन की पराकाष्ठा तो तब दीखती है जब लम्बी दाढ़ी वाला कोई खूसट साधु, विन्ध्याचली चुनरी का

शेष पृष्ठ 4 पर

पृष्ठ 3 का शेष

घूँघट निकाल, राधाभाव से नाचने लगता है। यह सब क्या है? कृष्णकथा अथवा कामकथा?

कभी-कभी सोचता हूँ कि ऐसे धार्मिक विदूषक हिन्दूधर्म में ही क्यों हैं? इस्लाम या क्रिश्चियानिटी में क्यों नहीं? देवबन्द के मौलवी-मुल्ला 'वन्दे' शब्द पर लड़ रहे हैं और उसे पूजार्थक मान 'वन्देमातरम्' गाने के खिलाफ फतवा दे रहे हैं। और एक हम हैं कि नित्य प्रति अपने देवताओं, ऋषियों-मुनियों तथा पुराण पुरुषों की खिल्ली उड़ा रहे हैं। रावण से मोबाइल पर बात करवाते हैं, जगतजननी सीता को उससे प्रेम करता दिखाते हैं, भगवान् यम को मोटर बाइक पर यात्रा कराते हैं?

यह सब क्या है? क्या हमारी आत्मा मर गई है? कुत्ते से बदतर हमारी चेतना हो गई है? कल के भिखमंगे, देहड़ी लगाने वाले, चाय पिलाने वाले आज के जगततारन बाबा बन गये हैं। उनके लिये धर्म एक व्यवसायमात्र है। दुर्भाग्य तो यह है कि इन लम्पट धार्मिकों के कारण वे तपस्वी धर्माचार्य भी बदनाम हो रहे हैं जो सचमुच लोकोद्धार-रत हैं, ज्ञान एवं तप के धनी हैं तथा सर्वसमर्थ होते हुए भी निरीह एवं अकिंचन हैं।

महीयसी महादेवी वर्मा ने एक बार पूछा था मुझसे—'मायामोह, धनसम्पत्ति, नाते-रिश्तेदार तथा समाज-संसार तो बन्धनकारक हैं। इन्हीं से तो पिण्ड छुड़ाने के लिये कुछ महासत्त्व विरक्त होकर गेरुवा पहनते हैं, तप करते हैं, संन्यस्त होते हैं। अन्धकार को छोड़ मुक्ति का प्रकाश खोजते हैं। परन्तु राजेन्द्र! आज के विरक्तों को क्या हो गया है कि ये उसी अन्धकार के दीवाने हैं? भीड़ में ही रहना चाहते हैं?' वह प्रश्न तब भी मेरे लिये अनुत्तरित था, आज भी अनुत्तरित ही है।

प्रसंग : वन्देमातरम्

वन्देमातरम् इतिहास का बड़ा चौकानेवाला प्रसंग है। कांग्रेस के 1923 के राष्ट्रीय अधिवेशन में मंच पर गाँधीजी, नेहरूजी तथा अन्य कई राष्ट्रीय नेता विराजमान थे। मौलाना मुहम्मद अली अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे थे।

महान संगीतज्ञ पं० विष्णु दिगम्बर पलुस्करजी को राष्ट्रगीत गाने के लिए आमन्त्रित किया गया। जैसे ही वाद्ययंत्रों को स्वरबद्ध करके पण्डितजी ने 'वन्देमातरम्' गाना प्रारम्भ किया, तो अध्यक्ष मुहम्मद अली खड़े हो गये और सेकुलरिज़्म की दुहाई देकर बोले—''इस गाने को बन्द करो। यह इस्लाम-विरोधी है—कोई भी मुसलमान इसे नहीं गायेगा।''

पण्डितजी गरज उठे—''मौलाना, यह ध्यान रखो कि मैं राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में वन्देमातरम् गा रहा हूँ, किसी अन्य मंच से नहीं। यह किसी मजहब या समुदाय का दल नहीं है। इसलिए मुझे यह राष्ट्रगीत गाने से रोकने का अधिकार आपको किसने दिया?''

हजारों श्रोताओं ने तालियाँ बजाकर पण्डितजी की निर्भीकता व तेजस्विता का स्वागत किया। मौलाना जाकर दूर खड़े हो गये और पण्डितजी ने भावविभोर होकर वह गीता गाया।

यहाँ सबसे महत्त्वपूर्ण व गम्भीर बात यह है कि इस प्रसंग को यों ही कैसे टाल दिया गया? यदि इस 'विषाणु' का उसी समय सही इलाज सोचा या किया जाता तो यह आगे नहीं फैल पाता। यह अदूरदर्शिता व घुटनेटेक नीति का ही दुष्परिणाम है कि 100 वर्षों तक जिस 'वंदेमातरम्' का नारा लगाते हुए लाखों हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख व ईसाई शहीद हो गये, उसी गीत को आज कांग्रेस के मंच पर गाने में संकोच व भय अनुभव होने लगा है। स्वतंत्रता के सातवें दशक में हम स्वाभिमान शून्य होकर किस पतन की पराकाष्ठा की बाट जोह रहे हैं?

हमें स्वार्थी नेताओं के बहकावे में नहीं आना है। हम सब इसी धरती माँ की सन्तान हैं और यहीं हमें भाईचारे के साथ-साथ जीना-मरना है। मुनव्वर राना के शब्दों में—

चलो चलते हैं मिल-जुल कर वतन पर जान देते हैं,
बहुत आसान है कमरे में वन्देमातरम् कहना।

— सत्यनारायण मिश्र, मुम्बई

'राष्ट्रधर्म-सम्मान' के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान-2010'

जनवरी, 2006 से दिसम्बर, 2009 के मध्य प्रकाशित जीवनी तथा खण्ड काव्य की एक-एक चयनित कृति को प्रदान किया जायेगा। इसमें चयनित कृतिकार को 10 हजार रुपये नकद तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर लखनऊ में आयोजित सार्वजनिक समारोह में सम्मानित किया जायेगा। इस निमित्त पूर्ण परिचय के साथ अन्यत्र (शासकीय) अपुरस्कृत कृति की तीन प्रतियाँ भेजनी होंगी।

'राष्ट्रधर्म हिन्दी सेवा सम्मान-2010'

हिन्दीतर प्रदेशों के ऐसे दो हिन्दी सेवियों को प्रतिवर्ष 21,000 रुपये का यह सम्मान प्रदान किया जाता है, जिनकी मातृभाषा हिन्दी न हो। वर्ष 2010 के लिए पंजाब तथा जम्मू कश्मीर का चयन किया गया है, जिसमें पंजाबी/सिन्धी तथा डोंगरी/कश्मीरी मूल के एक-एक लेखक को उसकी समग्र हिन्दी सेवा के लिए लखनऊ में सम्मानित किया जायेगा। सम्बन्धित लेखक अपना पूर्ण परिचय सम्बन्धित साहित्य के साथ भेज सकते हैं।

राष्ट्रधर्म में प्रविष्टियाँ प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 31 मई, 2010 है।

आयोजक : **राष्ट्रगौरव/हिन्दी सेवा सम्मान,** संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004, दूरभाष : 0522-4041494

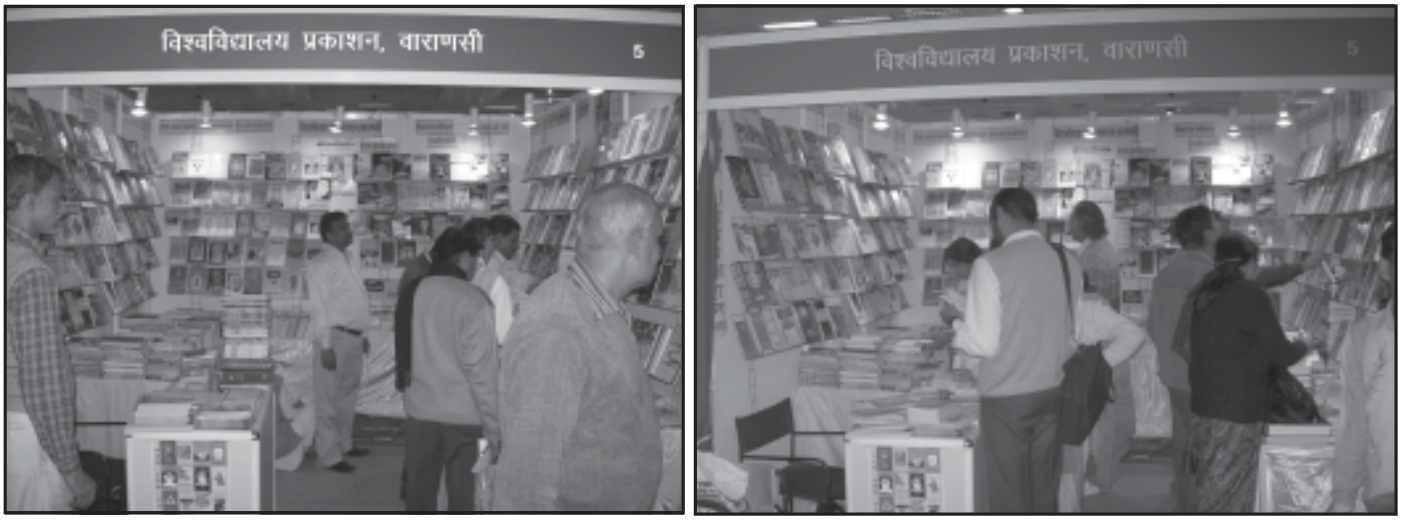

विश्व पुस्तक मेला 2010 में विश्वविद्यालय प्रकाशन के स्टॉल पर अवलोकनरत पुस्तक प्रेमी पाठकवृन्द

स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा के ढाँचे में बदलाव की जरूरत

—निरंजन कुमार

आमतौर पर दुनिया में और खास तौर पर हमारे देश में स्नातक स्तर की शिक्षा पाना एक नैतिक दायित्व और जरूरत-सा बन गया है, बल्कि अपने देश में तो स्नातक स्तर की शिक्षा का महत्त्व अमेरिका और यूरोप के देशों से कुछ ज्यादा ही नजर आता है।

हमारे यहाँ तो स्नातक स्तर की शिक्षा अर्थात बी०ए०, बी०एस-सी० और बी०कॉम० या इन जैसी अन्य डिग्री ही वह न्यूनतम अर्हता है जिसके आधार पर कोई आई०ए०एस०, आई०पी०एस० से लेकर बैंक अफसर अथवा क्लर्क तक के रोजगार के लिए योग्य हो जाता है। कहने का तात्पर्य है कि स्नातक उत्तीर्ण करने का मतलब यह मान लिया जाता है कि विद्यार्थी अब विभिन्न तरह की जिम्मेदारियों का वहन करने में सक्षम और समर्थ है, जबकि वास्तविकता इससे शायद कई बार कोसों दूर होती है। इसको इस उदाहरण से समझा जाए कि अगर किसी विद्यार्थी के बी०ए० में हिन्दी, दर्शनशास्त्र और इतिहास विषय हों तो वह किस तरह से एक सफल बैंक अफसर या रेल क्लर्क या प्रशासनिक अफसर बनने के काबिल हो जाएगा। यह ठीक है कि वह प्रतियोगिता परीक्षा में चयनित होकर आ रहा है, लेकिन यहाँ बहुत ही महत्त्वपूर्ण सवाल उठता है कि संस्कृत और दर्शनशास्त्र या किसी अन्य ऐच्छिक विषयों में बहुत अच्छे अंक लाकर अगर कोई इन प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल हो जाए तो भी क्या उसे उस सेवा के लिए श्रेष्ठ उम्मीदवार समझा जाए? इसी तरह उन्हीं विषयों से स्नातक उम्मीदवार क्या बैंक अफसर या क्लर्क की सेवा के लिए योग्य और उत्तम व्यक्ति होगा? ठीक यही बात इसी तरह से भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित आदि विषयों से उत्तीर्ण स्नातक व्यक्ति के लिए भी कही जा सकती है। ऐसा विद्यार्थी विज्ञान में तो अच्छा ज्ञान रख सकता है, लेकिन ऊपर जिन विभिन्न पदों या रोजगारों की बात हम कर रहे हैं क्या उसके लिए भी वह उचित और पर्याप्त ज्ञान और समझ रखता है? स्वाभाविक जवाब है—नहीं। फिर रोजगार और पदों की बात तो छोड़िए, ऐसे व्यक्ति सामान्य जीवन में भी समाज के लिए एक संतुलित और पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में उभर नहीं पाते हैं जो एक तरह से हमारे मानव संसाधनों का दुरुपयोग या निरुपयोग ही है। स्नातक स्तर पर सिर्फ भौतिकी या अन्य विज्ञान विषयों अथवा कला या सिर्फ समाज विज्ञान आदि किसी एक ही क्षेत्र में अच्छा ज्ञान व्यक्ति और समाज, दोनों ही के लिए मुकम्मल नहीं है।

एक सामान्य व्यक्ति को दैनिक जीवन में इन विषयों के बजाय कुछ और चीजों की ज्यादा आवश्यकता होती है। उसे पर्यावरण, राजनीतिक जीवन, पुलिस, कानून, आर्थिक परिस्थितियों, विभिन्न तरह की संस्कृतियों, अपने इतिहास से परिचय और मेडिकल सम्बन्धी जरूरतों जैसी चीजों और मुद्दों से रूबरू होना पड़ता है, जिनके बारे में एक स्नातक उत्तीर्ण व्यक्ति को सामान्य ज्ञान भी नहीं होता—चाहे वह आर्ट्स से स्नातक हो या साइंस से या फिर इंजीनियरिंग से ही। इसको एक दूसरे उदाहरण से इस तरह समझें कि उपरोक्त विषयों में से किसी भी एक से स्नातक व्यक्ति या एक इंजीनियर या बैंक अफसर व्यक्ति को अगर पुलिस किसी बात के लिए परेशान करे तो उसे पता ही नहीं कि उसके क्या अधिकार हैं। यहाँ तक कि हिन्दी या अर्थशास्त्र या गणित के एक सामान्य प्राध्यापक को भी सम्भवत: पता नहीं होगा कि उसके सामान्य कानूनी अधिकार क्या हैं या एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए क्या करना या क्या नहीं करना जरूरी है। इसी तरह से विज्ञान या इंजीनियरिंग से स्नातक व्यक्ति को समाज और साहित्य का भी ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि अन्तत: यही उनके ज्ञान को समाज से जोड़ेगा। इस तरह की थोड़ी बहुत कोशिश अपने यहाँ आई०आई०टी० में हुई है, लेकिन समग्र रूप से हमारे शिक्षा सम्बन्धी नीति-निर्धारक व्यावहारिक कम हैं और सैद्धान्तिक ज्यादा। या ऐसे कहें कि व्यावहारिक जीवन से कटे हुए हैं और औपनिवेशिक मानसिकता से उबर नहीं पाए हैं।

इस स्नातक सम्बन्धी पूरी प्रणाली पर विचार करने की जरूरत है। सबसे पहले तो यही कि आर्ट्स हो या साइंस, इसे तीन वर्षीय कार्यक्रम की जगह चार वर्षीय कार्यक्रम कर देना चाहिए जैसा कि अमेरिका आदि देशों में है। वैसे जो विद्यार्थी अतिरिक्त मेहनत कर इससे छूट लेना चाहें और इसे चार साल से कम में ही पूरा करना चाहें उन्हें छूट देने का प्रावधान किया जा सकता है। आरम्भ के दो वर्षों में सभी विद्यार्थियों को कुछ अनिवार्य विषय पढ़ने चाहिए। हाँ यह हो सकता है कि आर्ट्स और साइंस ग्रुप के लिए ये अनिवार्य विषय थोड़े अलग हो सकते हैं। अमेरिका में इसे कोर करिकुलम कहते हैं, जो लगभग सभी विश्वविद्यालयों में है। उदाहरण के लिए विश्व के श्रेष्ठतम विश्वविद्यालयों में से एक यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो में पन्द्रह कोर कोर्स हैं। हार्वर्ड या कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के अपने-अपने कोर कोर्स हैं। यहाँ बता देना उचित है कि साइंस वालों को यहाँ सिर्फ साइंस के विषय नहीं पढ़ना पड़ता है, बल्कि उन्हें डिग्री पाने और मुकम्मल व्यक्ति बनने के लिए अन्य विषयों का भी अध्ययन करना होता है। मिसाल के तौर पर अमेरिका की ही सेंट लुइस यूनिवर्सिटी में साइंस वालों को भी इतिहास, साहित्य कला, सामाजिक विज्ञान, संस्कृति के कोर्स पास करना पड़ता है। यही नहीं अमेरिका आदि देशों में इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करने के लिए भी कला, मानविकी या सामाजिक विज्ञान के कुछ कोर्स उत्तीर्ण करने पड़ते हैं। उसी तरह कला या साहित्य से आनर्स करने वालों को गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के कोर्स भी पास करने होते हैं। इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी चाहे जिस विषय से आनर्स करे, समाज और जीवन के बारे में उसे एक अच्छी और संतुलित जानकारी हो जाती है, जिससे वह एक जिम्मेदार नागरिक बनकर उभरता है।

इसी से जुड़ी हुई दूसरी जरूरी चीज यह है कि आनर्स के विषय का चयन या आवंटन शुरू में ही न होकर दो साल के परीक्षा परिणामों के आधार पर हो। इससे एक फायदा यह होगा कि **विद्यार्थी जब स्नातक में प्रवेश लेता है तो उनमें से अधिकांश को खुद पता नहीं होता कि किस विषय में उसे ज्यादा दिलचस्पी है या कि किसमें वह अच्छा कर सकता है, लेकिन दो वर्ष तक कालेज और यूनिवर्सिटी में विभिन्न विषयों को पढ़ने के बाद उसे कुछ-कुछ अहसास होने लगता है कि किस विषय में उसका मन लगता है।** कहने की जरूरत नहीं कि आज अपने देश में भी इस तरह के करिकुलम की जरूरत है, लेकिन सवाल है कि देश हित में गम्भीरतापूर्वक और सम्यक तरीके से सोचने, नीतियाँ बनाने और उसे लागू करने के लिए क्या हम नए सिरे से तैयार हैं? *—दैनिक जागरण से साभार*

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

एक दलित लड़की की कथा

बच्चन सिंह

''बच्चन सिंह की कहानियों में समसामयिक परिस्थितियों से जूझता-टकराता लहूलुहान समय है। लेकिन बेदम नहीं हुआ है यह समय। इसमें प्राण है, जीवन का संकल्प है और दृढ़ता है। इसे ही सहेजने, सवाँरने, आगे बढ़ाने की कोशिश की है कथाकार ने।''

आकार डिमाई

प्रकार सजिल्द

पृष्ठ 172

ISBN : 978-81-7124-643-4 • मूल्य : रु० 180.00

(पुस्तक की एक कहानी का अंश)

माधुरी कॉलेज से निकल कर घर जा रही थी। पगडंडी पार करके जब मुख्य सड़क पर आ जाएगी तो सन्नाटे का डर समाप्त हो जाएगा। सड़क पर आवागमन हमेशा बना रहता है। कुछ दूर के बाद बाजार और बाजार के आखिरी छोर पर अपना घर।

पगडंडी पार भी नहीं किया था कि एक बाइक उससे आठ-दस कदम आगे खड़ी हो गई। माधुरी का जी धक् से करके रह गया। लेकिन उसे आगे तो बढ़ना ही था सो बढ़ी। जैसे ही बाइक के बगल में पहुँची, उसके कानों से एक आवाज टकराई—'माधुरी!'

माधुरी ठिठक गई। वह राज की ओर एकटक देखने लगी।

''माधुरी मैं राज हूँ। इस साल छात्रसंघ का अध्यक्ष चुना गया हूँ। मेरा ख्याल है तुम्हारा वोट भी मुझे मिला होगा।'' राज एक साँस में कह गया।

''मैं जानती हूँ।''

''आओ, मेरे पीछे बैठो, घर तक छोड़ दूँ।''

''मुझे घर से कॉलेज तक का रास्ता तय करने की आदत पड़ गई है। जैसे आपको बाइक की आदत पड़ी है वैसे ही मुझे पैदल चलने की।'' माधुरी ने चेहरे पर बिना कोई भाव लाए कहा, ''आप जा सकते हैं।''

''माधुरी, मैं तुम्हारे घर चलना चाहता हूँ। तुम्हारे परिवार के लोगों से मिलना चाहता हूँ। एक भेली गुड़ खाना चाहता हूँ। एक गिलास पानी पीना चाहता हूँ...''

''बस, बस, बस...।'' माधुरी को हँसी आ गई। उसने हँसते हुए कहा, ''इतना सारा काम एक साथ ही क्यों करना चाहते हैं?''

''क्या है कि... क्या है माधुरी कि मैं जिसे लाइक करता हूँ, उसके बारे में सबकुछ जान जाना चाहता हूँ।''

''आप मुझे लाइक करते हैं, इसके लिए शुक्रिया, लेकिन मैं आपकी बाइक पर नहीं बैठ सकती।'' कहते हुए माधुरी आगे बढ़ गई।

राज ने भी बाइक को किक लगाई और हवा से बातें करने लगा।

राज यानी राजमणि का व्यक्तित्व काफी आकर्षक था। गोरा-चिट्टा, छरहरा। औसत लम्बाई। चेहरे पर हल्की मूँछें और वैसी ही दाढ़ी। सियार जैसी चालाकी और शेर जैसा रोब। हमेशा गतिशील और अस्थिर। कक्षा में शायद ही कभी दिखाई देता है राज। छात्रों की समस्या चुटकियों में हल करने की क्षमता से लैस। इसीलिए लोकप्रियता के शिखर पर। राज राजनीति के शिखर को भी छूना चाहता था। उसमें नेतृत्व की क्षमता थी। वह हमेशा अपने समर्थक छात्रों से घिरा रहता था। इनमें उससे ज्यादा उम्र के छात्र भी होते थे।

अध्यापकों का भी आशीर्वाद हासिल था राज को। कुछ उसकी प्रतिभा का लोहा मानते थे, इसीलिए उसे प्यार करते थे। कुछ भयवश उसका सम्मान करते थे। कुछ उसकी तरफ से बेखबर और तटस्थ रहते थे। कोई उसे छेड़ने का साहस नहीं करता था।

प्रिंसिपल के पास जो दरखास्त लेकर जाता था राज, उस पर आँख मूँद कर चिड़िया बैठा देते थे।

वह नहीं चाहता था कि किसी छात्रा के साथ उसका नाम जुड़े।

माधुरी का घर क्या था सिर्फ दो पक्के कमरे। एक किचेन, एक बाथरूम। उसके आगे ईंट की चारदीवारी उठा कर एक छोटा-सा आँगन निकाला गया था। आँगन में एक चाँपाकल। घर के बगल में दो बिस्से का प्लॉट था, जिसकी मेड़बंदी कर दी गई थी। महाराजगंज बाजार के फैलते जाने से इस जमीन की कीमत काफी बढ़ गई थी। लेकिन इसके इस्तेमाल की कोई योजना माधुरी के पास फिलहाल नहीं थी। माधुरी पहले शिक्षा पूरी करेगी। इसके बाद सरकारी नौकरी करेगी। फिर शादी करेगी। शादी के बाद पति के साथ योजना बनाएगी कि इस जमीन का क्या किया जाय! अभी तो उसका एक ही लक्ष्य था प्रथम श्रेणी में बी०ए० करना।

रविवार का दिन था। माधुरी को कॉलेज जाने की हड़बड़ी नहीं थी। मुँह अँधेरे ही उठ कर नित्यक्रिया निपटाया। फिर पढ़ने बैठ गई। घड़ी ने जब आठ बजाया तब भींगा हुआ चना और गुड़ लेकर बैठ गई। यह माधुरी को बहुत प्रिय था, इसलिए छुट्टी के दिन यही उसका नाश्ता होता था। बाकी दिन सीधे भोजन। अभी उसका नाश्ता खत्म नहीं हुआ था कि किसी ने दरवाजे की कुंडी खटखटाई। माधुरी ने चना और गुड़ घर में रख दिया। किवाड़ खोले तो राज दरवाजे पर खड़ा था।

''ओह राज, तुम!'' माधुरी के ओठों पर मुस्कान थी और आँखों में आश्चर्य।

''हाँ माधुरी, तुम्हें शायद मुझे देखकर आश्चर्य हुआ। है न!''

''नहीं, ऐसा कुछ नहीं, अंदर आओ।'' कहते हुए माधुरी अपने कमरे की तरफ बढ़ी। राज ने भी आँगन में प्रवेश किया। माधुरी कमरे में से दो कुर्सियाँ निकाल लाई। आँगन में रखा। एक स्टूल लाकर कुर्सियों के बीच रखते हुए कहा, ''तुम बैठो राज, मैं चाय बना कर लाती हूँ।'' राज के ना-नुकुर पर ध्यान दिए बिना माधुरी किचेन में गई। माधुरी ने स्टोव जलाकर चाय बनाई। शीशे के दो गिलासों में उड़ेला और बाहर आ गई। एक गिलास राज को पकड़ाया और दूसरी खुद लेकर राज के सामने रखी कुर्सी पर बैठ गई। दोनों चाय सुड़कने लगे।

''राज, मैंने तुम्हें पानी तो दिया ही नहीं।''

''जरूरत भी नहीं है। पानी तो पीकर चला हूँ घर से।''

''तुम घर से सीधे यहीं आ रहे हो?''

''हाँ, तुम्हारे यहाँ से बाजार में जाऊँगा, कुछ चीजें खरीदनी हैं।'' थोड़ी देर बाद राज ने पूछा, ''कौन-कौन हैं तुम्हारे यहाँ?''

''बस, मैं और माँ।''

''कहाँ हैं माँ?''

''कुछ सामान लेने बाजार गई हैं। आती ही होंगी।''

''पिताजी और भाई वगैरह।''

''मैं अपने पिता की तीसरी संतान हूँ। मेरे पहले दो भाई हुए थे, गुजर गए। दो साल पहले पिताजी भी चल बसे। बच गई मैं और माँ।''

''खर्च कैसे चलता है?''

''पिताजी की पेंशन से।''

''क्या करते थे तुम्हारे पिताजी?''

''नगरपालिका में बाबू थे।''

''उनकी जगह तुम्हें नौकरी मिल सकती है।''

''मुझे बाबूगीरी नहीं करनी।'' कहकर हँसने लगी माधुरी।

''फिर क्या करोगी?''

''कम्पटीसन में बैठूँगी आ गई तो...''....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

'अँधेरे में' : एक पुनर्विचार

(मूल्यांकन और पाठ)

सम्पादक : डॉ० वशिष्ठ अनूप

आकार डिमाई

प्रकार अजिल्द

पृष्ठ 192

ISBN : 978-81-7124-730-1 • मूल्य : रु० 70.00

'''अँधेरे में' मुक्तिबोध की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और उतनी ही विवादित कविता है। अपनी शैली, शिल्प, संरचना और प्रयोगों के कारण यह कविता कुछ खास तरह की जटिलताओं और विशिष्टताओं से भरी है। इस संग्रह में शामिल लेख 'अँधेरे में' के अध्येताओं की मुश्किलें आसान करके उनकी समझ को विकसित करने में मदद करेंगे।''

(पुस्तक के दो लेखों के अंश)

'अँधेरे में' : प्रगतिवादी काव्य-स्वर का आदर्श और उसकी सीमा

—रामदरश मिश्र

'अँधेरे में' एक ऐसी लम्बी कविता है जो अपना प्रतिमान स्वयं है। यह न तो किसी कथा पर आधारित है, न मात्र अपने जीवन के ऊहापोह से गुजरती है। यह न एक बने-बनाये आशावाद के सरल मार्ग से चलती है न जुगुप्सा, निराशा और यौन-पिपासा के कीचड़ में पाँव धँसाकर चलती है, यह एक ऐसी नयी कविता है जो स्वयं सामाजिक सन्दर्भों से कथा गढ़ती है वह भी कोई एकसूत्रीय कथा नहीं, खण्ड-कथा। उस कथा को कवि की आत्मकथा से जोड़ती है, कवि की भी आत्मकथा कोई बनी-बनायी कथा नहीं है। वह उसकी यातना, उसकी संवेदना, उसके चिन्तन से बनती हुई कथा है—खंड-कथा। कवि (जिसे इस कविता का नायक कहा जा सकता है) की आत्मकथा एक ऐसे कवि की आत्मकथा है जो अपने में डूबा हुआ न होकर बाहर से जुड़ा है किन्तु ऐसा भी नहीं है कि वह अधिकांश प्रगतिवादियों की तरह मात्र बाहर है। इसलिए उसके भीतर और बाहर की कथा के साहचर्य और टकराहट से एक ऐसी कविता बनती चलती है जो अपनी संवेदना में जटिल है, बहुआयामी है और संरचना में नाटकीय तथा अपने भीतर से निर्मित। टकराहटें, बाहर-भीतर की ही नहीं हैं, बाहर और बाहर तथा भीतर और भीतर की भी हैं। समाज के कई स्तर और रूप हैं, वे आपस में टकराते हैं, कवि के भीतर कई रूप हैं—चेतन और अवचेतन के, निराशा और आशा के, क्रिया और कर्महीनता के, भय और साहस के। भीतर तथा भीतर, बाहर और बाहर तथा बाहर और भीतर की टकराहटों से यह कविता बनती है अर्थात् यह आत्मसंघर्ष और सामाजिक संघर्ष तथा आत्म और अनात्म के संघर्ष से गुजरने वाली कविता है, इसलिए वह एक जटिल, गहरी तथा बहुआयामी कविता है। कवि ने इस जटिल कथ्य की अभिव्यक्ति के लिए स्वप्न और फैंटेसी की शैली अपनायी है, इसलिए मुक्त साहचर्य की पद्धति जहाँ कथा को विस्तार देती है और सामाजिक यथार्थ के अनेक संक्रान्त और जटिल सम्बन्धों को सरलता से उजागर करती है वहीं दुरूहता भी भरती है। यह दुरूहता न केवल कविता की गति को मारती है वरन् कविता की अनेक संगत और असंगत तथा परस्पर-विरोधी व्याख्याएँ करने की छूट देती है। यही वजह है कि इस कविता की तथा स्वयं मुक्तिबोध की तरह-तरह की व्याख्याएँ हुई हैं—मार्क्सवादी व्याख्या भी, अस्तित्ववादी व्याख्या भी और मनोविश्लेषणवादी व्याख्या भी। यह सच है कि मुक्तिबोध के काव्य में इन तीनों ही व्याख्याओं की काफी गुंजाइश है किन्तु इस प्रकार की दुरूह और कई प्रकार की अर्थसम्भावनाएँ फेंकने वाली कविताओं के मूल स्वर की पहचान के लिए हमें कवि की अन्य कविताओं तथा आलोचनाओं (यदि हैं तो) तथा जीवनी-सन्दर्भों की सहायता लेनी चाहिए। समग्र भाव से देखने पर मुक्तिबोध का मूल स्वर प्रगतिवादी ही लगता है इसलिए 'अँधेरे में' कविता की जटिलता और दुरूहता के बीच अंतर्निहित प्रगतिवादी स्वर को ही मूल स्वर मानना संगत होगा।...

'अँधेरे में' : नए मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र की तलाश

—बच्चन सिंह

थ्योडोर एडोर्नो ने ब्रेख्त के मूल्यांकन के सम्बन्ध में लिखा है कि केवल कलात्मक उपलब्धियों को लेकर उसकी आलोचना करना उतना ही मूर्खतापूर्ण और एकपक्षीय है जितना उसके राजनीतिक सिद्धान्तों को लेकर। मुक्तिबोध की रचनाओं के सम्बन्ध में भी यही सच है। उसके सम्बन्ध में लिखी गई अधिकांश समीक्षाओं में मुक्तिबोध के राजनीतिक विचारों को उधेड़ने का प्रयास किया गया है। उसका कलात्मक पक्ष प्रायः अछूता रहा है। उसके कलात्मक सिद्धान्तों की विवेचनाएँ अवश्य हुई हैं, पर उनका आधार स्वयं मुक्तिबोध की डायरी, पुस्तकें और लेख हैं। जहाँ-कहीं उसके कलात्मक सिद्धान्तों को रचनाओं में देखने की कोशिश की गई है वहाँ सिद्धान्तों को चस्पा कर दिया गया है। यह ध्यान नहीं दिया गया कि कवि के सैद्धान्तिक विचारों और रचना में अन्तराल भी होता है। अतः आवश्यक है कि विवेचना के केन्द्र में पाठ को रखकर ही उसके सिद्धान्तों, जीवन-घटनाओं और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों की परख की जाय।

मुक्तिबोध की त्रासदी यह है कि वे अलग-अलग न आधुनिक हैं, न प्रयोगवादी, न नए कवि, न मार्क्सवादी, बल्कि एकसाथ सबकुछ हैं। किन्तु मार्क्सवादी समीक्षकों ने, एक आध को छोड़कर, उसमें मार्क्सवाद ढूँढ़ने का प्रयास किया है। सबकुछ ढूँढ़-ढाँढ़ कर यह भी सिद्ध कर दिया है कि वे वैज्ञानिक समाजवादी हैं। जिन्हें उनमें प्लेखोनोव, मेहरिंग और स्टालिन के प्रतिबिम्ब नहीं मिले हैं वे उन्हें अस्तित्ववादी, रहस्यवादी और सिंजोफ्रेनिक सिद्ध कर देते हैं। अपनी आदत के अनुसार सन्दर्भों से काट कर वे ऐसे उद्धरण भी जुटा लेते हैं जो उनकी अपनी निजी मान्यताओं और पूर्वाग्रहों को पुष्ट करते हैं न कि मुक्तिबोध की मान्यताओं को। 'अँधेरे में' कविता का शीर्षक ऐसे लोगों की मानसिकता को पूर्णतः चरितार्थ करता है।

वास्तविकता यह है कि मुक्तिबोध अपने सिद्धान्तों और काव्य द्वारा नया मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र गढ़ रहे थे। इस तरह वे किसी हद तक 'फ्रैंकफर्ट स्कूल' के आसपास दिखाई देते हैं। मुक्तिबोध के विभिन्न निबन्धों में अन्य वस्तुओं के विश्लेषण के साथ सौन्दर्यशास्त्र का विवेचन भी अन्तर्निहित रहता है। इससे स्पष्ट है कि सौन्दर्यशास्त्र में उनकी गहरी अभिरुचि थी। किसी भी अन्य सौन्दर्यशास्त्री की अपेक्षा मुक्तिबोध का सौन्दर्यशास्त्र नया, युग-सापेक्ष और विचारोत्तेजक है। उसके सौन्दर्यशास्त्र के दो बीज शब्द हैं—आत्मचेतस् और विश्वचेतस्। इन्हीं के अन्तर्गत संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदना का समावेश हो जाता है। रसात्मकता से मुक्तिबोध को कोई दुराव नहीं है, बल्कि वे इसे काव्य की मूलभूत विशेषता मानते हैं। रस को स्वीकार करते हुए उसने इसका विस्तार किया है। वे प्रगतिवादी विचारणा के भारतीय व्याख्याताओं को अपरिपक्व मानते थे। ...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

हिन्दी किताबों की गूगल पर हरियाली

इंटरनेट के 2010 के नोबेल शान्ति पुरस्कार के लिए नामांकित होने के बीच गूगल ने एक और बड़ी पहल की है। अब गूगल पर हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित होने वाली किताबों के बारे में जानकारी के साथ यूजर्स किताबों के कुछ अंश पढ़ भी सकेंगे।

गूगल के सामरिक भागीदारी विकास प्रबन्धक अभिषेक जैन ने बताया कि हिन्दी में बहुत कम चीजें इंटरनेट पर हैं और किताबों एवं पत्र पत्रिकाओं में ढेरों ज्ञान छिपा है। हमारी कोशिश इस ज्ञान और सूचना को गूगल पर लाने की है। यह एक तरह से चौबीसों घंटे मार्केटिंग का ही तरीका है और इसमें सबसे खास बात यह है कि इसके लिए प्रकाशकों से किसी तरह का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। जैन ने कहा कि हिन्दी की किताबों के बारे में लोग इसलिए कम जानते हैं क्योंकि इसके बारे में लोगों को जानकारी नहीं है। इस परियोजना से पाठकों के अन्दर इच्छा जगेगी और लोगों को हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की किताबों के बारे में पता चल सकेगा। इसमें किताब का उतना ही हिस्सा लोग पढ़ सकेंगे, जितना प्रकाशक उन्हें देने के लिए कहेंगे। जैन ने बताया कि हिन्दी के सभी शीर्ष प्रकाशक हमारे साथ हैं और तमाम विषयों से सम्बन्धित किताबों की संक्षिप्त जानकारी आने के बाद खासकर युवा पाठकों को हिन्दी की किताबों के बारे में जानकारी मिल सकेगी। अंग्रेजी के अलावा अभी हमने प्रायोगिक तौर पर हिन्दी और बांग्ला की किताबों के बारे में जानकारी गूगल में डालनी शुरू की है। हमारी कोशिश सभी भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं की किताबों की जानकारी गूगल यूजर्स को देने की है।

गाँवों में पुस्तकालयों की योजना

केन्द्र सरकार के संस्कृति मन्त्रालय द्वारा 'नेशनल मिशन ऑन लाइब्रेरीज' कार्यक्रम के तहत देश-भर में 7,000 नए पुस्तकालय खोले जाने, ग्रामीण अंचलों के अलावा सार्वजनिक पुस्तकालयों को भी नया रूप देने की योजना है।

रेणु के साहित्य पर शोध में जुटा अमेरिकी

कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य पर शोध करने पिछले दिनों दस दिवसीय दौरे पर बिहार आए टेक्सास यूनिवर्सिटी के छात्र इयान बुलफर्ड 'तीसरी कसम' की धरती गढ़बनैली के सर्रा गाँव पहुँचे।

रेणु साहित्य के शोध में अभी पाँच वर्ष और लगेंगे। शोध के बाद इसे यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में रखा जाएगा, जिससे अमेरिका में हिन्दी-साहित्य पर शोध करने वाले रेणु साहित्य से मदद ले सकें। मिस्टर बुलफर्ड रेणु पार्क भी गये।

किताबों का डिजिटल संसार

''इस बुक स्टोर का प्रमुख फीचर है रिलीज अलर्ट सर्विस। यदि आप चाहते हैं कि जब भी आपके पसन्द की कोई नई पुस्तक रिलीज हो और उसकी सूचना आप तक पहुँचे तो ऐसा इस वेबसाइट पर सम्भव है।''

www.ebooks.com इंटरनेट पर एक ऐसा डिजिटल बुक स्टोर है जहाँ शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र है जिससे सम्बन्धित पुस्तकों की जानकारी नहीं है। मेडिकल, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट, कम्प्यूटर, साइंस, आर्ट, लॉ, एजुकेशन के अलावा अन्य क्षेत्रों से सम्बन्धित सैकड़ों पुस्तकों की जानकारी इस वेबसाइट पर उपलब्ध है। साइट पर आपको होम, माई अकाउंट, माई विशलिस्ट, बेस्टसेलर्स, मोस्ट पॉपुलर सब्जेक्ट जैसे कई विकल्प मिलेंगे।

इस डिजीटल बुक स्टोर में पुस्तकों को सर्च करना भी काफी आसान है। जिस तरह किसी सामान्य बुक स्टोर में विभिन्न पुस्तकें करीने से सजा कर रखी जाती है ताकि उसे जरूरत पड़ने पर आसानी से ढूँढ़ा जा सके। उसी तरह इस वेबसाइट पर अपनी जरूरत की पुस्तकों को सर्च करने के लिए आप टाइटल, ऑथर या फिर की-वर्ड का सहारा ले सकते हैं। चूज कैटगरी के अन्तर्गत यहाँ तकरीबन 100 से अधिक क्षेत्रों से जुड़ी पुस्तकों का विशाल कलेक्शन है। जैसे यदि आपको कम्प्यूटर से जुड़ी पुस्तकों की सूची देखनी हो तो कैटगरी से कम्प्यूटर सेलेक्ट करते ही कम्प्यूटर के विभिन्न सबजेक्ट जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डाटाबेस, एमआईएम, प्रोग्रामिंग लैंग्वेज आदि से सम्बन्धित तमाम पुस्तकों की जानकारी उपलब्ध हो जाएगी। इसी सेक्शन में आप बेस्ट सेलर्स पुस्तकों की जानकारी भी पा सकते हैं। लेटेस्ट रिलीज की भी जानकारी यहाँ उपलब्ध रहती है।

फिक्शन से सम्बन्धित पुस्तकों में रुचि रखने वालों के लिए यहाँ अलग से फिक्शन सेक्शन भी है। यहाँ आपको क्राइम, रोमांस, साइंस फिक्शन आदि से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों की सूची देखने को मिल जाएगी। इसी तरह नॉन-फिक्शन सेक्शन की सूची देखने को मिल जाएगी। इस तरह नॉन-फिक्शन सेक्शन को क्लिक कर आप आर्ट, बायोग्राफी, ह्यूमर, लैंग्वेज, मीडिया आदि विषयों पर लिखी विभिन्न पुस्तकों को पढ़ने का आनन्द उठा सकते हैं। इस वेबसाइट पर विश्व के तमाम बड़े पब्लिशर्स की पुस्तकें आपको मिल जाएँगी। करंट इवेंट से सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़ने के लिए करंट इवेंट ई-बुक्स के लिंक को क्लिक किया जा सकता है। इस बुक स्टोर के प्रमुख फीचर इसका रिलीज अलर्ट सर्विस है। यदि आप चाहते हैं कि जब भी आपके पसन्द के क्षेत्र की कोई नई पुस्तक रिलीज हो तो इसकी सूचना आपको दी जाए तो ऐसा यहाँ सम्भव है। इस सर्विस का उपयोग करने के लिए आपको यहाँ रजिस्ट्रेशन करवाना होगा, फिर आपके अकाउंट पर अलर्ट भेजा जाएगा।

ओबामा की टीम में झुम्पा

'द नेम सेक' आदि पुस्तकों की भारतीय मूल की अमेरिकी लेखिका और पुलित्जर पुरस्कार विजेता झुम्पा लाहिड़ी को अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कला और मानवता समिति की सदस्य नियुक्त किया है।

झुम्पा के साथ पाँच अन्य लोगों की भी नियुक्ति की गयी है। ओबामा ने एक बयान जारी कर कहा, ''मुझे गर्व है कि मेरे प्रशासन में इन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की भागीदारी होगी। कला एवं मानवता से जुड़ी समिति हमारे समाज की गतिशीलता को बढ़ाएगी, हमें प्रेरित करेगी और हमारे लोकतंत्र को मजबूत करेगी।''

ओबामा ने कहा, आने वाले हफ्तों और महीनों में उनके साथ काम करने को लेकर मैं बेहद आशान्वित हूँ। व्हाइट हाउस ने बताया कि लाहिड़ी के अलावा इस समिति में चक क्लोज, फ्रेड गोल्डरिंग, शीला जॉनसन, पामेला जॉयनर और केल सोलोमन नियुक्त किये गये हैं।

प्रो० बृजकिशोर कुठियाला कुलपति नियुक्त

20 जनवरी को मीडिया शिक्षण के क्षेत्र में प्रतिष्ठित शिक्षाविद् प्रो० बृजकिशोर कुठियाला को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल का कुलपति नियुक्त किया गया। इस पद पर आसीन होने वाले वह पहले शिक्षाविद् हैं। प्रो० कुठियाला को मीडिया और जनसंचार क्षेत्र में शिक्षण और शोध का सुदीर्घ अनुभव प्राप्त है। वे भारतीय जनसंचार संस्थान और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से सम्बद्ध रहे हैं। गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय हिसार और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के अध्यक्ष भी रहे हैं।

पढ़ने की कला विकसित करने के लिए एक ऐसा मस्तिष्क विकसित करो जो जिज्ञासु हो, जिसमें जानने की अदम्य प्यास हो और तब तुम्हें अपने प्रश्नों का उत्तर पठनीय ग्रन्थों में स्वत: ही मिल जायेगा।

—स्वामी विवेकानन्द

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' (जनवरी 2010) में आपके सम्पादकीय विचार पढ़कर लगा कि आप मानवीय समस्याओं के प्रति सजग और दायित्वशील हैं। 'जागो फिर एक बार' में आपने नैसर्गिक और मानवीय प्रकृति के बीच उभरते हुए अन्तर को स्पष्ट करते हुए सच कहा है कि देश के नेतागण हमें भूलभुलैया में भटका रहे हैं 'और हम डूबे हुए हैं नींद की खुमारी में', जो न टूटने का नाम लेती है, न पिघलने का। भूमा के लालित्य में होने वाली क्षीणता से संवेदनशील व्यक्ति कैसे खिन्न नहीं होगा? समस्त मानव-जगत् की चिंता को अभिव्यक्त करते हुए आपने सही लिखा है कि, 'जब तक साँस में साँस है, हम धरती, प्रकृति और फूलों को बचाने की मुहिम चलाते रहेंगें' क्योंकि भावी पीढ़ियों को ही नहीं, सम्पूर्ण प्राणियों की जानना होगा कि— ''कैसी होती है फूलों की सुरभि/चाँद की चाँदनी/गुनगुनी धूप/और कैसी होती है/माँ की गोद!'' सुन्दर, संदेशप्रद सामयिक सम्पादकीय के लिए हार्दिक बधाइयाँ। **—इन्दर राज बैद,** चैन्नई

'भारतीय वाङ्मय' तमाम पत्रिकाओं से अलग ही दिखती है। ज्ञान, साहित्य से भरपूर पत्रिका देश प्रेम के मामले में भी जीवंत मिसाल है। साहित्य जगत की हर खबर पर नजर रखना कुशल और सजग सम्पादन का श्रेष्ठ प्रमाण है। पत्रिका की सम्पादकीय हर बार ज्ञान, दर्शन का विराट स्वरूप लिये होती है। पत्रिका किसी खेमे, गुट या मठ से परे दिखती है, ऐसा होना बहुत ही सुखद लगता है। बाकी साहित्य संसार से जुड़े लोग अपने-अपने गिरोह चला रहे हैं। आप के सद् प्रयास को नमन्।**—शब्बन खान 'गुल',** बहराइच

पत्रिका के दिसम्बर 09 के अंक में आपने स्व० आचार्य कल्याणमल लोढ़ा के 'व्यक्तित्व-कृतित्व व देन' पर ठोस सामग्री देकर अत्यन्त करणीय कार्य किया है। कोलकाता के पत्र व साहित्य जगत ने तो out of sight out of mind का ही परिचय दिया है। आपको साधुवाद।

—नथमल केडिया, कोलकाता

'भारतीय वाङ्मय' के 11वें वर्ष में प्रवेश पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करें। नववर्ष प्रथमाङ्क में 'जागो फिर एक बार' शीर्षक सम्पादकीय लेख से आपने देशवासियों का जो आह्वान किया है वह समयोचित है। एतदर्थ कोटिश: बधाई।

'साहित्य की ओर लौटता सिनेमा' आलेख में श्रीहरिमृदुलजी ने जो आकलन किया है और सम्भावनाएँ जतायी हैं उनसे हिन्दी साहित्य जगत को बड़ी आशायें बँधी हैं। शेष पृष्ठों पर भी रोचक और ज्ञानवर्द्धक जानकारियाँ हैं।

पत्रिका चिरकाल तक एवमेव प्रगति पथ पर अग्रसर रहे इस शुभकामना के साथ।

—डॉ० पवनकुमार शास्त्री, वाराणसी

आपकी मासिक पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' का जनवरी, 2010 अंक मिला, धन्यवाद।

मैंने यह अंक आद्योपांत देखा। अच्छा बना है। सभी लेख आदि ज्ञानवर्धक और विचारोत्तेजक हैं। आपके प्रकाशनों के बारे में भी पूरी जानकारी मिली। आशा है कि आप यह पत्रिका मुझे भविष्य में नियमित रूप से भेजते रहेंगे।

—कृष्ण कुमार ग्रोवर
पूर्व सचिव, संसदीय राजभाषा समिति

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका भारत की विविध प्रान्तों की भाषाओं के विकास कार्यक्रमों का भी हिन्दी भाषा द्वारा विवरण देती आ रही है। खासकर अहिन्दी प्रान्तों के हिन्दी प्रचार को समय-समय पर स्थान दे रही है। पत्रिका के सभी 'स्तम्भ' स्तरीय हैं। प्रसिद्ध साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय पत्रिका दे रही है। दिसम्बर अंक में 'आचार्य कल्याणमल लोढ़ा का परिचय' इसका उदाहरण है।

—जी०आर०के० रेड्डी अमरजी
आन्ध्र प्रदेश

स्मृति-शेष

राजेन्द्र अवस्थी का निधन

नई दिल्ली, प्रतिष्ठित साहित्यकार राजेन्द्र अवस्थी का 30 दिसम्बर को निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे और लम्बे समय से बीमार थे। श्री अवस्थी का जन्म मध्य प्रदेश के गढ़ा, जबलपुर में 25 जनवरी, 1930 को हुआ था। उन्होंने पत्रकारीय कैरियर की शुरुआत नवभारत, नागपुर से की थी। उसके बाद सारिका, नंदन, साप्ताहिक हिन्दुस्तान और कादम्बिनी के सम्पादक रहे। वे लगभग तीस साल के लम्बे समय तक 'कादम्बिनी' मासिक पत्रिका के सम्पादक रहे। उन्होंने बड़ी संख्या में साहित्य-सृजन किया जिसमें 11 उपन्यास, 8 कहानी-संग्रह तथा अन्य रचनाएँ हैं। 'काल-चिंतन' के नाम से लिखे उनके सम्पादकीय विशेष रूप से लोकप्रिय रहे हैं। आदिवासियों के जीवन पर आधारित उनका उपन्यास 'जंगल के फूल' खूब चर्चित रहा।

आशारानी व्होरा का निधन

दिल्ली में प्रसिद्ध लेखिका आशारानी व्होरा का गत 21 दिसम्बर को निधन हो गया। वे 89 वर्ष की थीं।

बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी और समाजसेवी लेखिका ने समाज-परिवार, महिलाओं और किशोर आदि पर 90 के लगभग पुस्तकें लिखीं और महिलाओं के कल्याण के लिए 'सूर्या' नामक सामाजिक संस्था की स्थापना एवं संचालन किया और अन्त तक सक्रिय रहीं। राष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया।

श्रीकृष्णमुरारी पहारिया का निधन

बाँदा वासी श्रीकृष्णमुरारी पहारिया का विगत दिनों निधन हो गया। वह लब्धप्रतिष्ठ कवि थे। वे अपने प्रखर मौलिक चिंतन के लिए मार्क्सवादियों के बीच हमेशा चर्चित और जीवन-भर परम्परावाद के विरुद्ध अपने जीवन और लेखन दोनों में संघर्ष करते रहे।

फार्म 4
(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	वाराणसी
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है ?)	जी हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	
पता	चौक, वाराणसी
4. प्रकाशक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है ?)	जी हाँ
5. सम्पादक का नाम	परागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है ?)	जी हाँ
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(दिनांक 1 मार्च, 2010) **(अनुरागकुमार मोदी)**

सम्मान-पुरस्कार

केदारनाथ सिंह को शलाका सम्मान

नई दिल्ली। तीसरे सप्तक के कवि, आलोचक और चिंतक **प्रो० केदारनाथ सिंह** को प्रतिष्ठित शलाका सम्मान देने की घोषणा की गई है। कविता में नए बिम्ब और बोध के नए धरातल तैयार करने वाले हिन्दी के विशिष्ट कवि केदारनाथ सिंह को हिन्दी अकादमी, दिल्ली का सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया जाएगा। उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के ग्राम चकिया में सात जुलाई 1934 को जन्मे केदारनाथ सिंह ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से अध्ययन किया और 1964 में वहीं से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। आपका पहला कविता संग्रह 'अभी बिल्कुल नहीं' 1960 में प्रकाशित हुआ और इसी साल प्रकाशित 'तीसरा सप्तक' में भी उनकी कविताएँ शामिल की गईं। आपके प्रमुख कविता संग्रहों में 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखो', 'अकाल में सारस', 'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' और 'बाघ' प्रमुख हैं।

आलोचनात्मक कृतियाँ 'कल्पना और छायावाद', 'आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान' और 'मेरे समय के शब्द' हैं। दिल्ली की मुख्यमंत्री और अकादमी की अध्यक्ष शीला दीक्षित के मुख्य आतिथ्य में प्रख्यात बांग्ला लेखिका महाश्वेता देवी 23 मार्च को केदारनाथ सिंह को यह सम्मान प्रदान करेंगी। सम्मान के रूप में दो लाख रुपये की नकद राशि, प्रतीक चिह्न और शॉल प्रदान किया जाएगा।

वाराणसी के 12 विद्वानों को संस्कृत संस्थानम पुरस्कार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम की ओर से वर्ष 2008-09 के पुरस्कारों की घोषणा की गई। **2.51 लाख रुपये का विश्वभारती पुरस्कार** प्रो० सत्यव्रत शास्त्री, दिल्ली को दिया गया है।

पुरस्कार प्राप्त करने वाले अन्य विद्वानों में शामिल हैं—सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति रह चुके शिमला के **प्रो० राजेन्द्र मिश्र** (*महर्षि वाल्मीकि, एक लाख रुपये*); डॉ० राजदेव मिश्र, फैजाबाद (*महर्षि व्यास, एक लाख रुपये*); देवी प्रसाद खण्डेराव, अहमदनगर (*महर्षि नारद, 51 हजार रुपये*); प्रो० वाचस्पति उपाध्याय, दिल्ली; प्रो० शशि तिवारी, दिल्ली; प्रो० ओमप्रकाश पाण्डेय; प्रो० गंगाधर पण्डा, वाराणसी (*विशिष्ट, 51 हजार रुपये प्रत्येक*); निधि माधव, वाराणसी; वासुदेव चि० महाडकर, वाराणसी; गणेश भट्ट, वाराणसी; आत्माराम पौडल, वाराणसी; जयन्तपति त्रिपाठी, फैजाबाद; चूड़ामणि त्रिवेदी, झांसी; पण्डित दुर्गेश कुमार पाण्डेय, गुना; अशोक कुमार त्रिपाठी, बांदा; आलोक मिश्र, वाराणसी; देवेन्द्र कुमार मिश्र, वाराणसी (*वेद पण्डित, 25 हजार रुपये प्रत्येक*)।

नामित पुरस्कार (पुरस्कार राशि 25 हजार रुपये)

विद्वान का नाम, स्थान (ग्रन्थ का नाम, पुरस्कार)

डॉ० प्रशस्यमित्र शास्त्री, रायबरेली (अनुभीप्सितम, **बाणभट्ट**); राधेश्याम चतुर्वेदी, देहरादून (गायत्रीमहातंत्रम, **कालिदास**); प्रो० दिगम्बर महापात्र, उड़ीसा (योग वेदान्त कौस्तुभ, **शांकर**); डॉ० राजेश्वर प्रसाद मिश्र, कुरुक्षेत्र (अथर्ववेदीय सायण भाष्य गत निर्वचन विमर्श, **सायण**)।

विशेष पुरस्कार (पुरस्कार राशि 11 हजार रुपये)

विद्वान का नाम, स्थान (ग्रन्थ का नाम)

डॉ० लोकमान्य मिश्र, लखनऊ (भारतीय शिक्षा शास्त्रिण:); डॉ० बृजेशकुमार शुक्ल, लखनऊ (सिद्धान्त शिरोमणि); डॉ० शुद्धानन्द पाठक, नई दिल्ली (शिव सूत्रम); डॉ० देवीप्रसाद द्विवेदी, वाराणसी (काव्य शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दों की निरूक्ति); डॉ० शिव सागर त्रिपाठी, जयपुर (निर्वचन विज्ञान एवं पौराणिक निर्वचन); डॉ० मोहनलाल शर्मा पाण्डेय, जयपुर (नतिति)।

शास्त्र पुरस्कार (राशि 5 हजार रुपये)

विद्वान का नाम, स्थान (ग्रन्थ का नाम)

डॉ० इला घोष, जबलपुर (ऋग्वैदिक ऋषिका जीवन एवं दर्शन); प्रो० दिनकर गोविन्द थत्ते, लखनऊ (अभिनव शारीर संहिता); डॉ० कामेश्वर उपाध्याय, वाराणसी (ज्योतिष शास्त्र); डॉ० शरदचन्द्र द्विवेदी, वाराणसी (गांधर्व कलाप व्याकरणम); डॉ० ब्रह्मानन्द उनियाल, टेहरी गढ़वाल (ब्रह्माण्ड दर्शनम); प्रो० हरिहर त्रिवेदी, नई दिल्ली (वास्तु कल्पलता)।

साहित्य पुरस्कार (राशि रुपये पाँच हजार)

विद्वान का नाम, स्थान (ग्रन्थ का नाम)

डॉ० कमला पाण्डेय, वाराणसी (भगवान शंकराचार्य अविर्भूयात पुनर्भुवि); डॉ० भारत भूषण, जम्मू (संतान दीपिका); डॉ० गिरजा शंकर शास्त्री, इलाहाबाद (काव्यशास्त्र एवं काव्य परिशीलन); आचार्य श्री बाबूराम अवस्थी, लखीमपुर खीरी (ललित लेख माला); डॉ० ददन उपाध्याय, वाराणसी (केदारखण्ड)।

श्रमण पुरस्कार (पाँच हजार रुपये राशि)

पं० शिवशंकर त्रिपाठी, इलाहाबाद (शृंगार दर्पण)।

बाल साहित्य पुरस्कार (पाँच हजार रुपये राशि)

डॉ० रामेश्वर प्रसाद गुप्त, दतिया (संस्कृत मधु गीत गुंजनम); राधेश्याम गंगवार, पिथौरागढ़ (आह्वानम)।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो० रेवा प्रसाद को यूजीसी राष्ट्रीय पुरस्कार

नई दिल्ली, शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए देश के 35 शिक्षाविदों को यूजीसी राष्ट्रीय पुरस्कार दिए गए। 22 फरवरी को आयोजित एक समारोह में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मन्त्री डी० पुरंदेश्वरी ने इन शिक्षाविदों को यह पुरस्कार दिए।

संस्कृत भाषा में उत्कृष्ट शिक्षण एवं अनुसंधान के लिए 'यूजीसी वेदव्यास नेशनल संस्कृत अवार्ड' श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ की वरिष्ठ **प्रोफेसर कमला भारद्वाज**, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलपति **प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी** और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के **प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी** को दिया गया। इन सभी को बतौर पुरस्कार *एक लाख रुपये* की राशि दी गई। 'यूजीसी हरिओम आश्रम ट्रस्ट राष्ट्रीय पुरस्कार' पाने वालों में **प्रो० श्यामनारायण टंडन, प्रो० चंदनदास गुप्त** और **प्रो० आर०एस० सिरोही** समेत 15 शिक्षाविद शामिल हैं। पुरस्कार के रूप में इन्हें *50 हजार रुपये* की राशि दी गई। *यूजीसी स्वामी प्रणवनंदा सरस्वती राष्ट्रीय पुरस्कार* **प्रो० डी०पी० कोठारी, प्रो० प्रभात पटनायक** और **प्रो० आर० रमेश** समेत 17 लोगों को दिया गया। इन सभी को पुरस्कार स्वरूप *50 हजार रुपये* दिए गए। यह पुरस्कार वर्ष 2005, 2006 और 2007 के लिए दिए गए हैं।

डॉ० नीरजा माधव को चित्रा कुमार कथा पुरस्कार

विगत 31 जनवरी को भोपाल में आयोजित समारोह में मध्य प्रदेश राज्यभाषा प्रचार समिति द्वारा शैलेष मटियानी की स्मृति में दिया जाने वाला चित्रा कुमार कथा पुरस्कार प्रसिद्ध कथा लेखिका **डॉ० नीरजा माधव** के कथा-संग्रह 'चुप चंतरा रोना नहीं' को प्रदान किया गया। इसके अन्तर्गत उन्हें प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न के साथ 11 हजार रुपये की राशि अर्पित की गयी।

'चुप चंतरा रोना नहीं' हंस पत्रिका द्वारा प्रकाशित सोलह सालों में लिखी गई श्रेष्ठ ग्यारह कहानियों के विशेषांक में भी शामिल रही।

साहित्य अकादमी पुरस्कार 2009

नई दिल्ली, विभिन्न भाषाओं में साहित्यिक योगदान के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। प्रख्यात कवि, आलोचक और चिंतक कैलाश वाजपेयी को उनके कविता संग्रह 'हवा में हस्ताक्षर' के लिए हिन्दी भाषा के साहित्य अकादमी पुरस्कार 2009 के लिए चुना गया है। इस वर्ष विभिन्न भारतीय भाषाओं के 24 लेखकों को पुरस्कारों के लिए चुना गया है जिसके अन्तर्गत काव्य संग्रहों के लिए 8 कवियों, 6

कथाकारों, 4 उपन्यासकारों, 4 साहित्यिक समालोचना के लिए और 2 नाटककारों को पुरस्कारों के लिए चुना गया है। इस वर्ष पुरस्कार की राशि 50 हजार से बढ़ाकर 1 लाख रुपया कर दी गई है।

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय की अध्यक्षता में अकादमी के कार्यकारी मण्डल की बैठक में विभिन्न भाषाओं के निर्णायक मण्डलों द्वारा चुनी गई 24 पुस्तकों को साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए अनुमोदित किया गया।

वर्ष 2008 के भाषा सम्मान हेतु मध्यकालीन साहित्य और क्लासिक में योगदान के लिए मराठी के नाटककार विश्वनाथ खैरे और उड़िया साहित्यकार सुरेन्द्रनाथ सतपथी को चुना गया।

कवि—कैलाश वाजपेयी (हिन्दी), प्रद्युम्न सिंह 'जिन्द्राहिया' (डोंगरी), जॅस फर्नांडिस (कोंकणी), रघु लीशड़थम (मणिपुरी), वसंत आबाजी डहाके (मराठी), फणि मोहांती (ओड़िया), दमयंती बेसरा (संथाली), पुविआरसू (तमिल), **कथाकार**—वैदेही (कन्नड़), दिवंगत मनमोहन झा (मैथली), समीरण क्षेत्री 'प्रियदर्शी' (नेपाली), मेजर रतन जांगिड़ (राजस्थानी), प्रशस्य मित्र शास्त्री (संस्कृत), आनन्द खेमानी (सिंधी), **उपन्यासकार**—ध्रुवज्योति बोरा (असमिया), दिवंगत मनोरंजन लहरी (बोडो), यू०ए० खादर (मलयालम), वाई लक्ष्मी प्रसाद (तेलुगु), **समालोचना**—चतुर्वेदी बद्रीप्रसाद (अंग्रेजी), शिरीष पंचाल (गुजराती), मिशेल सुल्तानपुरी (कश्मीरी), अबुल कलाम कासिमी (उर्दू), **निबन्ध-संग्रह**—सौरीनी भट्टाचार्य, **नाटक**—आत्मजीत सिंह (पंजाबी)।

बाल साहित्य के लिए भी अकादमी पुरस्कार

साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार अब बाल साहित्य के क्षेत्र में भी प्रदान किया जाएगा। देश की विभिन्न भाषाओं में साहित्यकारों के योगदान को सम्मानित करने के बाद साहित्य अकादमी ने 24 बाल साहित्यकारों को पुरस्कृत करने का निर्णय लिया है। अगले वर्ष से यह पुरस्कार साहित्य अकादमी पुरस्कार के साथ ही प्रदान किया जाएगा। इन पुरस्कारों की राशि तय करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

बर्कले कालेज में तीन भारतीय छात्रों को सम्मान

वाशिंगटन। न्यूयार्क के बर्कले कालेज ने तीन भारतीय छात्रों को सम्मानित किया है। इसमें बेंगलूर के **अनिल गोपालरेड्डी** और बड़ोदरा के **मितल पटेल** को ग्रीष्म 2009 तिमाही के लिए कालेज के डीन्स लिस्ट में और मुम्बई के **अतीत कोठारी** को ग्रीष्म 2009 तिमाही के लिए कालेज के प्रेसिडेन्ट्स लिस्ट में मनोनीत किया गया।

श्री सुशील दाहिमा 'अभय' को विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि

'उत्कल मेल' के संयुक्त सम्पादक एवं वरिष्ठ हिन्दी सेवी, कवि, पत्रकार **श्री सुशील दाहिमा 'अभय'** विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर (बिहार) द्वारा पी-एच०डी० के समकक्ष 'विद्यावाचस्पति' की मानद उपाधि से विभूषित किए गये हैं। गत सत्ताइस दिसम्बर को विद्यापीठ के चौदहवें दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि, दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध हिन्दी विद्वान डॉ० बालाशौरी रेड्डी, कुलपति डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, कुल सचिव डॉ० देवेन्द्रनाथ साह तथा भारत भर से आगत लगभग दो सौ हिन्दी विद्वानों, साहित्यकारों एवं सम्पादकों की उपस्थिति में विद्यापीठ के कुलाधिपति डॉ० लारी आज़ाद ने यह उपाधि प्रदान की।

पत्रकारिता के गौरव श्री अच्युतानंद मिश्र के कृतित्व का सम्मान

''माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के निवृत्तमान कुलपति **श्री अच्युतानंद मिश्र**, ज्ञान, भक्ति और कर्म की ऐसी त्रिवेणी है जिसने पत्रकारिता, शिक्षा और प्रशासन तीनों क्षेत्रों में नया इतिहास बनाया है, और सफलता के मामले में वे बेजोड़ साबित हुए हैं''—इन शब्दों के साथ मुख्यमन्त्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल के हिन्दी भवन में मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, नेशनल यूनियन आफ जर्नलिस्ट्स (इंडिया), जर्नलिस्ट्स यूनियन आफ मध्य प्रदेश और माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री मिश्र के कृतित्व के सम्मान में आयोजित गरिमापूर्ण समारोह में श्री मिश्र का शाल, रजत, श्रीफल और स्मृति चिह्न से सम्मान किया। उल्लेख है कि अच्युतानंद मिश्र ने माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में अपना पाँच वर्ष का कार्यकाल पूर्ण किया है।

रंजना शेखर को मिला सीमा स्मृति साहित्य पुरस्कार

बरेली। मानव सेवा क्लब और भारतीय पत्रकारिता संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में सीमा स्मृति साहित्य सम्मान से लखनऊ की प्रख्यात साहित्यकार **श्रीमती रंजना शेखर** को सम्मानित किया गया।

श्रीमती रंजना शेखर को माल्यार्पण कर उत्तरीय, सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न विशिष्ट अतिथि श्रीमती शारदा भार्गव ने प्रदान किया।

हिन्दी साहित्यकार डॉ० सुरेश चन्द्र सम्मानित

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में नार्वे के प्रवासी हिन्दी साहित्यकार **डॉ० सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'** को सम्मानित किया गया। इस दौरान उनके सम्मान में कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। ज्ञात हो डॉ० आलोक विगत 30 वर्षों से नार्वे में हिन्दी सेवा कर रहे हैं। उन्होंने स्पाइल दर्पण पत्रिका का सम्पादन, कहानी, नाटक, उपन्यास, फिल्म, डाक्यूमेंट्री आदि अनेक विधाओं में कार्य किया है। साथ ही अनेक विश्व हिन्दी सम्मेलनों में भागीदारी की है तथा नार्वे के प्रसिद्ध नाटककार हेनरिक इब्सन के नाटकों का सफल अनुवाद किया है।

भारतीय-कनाडाई को शीर्ष साहित्य पुरस्कार

टोरंटो में रहने वाले भारतीय मूल के **मोएज गुलाम हुसैन वासनजी** को उनकी पुस्थक 'एक प्लेस विदिन : रीडिस्कवरिंग इंडिया' के लिए *25 हजार अमेरिकी डालर* का कनाडा का शीर्ष साहित्य पुरस्कार मिला। केन्या में जन्मे वासनजी ने परमाणु विज्ञानी के तौर पर करियर की शुरुआत की थी। उन्हें उनके उपन्यासों के लिए दो बार गिलर पुरस्कार से पुरस्कृत किया जा चुका है।

श्री आशीष गौतम को 2010 ई० का विवेकानन्द सेवा सम्मान

कोलकाता की सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सामाजिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित 24वाँ 'विवेकानन्द सेवा सम्मान' युवा, दृढ़ संकल्पी तथा कुष्ठ रोगियों के समग्र उन्नयन हेतु समर्पित 'दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार' के संस्थापक **श्री आशीष गौतम** को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरसंघचालक श्री कु०सी० सुदर्शन के हाथों समर्पित किया गया। सम्मान स्वरूप 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) की नकद राशि एवं मानपत्र भेंट किया गया।

जगदीश किंजल्क सम्मानित

अभिवन कला परिषद भोपाल की 47वीं सालगिरह पर 24 जनवरी को आयोजित कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के स्थानीय शासन मन्त्री श्री बाबूलाल गौर ने 'दिव्यालोक' के सम्पादक **श्री जगदीश किंजल्क** को 'अभिनव शब्द शिल्पी' की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

सम्मान व विमोचन समारोह सम्पन्न

बिलासपुर स्थित विकास संस्कृति साहित्य परिषद के तत्त्वावधान में सम्मान व विमोचन समारोह का आयोजन शील साहित्य परिषद वाचनालय भवन जांजगीर में दिनांक 11 जनवरी 2010 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी चैतन्य अग्निशिखाजी महाराज श्री शंकराचार्य मठ काशी (वाराणसी) एवं अध्यक्ष डॉ० विनय कुमार पाठक वरिष्ठ समीक्षक/भाषाविद् थे। इस साहित्यिक अनुष्ठान में **पण्डित राजकिशोर द्विवेदी** को 'संस्कृतिरत्न राष्ट्रीय अलंकरण' से सम्मानित किया गया। पण्डित राजकिशोर द्विवेदी द्वारा अध्यात्म, धर्म, संस्कृति,

दर्शन पर एक दर्जन से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन किया गया है। समारोह में डॉ० वृन्दा सेन गुप्ता के शोधग्रन्थ 'छत्तीसगढ़ में कोसा उद्योग' का लोकार्पण किया गया। विकास संस्कृति पत्रिका के सद्य अंक जो आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी एवं समकालीन सन्दर्भ शोध संगोष्ठी पर केन्द्रित है, का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया।

डॉ० प्रदीप जैन को प्रतिष्ठित प्रेमचंद अवार्ड

''भाषा पर किसी का अधिकार नहीं होता, वह सबकी है और रहेगी'' यह बात मुजफ्फरनगर निवासी साहित्यकार **डॉ० प्रदीप जैन** ने बखूबी साबित कर दिखाई है। उर्दू शोध के लिए उनका चयन उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी द्वारा 'प्रेमचंद अवार्ड' के लिए किया है। इसके तहत उन्हें *एक लाख रुपये* के साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा।

हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान 2010

वाराणसी में सन् 1905 में स्थापित हिन्दी प्रचारक परिवार के संस्थापक, निस्पृह समाजसेवी, साहित्यानुरागी एवं ऐय्यारी कथाओं के सुप्रसिद्ध लेखक श्री निहालचन्द बेरी तथा उनके यशस्वी पुत्र व हिन्दी प्रकाशन जगत के पुरोधा श्री कृष्णचन्द्र बेरी की पावन स्मृति में 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान' की स्थापना की गयी है।

प्रभु श्री श्रीनाथजी के पाटोत्सव के शुभ अवसर पर 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान : 2010' का पुरस्कार हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, निबन्धकार एवं भारतीय प्रशासनिक अधिकारी, पश्चिम बंगाल के अतिरिक्त मुख्य सचिव **डॉ० प्रमोद कुमार अग्रवाल** (आई०ए०एस०) को 5 फरवरी 2010 को श्रीनाथद्वारा में आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया गया। पुरस्कारस्वरूप श्रीफल, शाल, उत्तरीय श्रीनाथजी का प्रसाद, श्रीनाथजी के हाथ कलम का चित्र, अभिनन्दन एवं सम्मान पत्र सहित ग्यारह हजार की राशि भेंट की गयी।

डॉ० अमरसिंह वधान सम्मानित

जैमिनी अकादमी, पानीपत द्वारा 20 दिसम्बर, 2009 को पानीपत में आयोजित राष्ट्रीय महाअलंकरण समारोह में हिन्दी साहित्यकार **डॉ० अमर सिंह वधान** को 'भारत गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। आचार्य चन्द्रमणि वशिष्ठ 'पहाड़ी मृणाल' के इस स्मृति समारोह के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ० विजय कुमार शाह ने डॉ० वधान को उपाधि पत्र, प्रतीक चिह्न एवं शॉल प्रदान कर अलंकृत किया। साथ ही डा० वधान को विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर (बिहार) द्वारा भागलपुर में आयोजित राष्ट्रीय महाअलंकरण समारोह में 'भारतीय भाषा रत्न सम्मान' से भी सम्मानित किया गया है। समारोह के अध्यक्ष डॉ० बालशौरि रेड्डी ने डॉ० वधान को उपाधि पत्र, पदक एवं शॉल प्रदान कर अलंकृत किया।

पण्डित विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में संगोष्ठी एवं सम्मान

साहित्यकार, भाषाशास्त्री एवं शिक्षाविद् स्व० डॉ० विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में उनके जन्मदिवस पर विद्याश्री न्यास, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के द्वारा वाराणसी स्थित कन्हैयालाल गुप्ता मोतीवाला स्मृति भवन में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित विद्वानों की भागीदारी उल्लेखनीय रही। भाषा, शिक्षा एवं साहित्य एवं संस्कृति को केन्द्रित करते हुए विद्वानों ने वैचारिक-मंथन द्वारा निष्कर्ष प्रस्तुत किये। इसी क्रम में चिन्तक-साहित्यकार **पद्मश्री रमेश चन्द्र शाह** को पं० विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। साथ ही पं० रामनवल मिश्र को लोककवि सम्मान दिया गया। सम्मानित श्री शाह एवं श्री मिश्र को शॉल, स्मृति चिह्न के साथ 21000/- रु० की राशि प्रदान की गयी।

कादम्बरी का सारस्वत महाकुम्भ

विगत दिनों संस्कारधानी जबलपुर की साहित्यिक संस्था कादम्बरी के साहित्यकार/पत्रकार सम्मान समारोह को मुख्य अतिथि माननीय श्री ईश्वरदास रोहाणी, अध्यक्ष, मध्य प्रदेश विधानसभा ने सारस्वत महाकुंभ कहकर इस आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सम्मान समारोह के अध्यक्ष पूर्व सांसद (राज्यसभा) डॉ० रत्नाकर पाण्डेय (दिल्ली) थे।

कार्यक्रम में संस्था की वार्षिक स्मारिका 'कादम्बरी' के लोकार्पण के साथ ही श्री अश्वनी पाठक की काव्यकृति 'रूढ़ियों के सांप' एवं डॉ० मुचकुंद शर्मा के प्रबन्ध काव्य 'विश्वामित्र' का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया।

डॉ० महेश दिवाकर (मुरादाबाद), डॉ० कृष्ण गोपाल मिश्र (होशंगाबाद), को समग्र लेखन हेतु, डॉ० भरतेन्दु मिश्र (दिल्ली) को नाट्य लेखन हेतु, डॉ० राधा गोविन्द थोगाम (मणिपुर) को अहिन्दी भाषी क्षेत्र की हिन्दी पत्रकारिता हेतु, डॉ० कृष्णकान्त एकलव्य (जौनपुर) को व्यंग्यविधा हेतु, डॉ० नलिनी विभा नाजली (हमीरपुर) को गजल विधा हेतु, डॉ० मुकुन्द शर्मा (बेगुसराय) को महाकाव्य, डॉ० उमेश नंदन सिन्हा (बिहार) को समीक्षा, श्री बैकुंठनाथ (अहमदाबाद) को कहानी, डॉ० चंद्रकान्त मेहता (अहमदाबाद) एवं प्रो० शरदनारायण खरे को निबन्ध, श्री महेन्द्र प्रताप सिंह (लखनऊ) एवं डॉ० कृष्णशंकर सोनाने (भोपाल) को उपन्यास, श्री कृपाशंकर शर्मा अचूक (जयपुर) एवं डॉ० अशोक गुलशन (बहराइच) को गीत के लिए, डॉ० देवेन्द्र आर्य (गाजियाबाद) एवं श्री शंकर सक्सेना (राजनादगाँव) को दोहा विधा, डॉ० कृष्णमणि चतुर्वेदी मैत्रेय (सुल्तानपुर) एवं किशन तिवारी (भोपाल) को लोक साहित्य, पं० गिरिमोहन गुरु (होशंगाबाद) को नवगीत, श्री राजा चौरसिया को बाल साहित्य, श्रीमती अर्चना मलैया एवं डॉ० विनय राजाराम को कविता हेतु, श्री प्रदीप शशांक को लघुकथा, श्री देवेन्द्र मिश्रा को कहानी, डॉ० अलका रिंसबुड (भोपाल) को अनुवाद हेतु सम्मानित किया गया। समग्र लेखन, नाट्य लेखन एवं साहित्यिक पत्रकारिता के लिए पाँच-पाँच हजार तथा शेष अन्य विधाओं के लिए 2100 रु० अभिनन्दन पत्र एवं अंगवस्त्र सहित प्रदान किये गये।

विजय मोहन सिंह व दूधनाथ को ज्ञानपीठ की फेलोशिप

भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक रवीन्द्र कालिया की विज्ञप्ति के अनुसार साहित्य की अद्यतन प्रवृत्तियों पर शोध के लिए हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक **डॉ० विजय मोहन सिंह** और कहानीकार-उपन्यासकार **डॉ० दूधनाथ सिंह** को भारतीय ज्ञानपीठ की फेलोशिप प्रदान की जाएगी, जिसके अनतर्गत दोनों लेखकों को *डेढ़-डेढ़ लाख रुपए* प्रदान किए जाएँगे। फेलोशिप की अवधि एक साल की होगी।

पंकज मित्र को मीरा स्मृति पुरस्कार

नई दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में आयोजित समारोह में मीरा फाउंडेशन द्वारा स्थापित मीरा स्मृति पुरस्कार हिन्दी के लेखक **पंकज मित्र** को उनके कहानी-संग्रह 'हुडुकलुल्लु' के लिए वरिष्ठ कथाकार शेखर जोशी और काशीनाथ सिंह ने संयुक्त रूप से प्रदान किया। इस अवसर पर काशीनाथ ने कहानी-संग्रह पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि आज के लेखन में हरियाली है, पर यह हरियाली किस खेत की है और किसकी है, किसने बोया है—इसका पता नहीं चल रहा है। लेकिन पंकज की कहानियों में उनकी अपनी हरियाली है।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी सम्मान

रायबरेली में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की पुण्यतिथि (21 दिसम्बर) पर अलंकरण व काव्यांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस वर्ष का आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी युगप्रेरक सम्मान साहित्यकार **डॉ० भारत यायावर** को दिया गया। डॉ० यायावर को यह सम्मान आचार्य द्विवेदी के विलुप्त हो रहे साहित्य को सहेजने के श्रमसाध्य कार्य के लिए प्रदान किया गया।

डॉ० राममनोहर त्रिपाठी लोक सेवा सम्मान, 2009 प्रख्यात पत्रकार और माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति अच्युतानन्द मिश्र को दिया गया।

रमाकांत स्मृति कहानी पुरस्कार मुरारी शर्मा को

नई दिल्ली के गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान में आयोजित पुरस्कार अर्पण समारोह में 12वाँ रमाकांत स्मृति कहानी पुरस्कार **मुरारी शर्मा** को प्रदान किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए यह पुरस्कार राजेन्द्र यादव ने प्रदान किया।

मंडी (हिमाचल प्रदेश) के रहने वाले मुरारी शर्मा को यह पुरस्कार उनकी कहानी 'बाणमूठ' के लिए दिया गया।

प्रेम जनमेजय पुरस्कृत

पंजाब तथा दिल्ली की साहित्यिक संस्था 'शब्दसेतु' के तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में प्रसिद्ध व्यंग्यकार **प्रेम जनमेजय** की कृति 'कौन कुटिल खल कामी' को दसवें 'लीलारानी स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० हरीश नवल ने की। समारोह में प्रेम जनमेजय के सद्य:-प्रकाशित संकलन 'इक्यावन श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ', डॉ० बलदेव सिंह बद्दन एवं धर्मपाल सिंघल की पुस्तक 'गुरु रविदास जी की सटीक वाणी' तथा के०एल० गर्ग द्वारा सम्पादित 'हास्य-चालीसा' का लोकार्पण भी किया गया।

डालमिया श्रीवाणी अलंकरण

नई दिल्ली, रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्रीवाणी अलंकरण, 2009 के लिए जयपुर के **पं० मोहनलाल पाण्डेय** को उनके संस्कृत उपन्यास 'पद्मिनी' के लिए देने का निर्णय किया गया है। अलंकरणस्वरूप दो लाख रुपये, प्रशस्ति-पत्र, श्री वाणी की प्रतिमा, रजत श्रीफल तथा अंगवस्त्र भेंट किया जाता है।

डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय को 'साहित्य श्री' अलंकरण

अलीगढ़ की साहित्यिक संस्था 'ग्रन्थायन' द्वारा प्रसिद्ध शिक्षाविद्, समीक्षक, लेखक एवं बागला इण्टर कॉलेज, हाथरस के प्राचार्य **डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय** को, आचार्य डॉ० राकेश गुप्त की धर्मपत्नी की स्मृति में स्थापित, अखिल भारतीय स्तर का 'साहित्य श्री सम्मान' (रुपये 5100 नगद, शॉल, प्रमाणपत्र, प्रतीक चिह्न आदि) से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आगरा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्ता ने की।

पाँच साल के पुरस्कार एक साथ

वाराणसी। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में 2005 से 2010 तक के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती पुरस्कार की घोषणा कर दी गई है। इसमें कोलकाता के पी०के० मुखोपाध्याय (2005), वाराणसी के कैलाशपति त्रिपाठी (2006), हीराबल्लभ शास्त्री (2007), जनार्दन पाण्डेय शास्त्री (2008) और बंगलूरू के डी० प्रह्लादाचार्य (2010) को पुरस्कार दिया जायेगा। इसी प्रकार हरिहरानंद सरस्वती स्मृति पुरस्कार आन्ध्र प्रदेश के सद्गुरु कृष्णाजी (2005), तमिलनाडु के आर० बालसुब्रमण्यम (2006), तिरुपति के वी० स्वामीनाथन (2007), उज्जैन के श्रीनिवास रथ (2008) और वाराणसी के कमलेशदत्त त्रिपाठी (2009) व वशिष्ठ त्रिपाठी (2010) को दिया जायेगा। यह पुरस्कार 17 मार्च को विवि के स्थापना दिवस पर दिया जाएगा। पिछले पाँच साल से इन पुरस्कारों का वितरण नहीं हो रहा था।

मालिनी अवस्थी को 'भिखारी ठाकुर सम्मान'

13 जनवरी को दिल्ली में मशहूर भोजपुरी गायिका मालिनी अवस्थी को 'भिखारी ठाकुर सम्मान' सांसद श्री जगदंबिका पाल ने पूर्वांचल एकता मंच के विश्व भोजपुरी सम्मेलन के दौरान प्रदान किया। सम्मान-स्वरूप उन्हें प्रतीक-चिह्न व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने किया।

शरद दत्त व मदन कश्यप को 'शमशेर सम्मान'

12 जनवरी को दिल्ली में कवि शमशेर की जयंती पर वर्ष 2009 का शमशेर सम्मान सृजनात्मक गद्य के लिए श्री शरद दत्त व कविता के लिए श्री मदन कश्यप को दिया गया। आगामी बारह मई को नई दिल्ली में यह सम्मान प्रदान किया जाएगा।

आलोक मेहता को 'हरिदत्त शर्मा सम्मान'

18 दिसम्बर को पत्रकारिता व लेखन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए वरिष्ठ पत्रकार और 'नई दुनिया' के प्रधान सम्पादक डॉ० आलोक मेहता को 'हरिदत्त शर्मा सम्मान' प्रदान किया गया। राजधानी दिल्ली के रशियन कल्चर सेंटर में आयोजित सम्मान समारोह में सांसद श्री मोतीलाल वोरा ने श्री मेहता को प्रशस्ति-पत्र और शॉल देकर सम्मानित किया।

वीरेन्द्र तिवारी स्मृति सम्मान

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और हिन्दी भवन न्यास के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित गरिमापूर्ण अलंकरण समारोह में मध्य प्रदेश मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति डी०एम० धर्मादिकारी ने डॉ० एस०एन० सुब्बाराव को वीरेन्द्र तिवारी स्मृति सम्मान के अन्तर्गत 21000 रुपये की सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष प्रो० रमेश दवे ने की।

नंदकिशोर आचार्य सम्मानित

5 जनवरी को भोपाल में प्रतिष्ठित नरेश मेहता सम्मान वर्ष 2009 के लिए वरिष्ठ लेखक और विचारक श्री नंदकिशोर आचार्य को दिया जाएगा। वैचारिक और सांस्कृतिक लेखन के लिए मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा स्थापित इस सम्मान में प्रशस्ति-पत्र और 51,000 रुपए की राशि प्रदान की जाती है।

जीवकांत को 'प्रबोध साहित्य सम्मान'

4 जनवरी को दिल्ली में वरिष्ठ कवि और उपन्यासकार श्री जीवकांत को मैथिली भाषा का शीर्ष पुरस्कार 'प्रबोध साहित्य सम्मान' देने की घोषणा की गई है।

डॉ० सीतेश आलोक सम्मानित

3 जनवरी को अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की बीकानेर इकाई द्वारा आयोजित समारोह में कथाकार एवं कवि डॉ० सीतेश आलोक को 'स्व० पं० हीरालाल शुक्ल रामेश्वरी देवी स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया।

श्री यज्ञ शर्मा को 'व्यंग्यश्री सम्मान'

13 फरवरी को व्यंग्य-विनोद के शीर्षस्थ रचनाकार पं० गोपालप्रसाद व्यास के जन्मदिवस पर चर्चित व्यंग्यकार श्री यज्ञ शर्मा को हिन्दी भवन के सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में 'व्यंग्यश्री सम्मान-2010' प्रदान किया गया। इस चौदहवें व्यंग्यश्री सम्मान से श्री यज्ञ शर्मा को कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, वरिष्ठ व्यंग्यकार डॉ० गोपाल चतुर्वेदी, वरिष्ठ कवि-पत्रकार श्री कन्हैयालाल नंदन, डॉ० विश्वनाथ सचदेव, श्री हरीशंकर बर्मन और डॉ० रत्ना कौशिक ने क्रमश: प्रशस्ति-पत्र, शॉल, पुष्पगुच्छ, वाग्देवी की प्रतिमा, प्रतीक-चिह्न, इक्यावन हजार रुपए की सम्मान राशि और रजत-श्रीफल देकर विभूषित किया।

'कथादेश' के सम्पादक श्री हरिनारायण सम्मानित

विगत दिनों बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में आयोजित पं० बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि प्रख्यात कवि श्री विनोदकुमार शुक्ल ने श्री हरिनारायण को यह सम्मान प्रदान किया। सम्मान के अन्तर्गत शॉल, श्रीफल, प्रतीक-चिह्न, प्रमाण-पत्र और ग्यारह हजार रुपए नकद प्रदान किए गए।

श्री रवीन्द्र कालिया को शिरोमणि पुरस्कार

प्रसिद्ध साहित्यकार और भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक श्री रवीन्द्र कालिया को पंजाब सरकार के सर्वोच्च 'शिरोमणि पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। ढाई लाख रुपए का यह पुरस्कार उन्हें मार्च के अन्तिम सप्ताह में दिया जाएगा।

संगोष्ठी/लोकार्पण

'दलित साहित्य में उभरते आक्रोश की समझ जरूरी'

वाराणसी। वरिष्ठ कथाकार व 'बयान' के सम्पादक मोहनदास नैमिशराय ने कहा कि दलित साहित्य में उभरते आक्रोश की समझ व सम्मान सवर्ण साहित्यकारों को होनी चाहिए। तभी समाज में सहमति का रास्ता बनेगा। हालांकि दलित साहित्य पर सहमति के साथ दलित साहित्यकारों के साथ तालमेल होने लगा है। यह अच्छी बात है।

उक्त बातें प्रगतिशील लेखक संघ एवं सर्जना साहित्य संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में उदय प्रताप महाविद्यालय में 15 फरवरी को आयोजित कार्यक्रम में जवाहरलाल कौल 'व्यग्र' के कहानी संग्रह 'चक्कर' का लोकार्पण कर कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहीं।

अध्यक्षीय संबोधन में वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंह ने कहा कि जवाहरलाल कौल को कहानी कहाँ से और कैसे बनती है, इसकी गहरी समझ है। डॉ० रामसुधार सिंह ने कहा कि 'व्यग्र' की कहानियों से लोगों को ग्रामीण बोली के शब्द याद आएँगे जिन्हें वह भुला बैठे हैं। प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि इन कहानियों में दलित आक्रोश के साथ सृजन भी है।

पुस्तकों के लोकार्पण की परम्परा बाजारवाद की देन

वाराणसी। कथाकार सुधा अरोड़ा ने कहा कि आज के दौर में बाजार एकता नहीं एकरूपता पैदा कर रहा है। इससे सांस्कृतिक विभिन्नताएँ नष्ट हो रही हैं। वहीं बाजारवाद पुस्तकों के लोकार्पण की परम्परा को बढ़ावा दे रहा है। साहित्य के नाम पर अश्लीलता और खुलेपन के नाम पर अपसंस्कृति परोसी जा रही है। स्त्री लेखन तक में कन्या भ्रूण हत्या व दहेज से अधिक देह विमर्श हावी होता जा रहा है।

सुश्री अरोड़ा 4 फरवरी को महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय में हिन्दी विभाग की ओर से आयोजित 'साहित्य : समय और बाजार' विषयक तीन दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि आज का लेखन बोल्ड होने के बजाय सनसनी पैदा करने में लगा है। इसका बाजार व्यक्ति में उपभोक्ता होने की समझ पैदा कर रहा है। इसने मूल्यों की परिभाषा को बदल कर रख दिया है। कल तक जो अनैतिकता थी आज सर्वमान्य के दायरे में आ गई है। गाँवों में भी विचार के स्थान पर वस्तुएँ पहुँच रही हैं। कुलपति प्रो० अवधराम ने दीप जलाकर संगोष्ठी का उद्घाटन किया। स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो० श्रद्धानन्द, विषय स्थापना संयोजक प्रो० सत्यदेव त्रिपाठी, संचालन डॉ० निरंजन सहाय व धन्यवाद ज्ञापन डॉ० मुनीन्द्र तिवारी ने किया। 'समकालीन कविता : समय और बाजार' विषयक प्रथम तकनीकी सत्र में बतौर मुख्य वक्ता प्रो० अवधेश प्रधान ने कहा कि बाजार आविष्कार के स्वभाव को नियन्त्रित कर रहा है। वरिष्ठ कवि अष्टभुजा शुक्ल, डॉ० रामसुधार सिंह, प्रो० वशिष्ठ अनूप, डॉ० कमलेश आदि ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता प्रो० राजेन्द्र कुमार, संचालन प्रो० सुरेन्द्र प्रताप व धन्यवाद ज्ञापन अनुराग कुमार ने किया।

दिनकर अनुशीलन ग्रन्थ का चेन्नई में लोकार्पण

''यह हमारा सौभाग्य है कि बिहार ने दिनकर जैसा तेजस्वी कवि हिन्दी को प्रदान किया। उनकी पावन स्मृति को मैं श्रद्धा समर्पित करता हूँ तथा चेन्नई के साहित्यकारों को साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने राष्ट्रकवि दिनकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक श्रेष्ठ ग्रन्थ प्रकाशित किया है।'' ये उद्गार व्यक्त किये बिहार के कानून व सूचना मन्त्री श्री रामनाथ ठाकुर ने। साहित्यानुशीलन समिति के सत्तावनवें वर्ष में प्रकाशित ग्रन्थ 'दिनकर अनुशीलन' को 3 जनवरी 2010 को आयोजित विशेष समारोह में काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति आचार्य सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा ने लोकार्पित किया। मद्रास विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी-विभागाध्यक्ष प्रो० रहमतुल्ला ने दिनकर के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके विशिष्ट ग्रन्थ 'संस्कृति के चार अध्याय' की महत्ता को निरूपित किया। समिति-अध्यक्ष डॉ० इन्दरराज बैद ने विचार व्यक्त किया कि हिन्दी साहित्य के उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम में इस ग्रन्थ को आंशिक रूप से जोड़ना श्रेयस्कर रहेगा। सन् 1962 ई० में प्रकाशित प्रथम मुक्ताहार के विद्वान् लेखकद्वय डॉ० बालशौरि रेड्डी और डॉ० सुब्रह्मण्यन विष्णुप्रिया का उनके दीर्घकालीन साहित्यिक योगदान के लिए अभिनन्दन किया गया।

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के बारहवें स्थापना दिवस समारोह में पद्म विभूषण से विभूषित पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में 'सभ्यता और पर्यावरण' विषय पर व्याख्यान दिया। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति विभूतिनारायण राय ने की।

गाँधीवादी पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा ने अपने भाषण में कहा कि पश्चिम की भोगवादी सभ्यता भारतीय संस्कृति को ढकती जा रही है। आज भोगवादी सभ्यता ने संकट पैदा किए हैं। अनेक देश बारूद के ढेर पर खड़े हो रहे हैं। युद्ध के भय से सुरक्षा के नाम पर हमने देश को संकट में डाल दिया है। गरीब देश अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा हथियार खरीदने में लगा रहा है। गाँधीजी ने भाईचारे का सन्देश दिया था। उनका कहना था कि एबीसी (अफगानिस्तान, बर्मा, सीलोन) का त्रिकोण बनाओ, इससे सीमा सुरक्षा पर खर्च कम होगा तथा पैसे का व्यय विकास कार्यों में लगाया जा सकेगा। गाँधीजी भी कहते थे कि सुरक्षा खर्च अनुत्पादक है। इस खर्च का व्यय धरती को उठाना पड़ता है, इसलिए इस पर खर्च नहीं किया जाना चाहिए। हमने त्रिकोण तो नहीं बनाया, पर यूरोपीय देशों ने व्यापारिक उद्देश्य से महासंघ बना लिया।

पर्यावरणीय समस्याओं के सन्दर्भ में देखा जाय तो आज जंगलों की अंधाधुंध कटाई होने से पानी की समस्या दिनों-दिन विकराल होती जा रही है। वर्षा के पानी से धरती का लहू-माँस बहकर जा रहा है। हरित क्रान्ति के नाम पर हमने रासायनिक खादों से धरती माँ को नशेबाज बना दिया है। वायु व जल प्रदूषण तथा मिट्टी का क्षरण रोकने का एकमात्र उपाय वृक्ष खेती है। वृक्ष खेती से हम स्वावलम्बी बन सकते हैं। हमें फूलों, फलों, रेशा वाले पौधे के लिए उपयुक्त जगह कहाँ मिलेगी? इसपर अनुसन्धान करने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति की परम्परा अरण्य संस्कृति की रही है, जो मनुष्य प्रकृति के बीच में रहेगा वही प्रकृति से भी प्रेम करेगा। आज अरण्य ही क्या लोग गाँवों को भी भूलने लगे हैं। गाँधीजी गाँवों को ताकतवर बनाना चाहते थे। उनका मानना था कि गाँव समृद्ध होगा तो हर हाथ को रोजगार मिलेगा। जिससे हिन्दुस्तान समृद्ध होगा।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में 27वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियों के क्रम में '27वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ० अरुणाभा दत्ता ने बताया कि राजभाषा अनुभाग इस बात के लिए बधाई का पात्र है कि वह अबाध गति से पिछले आठ वर्षों से 'आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियों' का आयोजन करता आ रहा है।

संगोष्ठी का संचालन करते हुए संस्थान के राजभाषा अनुभाग के प्रभारी एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ० दिनेश चमोला ने कहा कि आज हिन्दी में विज्ञान लेखन करने के लिए न शब्दावली की समस्या है न भाषा की केवल दृढ़ इच्छा-शक्ति की जरूरत है।

संगोष्ठी सत्र में विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

राजनैतिक इच्छा शक्ति से ही हिन्दी राष्ट्रभाषा के साथ-साथ विश्व भाषा बनेगी

भोपाल। पाँचवें विश्व हिन्दी दिवस पर मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा हिन्दी भवन में शिक्षाविद् प्रो० रमेश दवे की अध्यक्षता में एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी हुई, जिसमें 'हिन्दी को विश्व भाषा बनाने की चुनौतियाँ' विषय पर मुख्य रूप से गैर हिन्दी भाषी वक्ताओं ने खुलकर अपने विचार रखे। सभी ने एक स्वर में कहा कि देश में राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी के कारण ही हिन्दी अब तक सही माने में राजभाषा और राष्ट्रभाषा नहीं बन पायी है। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि कई प्रकार की चुनौतियों के रहते हुए भी हिन्दी मजबूत राजनैतिक इच्छाशक्ति से ही राष्ट्रभाषा और विश्वभाषा का दर्जा प्राप्त करने में कामयाब हो पायेगी। वक्ताओं ने विज्ञान और तकनीकी विषयों की उत्कृष्ट किताबों के अनुवाद का काम व्यापक स्तर पर अभियान के रूप में कराने की आवश्यकता बतायी। उनका कहना था कि हिन्दी में ऐसी किताबें उपलब्ध न होने के कारण युवा पीढ़ी हिन्दी के साथ ठीक से जुड़ नहीं पा रही है।

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन सम्पन्न : जगदीश किंजल्क अध्यक्ष

''अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन ने भाषाओं के संरक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और मध्य प्रदेश का नाम रौशन किया है। इस श्रेष्ठ कार्य को आगे बढ़ाने के लिए मध्य प्रदेश शासन हर सम्भव प्रोत्साहन देगा।'' ये विचार हैं मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति मन्त्री पं० लक्ष्मीकान्त शर्मा के। आप विगत 10 जनवरी को पुलिस प्रशिक्षण संस्थान भोपाल के सभागार में आयोजित प्रान्तीय सम्मेलन में बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता की राष्ट्रीय महासचिव श्री सतीश चतुर्वेदी ने। इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार, अखिल भारतीय अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कारों के संयोजक एवम चर्चित पत्रिका 'दिव्यालोक' के सम्पादक श्री जगदीश किंजल्क को सर्वसम्मति से तीन वर्षों के लिए अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इस अवसर पर संस्कृति मन्त्री श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा को 'संस्कृति भूषण' अलंकरण से सम्मानित किया गया।

विमोचन

अलीगढ़ में सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती शुभदा पाण्डेय की पुस्तक 'माँ कह एक कहानी' का विमोचन मंगलायतन विश्वविद्यालय में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। कुलपति प्रो० सतीशचन्द्र जैन की अध्यक्षता में विमोचन श्रीमती प्रेमलता जैन ने किया।

बाबूजी ने हिन्दी को दी नयी दिशा

आगरा स्थित नागरी प्रचारिणी सभा भवन में बाबू गुलाबराय स्मृति संस्थान के तत्त्वावधान में हिन्दी के सुप्रसिद्ध समीक्षक एवं साहित्यकार बाबू गुलाब राय की 122वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित समारोह में चेन्नई से आए साहित्यकार बालशौरी रेड्डी ने कहा कि बाबूजी के साहित्य को आज भी दक्षिण भारतीय लोग पसन्द करते हैं। न्यूयार्क में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ० विजयकुमार मेहता ने कहा कि जब वे छोटे थे तभी से बाबूजी के साहित्य को पढ़ते थे, जिससे उन्हें बहुत प्रेरणा मिली। इस अवसर पर डॉ० मेहता, डॉ० रेड्डी और पीवी जगमोहन को 'बाबू गुलाबराय सम्मान' प्रदान किया गया। गोवर्धन के कवि देवकीनन्दन कुम्हेरिया को 'बाबू धर्मपाल विद्यार्थी सम्मान' दिया गया। 'बाबू प्यारेलाल विज्ञान लेखन सम्मान' विनोद कुमार मिश्रा (दिल्ली) को दिया। इस दौरान डॉ० श्रीभगवान शर्मा द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य का अधुनातन इतिहास' का विमोचन किया गया। विवि के पूर्व कुलसचिव डॉ० रामअवतार शर्मा ने कहा कि बाबूजी की जो उपेक्षा स्थानीय स्तर पर की जा रही है, वह उचित नहीं है। इसके लिए स्थानीय साहित्यकारों को जागरूक होना होगा। अन्त में बाबू गुलाबराय के पुत्र श्री विनोदशंकर गुप्त ने डॉ० मेहता तथा डॉ० रेड्डी का विशेष आभार प्रकट करते हुए अतिथियों को धन्यवाद दिया।

नज़ीर की शायरी में सच्चे हिन्दुस्तान की झलक

मशहूर शायर नज़ीर बनारसी की जन्मशती पर विगत दिनों महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के गाँधी अध्ययनपीठ में 'भारतीय समाज में सह अस्तित्व की चुनौतियाँ' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन मानविकी संकाय और प्रगतिशील लेखक संघ ने किया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने किया। प्रो० सिंह ने मूलचंद सोनकर द्वारा सम्पादित 'नज़ीर बनारसी की शायरी' नामक पुस्तक का लोकार्पण भी किया। प्रो० सिंह ने नज़ीर बनारसी के कई शेर भी पढ़े और उनके साथ जुड़े संस्मरणों को सुनाया। कहा कि भारत की साझा संस्कृति बनारस में ही विकसित होती रही है। इसे कबीर के जमाने से ही देख सकते हैं। नज़ीर की शायरी में भी सच्चे हिन्दुस्तान की झलक मिलती है। बनारस प्रगतिशील आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। बनारस में चुनौतियाँ भी बहुत हैं। कबीर भी इन्हीं चुनौतियों से जूझ रहे थे और नज़ीर ने भी कम नहीं झेला। पूरे परिवेश को लेकर देखा जाय तो नज़ीर की याद को बनाये रखना हमारी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है, क्योंकि जिस तरह की संस्कृति आज पनप रही है, ऐसे समय में अपनी विरासत को सहेज कर रखना सबसे बड़ा काम है। अध्यक्षता करते हुए काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० अवधराम ने कहा कि जनता के साहित्यकारों को जनता तक पहुँचाना हमारी जिम्मेदारी है।

निर्मल वर्मा की 14 पुस्तकों का विमोचन

दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर एनेक्स में आयोजित समारोह में प्रख्यात साहित्यकार दिवंगत निर्मल वर्मा की चौदह पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। इन चौदह पुस्तकों में से 11 पुस्तकें 'निर्मल वर्मा के अनुवाद' के नाम से छपी हैं, जिनमें रूसी और चेक भाषा से निर्मलजी द्वारा अनूदित उपन्यास, कहानी, नाटक आदि शामिल हैं। दो पुस्तकों में उनके पत्रों का संग्रह है और एक पुस्तक उनके व्याख्यान पर आधारित है।

गालिब पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिल्ली के एवाने-गालिब सभागार में गालिब इंस्टीट्यूट द्वारा 'जश्न-ए-गालिब' समारोह और दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उपराज्यपाल तेजेंद्र खन्ना ने प्रो० असारुल्लाह, प्रो० अख्तर मेंहदी, मखमूर सईदी, प्रो०अब्दुल हसन सत्तार, हसन कमाल, नंद किशोर विक्रम और प्रो० चौधरी मोहम्मद नईम को सम्मानित किया तथा सम्मेलन में सात पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

ग्लोबल होती हिन्दी

दिल्ली विश्वविद्यालय के कमला नेहरू कॉलेज द्वारा 'ग्लोबल होती हिन्दी की उपेक्षा क्यों?' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं का मत था कि ''जो भाषा बाजार की माँग के अनुसार खुद को अपडेट करती रहती है, वह हमेशा रोजगारपरक बनी रहती है। ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में हिन्दी को भी समय की माँग के अनुसार बदलना और अपना महत्त्व स्थापित करना चाहिए।'' संगोष्ठी की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० सुधीश पचौरी ने की।

शंकर स्मृति व्याख्यान

नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में शंकर स्मृति प्रतिष्ठान, पारिजात संस्था तथा भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में दिवंगत पूर्व सांसद व साहित्यकार शंकर दयाल सिंह की स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डॉ० कर्णसिंह ने इतिहासकार रंजन कुमार सिंह की पुस्तक 'सूर्य-दी गॉड एंड हिज अबोड' का लोकार्पण करते हुए कहा कि सूर्य सृष्टि की उत्पत्ति का आधार है और सौर ऊर्जा को नजरअंदाज कर विज्ञान आधारित विकास सम्भव नहीं है।

'भारत : नियति और संघर्ष'

नई दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में आयोजित समारोह में तरुण विजय की सद्य: प्रकाशित कृति 'भारत : नियति और संघर्ष' का लोकार्पण दत्तात्रेय होसबले द्वारा सम्पन्न किया गया।

'वी०पी० सिंह : सफर और संघर्ष'

पटना तारामंडल सभागार में आयोजित समारोह में अशोक कुमार सिन्हा की पुस्तक 'वी०पी० सिंह : सफर और संघर्ष' का लोकार्पण करते हुए डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह गरीब-पिछड़ों के मसीहा और समाज को बदलने वाले महान् लेखक थे। उन्होंने कलम की ताकत से सदैव समाज और देश को बदलने का काम किया। वे जितने अच्छे लेखक थे, उतने ही अच्छे कवि और चित्रकार भी।

मृदुला गर्ग का उपन्यास 'मिलजुल मन'

नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित समारोह में प्रतिष्ठित लेखिका मृदुला गर्ग के उपन्यास 'मिलजुल मन' का लोकार्पण करते हुए वरिष्ठ कथाकार राजेन्द्र यादव ने कहा कि पहले स्त्रियाँ पुरुषों के लिए कथा, कहानी लिखतीं थीं, ताकि वह पढ़कर उसे सराहें। अब स्त्री की दृष्टि में स्त्रियों के बारे में उपन्यास लिखा जा रहा है। मृदुला गर्ग का उपन्यास 'मिलजुल मन' ऐसी ही रचना है।

समारोह में वरिष्ठ लेखिका मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, कमला सिंघवी, अनामिका, कमल कुमार, गीताश्री, राजेश जैन, अजय नावरिया आदि मौजूद थे।

'मधुबाला-दर्द का सफर'

नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में सुशीला कुमारी द्वारा लिखित 'मधुबाला—दर्द का सफर' शीर्षक पुस्तक का शरद दत्त, कुलदीप सिन्हा और सांसद राशिद अल्वी आदि ने लोकार्पण किया। लोकप्रिय फिल्म अभिनेत्री मधुबाला को सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति, पूरब की वीनस माना जाता था। उन्होंने न केवल अपने सौन्दर्य से बल्कि अपने अभिनय से सिने जगत् में अपनी गहरी छाप छोड़ी थी लेकिन उनकी निजी जिन्दगी दर्द का सफर ही रही।

'तिनका-तिनका'

चंडीगढ़ के प्रेस क्लब में साहित्य संगम के तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में बठिंडा के उपन्यासकार सुरेश हंस के उपन्यास 'तिनका-तिनका' का लोकार्पण किया गया। अध्यक्षता दैनिक ट्रिब्यून के सम्पादक नरेश कौशल ने की। इस अवसर पर डॉ० रमेश कुंतल मेघ ने कहा कि यह उपन्यास जहाँ दंगों की मानसिकता को बेनकाब करता है, वहीं मानवाधिकारों की छाया में जीवन के सकारात्मक स्वरूप को भी चित्रित करता है।

स्त्री मातृत्व से नहीं अपने विवेक से पूर्ण होती है।

'स्त्री मातृत्व मात्र से नहीं अपने विवेक से पूर्ण होती है और इसी स्त्री की आज समूचे विश्व को आवश्यकता है।' ये शब्द प्रख्यात कथाकार/व्यंग्यकार सूर्यबाला ने गोवा में 'कोंकणी भाषा मण्डल' द्वारा आयोजित श्रीमती विजयाबाई सरमलकर व्याख्यानमाला के प्रथम आयोजन के अवसर पर कहे।

सूर्यबाला ने 'समकालीन स्त्री लेखन का इतिहास तथा विकास' पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए देश में गहराती अपसंस्कृति और भाषा समस्या पर भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि विजयाबाई जैसी समर्थ और साहित्य तथा समाज के प्रति समर्पित रचनाकारों से ही साहित्य एवं भाषा अभिमण्डित होती है। विजयाबाई नि:सन्देह कोंकणी का अभिमान है।

त्रैमासिक पत्रिका 'प्रबुद्ध विहार' का लोकार्पण

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन-इतिहास के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ० महेश अहिरवार के सम्पादन में प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'प्रबुद्ध विहार' के प्रवेशांक का लोकार्पण समारोह विश्वविद्यालय के कला संकाय प्रेक्षागृह में सम्पन्न हुआ। पत्रिका का लोकार्पण महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० अवधराम जी के द्वारा किया गया। दूसरे सत्र में 'दलित आन्दोलन की चुनौतियाँ और लघु पत्रिकाओं की भूमिका' विषयक विचार गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन प्रो० चौथीराम यादवजी ने दिया।

हरीश भादाणी को याद किया

जनकवि हरीश भादाणी की स्मृति में अलवर के साहित्यकारों, प्रबुद्ध नागरिकों तथा श्रमिकों ने विगत बुधवार को प्रेरणा सभागार में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। गोष्ठी का विषय था 'हरीश भादानी : व्यक्ति और रचनाकार।' मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ० जीवन सिंह मानवी ने कहा कवि हरीश भादानी जनवादी संस्कृति के पुरोधा थे। उनकी लम्बी कविताओं में आत्म सम्मान और आत्म साक्षात्कार का भाव था। उन्होंने भादानी की लम्बी कविता पितृकल्प, अष्टावक्र और नष्टोमोह पर विस्तार से चर्चा की।

वामिक जौनपुरी जन जागरण सांस्कृतिक यात्रा

'इप्टा', प्रगतिशील लेखक संघ, जन संस्कृति मंच और कलम नाट्य मंच ने कैफी के आजमगढ़ से वामिक के जौनपुर तक दर्जनों गाँवों-कस्बों में अपने गीतों-नाटकों के जरिये वामिक जौनपुरी के इंकलाब के सन्देश को आम अवाम तक पहुँचाने की कोशिश की।

वामिक जौनपुरी के 'जन्म शताब्दी वर्ष' में 'भूखा है बंगाल रे साथी' जैसे अमर गीत के रचयिता वामिक की आवाज हमारे गीतों, नाटकों मे उसी तरह थी, जैसे ब्रेख्त ने कहा था : क्या जुल्मतों के बाद भी गीत गाये जायेंगे ?/हाँ जुल्मतों के दौर के ही गीत गाये जायेंगे।

शिबली एकेडेमी के हॉल में 'वामिक जौनपुरी की विरासत' पर आयोजित संगोष्ठी के साथ इस यात्रा की वैचारिक शुरुआत हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के अध्यक्ष, अली अहमद फातमी ने वामिक को कबीर और नज़ीर की परम्परा का शायर बताते हुए कहा कि वामिक की शायरी में हिन्दी-उर्दू का भेद मिट जाता है।

कविता-संग्रह 'ये मेरे कामकाजी शब्द' का विमोचन

प्रवासी भारतीय समाज की ओर से पिछले दिनों त्रिवेणी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में हिन्दी के वरिष्ठ कवि और जापन की तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज में कार्यरत प्रोफेसर सुरेश ऋतुपर्ण के षष्ठिपूर्ति समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के महानिदेशक श्री वीरेन्द्र गुप्त ने कहा—''डॉ० सुरेश ऋतुपर्ण ने सन् 1988-1992 के मध्य त्रिनीडाड में हिन्दी प्रचार-प्रसार व शिक्षण के सन्दर्भ में जो कार्य किया वह मात्र भारतीय हाईकमीशन या वहाँ के विश्वविद्यालय तक ही सीमित न था वरन उन्होंने उसे विभिन्न संस्थाओं के साथ मिलकर पूरे देश में फैलाया।'' इस अवसर पर डॉ० रामदरश मिश्र की अध्यक्षता में सुरेश ऋतुपर्ण के सद्य: प्रकाशित काव्य-संग्रह 'ये मेरे कामकाजी शब्द' का विमोचन भी हुआ जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय की पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ० निर्मला जैन ने कहा—सुरेश ऋतुपर्ण समर्पित भाव से केन्द्रित होकर कार्य करने वाले रचनाकार हैं और 'ये मेरे कामकाजी शब्द' की कविताएँ बड़ी सार्थक कविताएँ हैं।

पुलिस-जनता के बीच मित्रवत सम्बन्ध से ही रुकेंगे अपराध : न्यायमूर्ति धर्माधिकारी

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति एवं पण्डित रविशंकर शुक्ल हिन्दी भवन न्यास के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'अपराध : विवेचना और सामाजिक जागरूकता' विषय पर केन्द्रित व्याख्यानमाला में न्यायमूर्ति डी०एम० धर्माधिकारी ने कहा कि प्रजातंत्र की जड़ों को गहरी करने और उसके प्रति लोगों के विश्वास को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रजातन्त्र में पुलिस और सेना का दखल कम से कम होना चाहिए। यह तब ही सम्भव है जब समाज का हर वर्ग न्याय-व्यवस्था में सहभागिता करे। आज बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि पुलिस और जनता के बीच सौहार्दपूर्ण, मित्रवत और मानवीय सम्बन्ध मजबूत हो और पुलिस भी अपने दायित्वों को ठीक से निभाये। समाज में अपराधों को

बढ़ावा देने की स्थितियों का निर्माण न होने पाए, इस काम में भी जनता को अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए। आपने इंटरनेट, मोबाइल आदि के दुष्प्रयोग से युवाओं के चारित्रिक पतन पर चिंता प्रकट करते हुए अभिभावकों से आग्रह किया कि वे भी इस मामले में सर्तकता बरतें।

गाँधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ता डॉ० एस०एन० सुब्बाराव ने अपराधमुक्त समाज बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि अब ऐसे समाज की रचना अत्यन्त जरूरी हो गई है, आपने कहा कि समाज अपने दायित्वों के प्रति जितना जिम्मेदार बनेगा उतना ही बोझ सरकार, पुलिस और न्यायालयों पर कम होगा।

श्री महागणपति एकादशी-प्रदोष-व्रत निर्णय पत्रम् का लोकार्पण सम्पन्न

काशी। सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं ज्योतिर्विद् डॉ० पवनकुमार शास्त्री द्वारा निर्मित एवं सम्पादित 'श्रीमहागणपतिएकादशी-प्रदोष-व्रत निर्णय पत्रम्' 2087 का लोकार्पण पंच-पांडव, शिवपुर में पुराणमर्मज्ञ पं० विश्वनाथ नारायण पालन्दे जी ने किया।

डॉ० रंजना जायसवाल के नये काव्य-संग्रह का विमोचन

गोरखपुर के प्रेस क्लब सभागार में डॉ० रंजना जायसवाल के नये काव्य संग्रह 'जब मैं स्त्री हूँ' का लोकार्पण प्रख्यात साहित्यकार प्रो० विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने किया।

'प्रेमचन्द्र ने वृत्ति का किया विरोध'

वाराणसी। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं से जाति नहीं वृत्ति का विरोध किया। उनके लेखन के सरोकार शारीरिक श्रम करने वालों और दलित की विस्तृत अवधारणा वाले वर्ग के वर्चस्व से जुड़े हैं। उनका समूचा लेखकीय संघर्ष औपनिवेशिकता और जातिगत वर्ण व्यवस्था के पिरामिड शास्त्र, शस्त्र, अर्थ और कर्म को लेकर है।

उक्त विचार सुपरिचित आलोचक और दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की पूर्व अध्यक्ष प्रो० निर्मला जैन ने व्यक्त किए। प्रो० जैन मुंशी प्रेमचंद स्मारक शोध अध्ययन केन्द्र की ओर से 'प्रेमचंद की कहानियाँ : दलित सरोकार' विषय पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भारत कला भवन में आयोजित व्याख्यान में बतौर मुख्य वक्ता बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद पराशक्तियों के आतंकवाद और धर्म की सनातनीय अवधारणा, सामाजिक विषमता के बीच शोषकों का उपहास और शोषितों को सजग करते हैं। उन्होंने प्रेमचंद की सद्गति, ठाकुर का कुआँ, दूध का दाम और कफन कहानियों का सन्दर्भ लेते हुए बदलते दलित चेतना के सरोकार का उल्लेख किया। अध्यक्षता कुलपति प्रो० डी०पी० सिंह ने की। इस अवसर पर कला संकाय प्रमुख प्रो० कमलशील, भारत कला भवन के निदेशक डॉ० डी०पी० शर्मा, प्रो० राधेश्याम दुबे, प्रो० के०पी० सिंह, प्रो० श्रद्धानन्द आदि मौजूद थे।

महाकवि भारती समारोह चेन्नई में आयोजित

चेन्नई। साहित्यानुशीलन समिति ने रविवार, 21 फरवरी 2010 को महाकवि सुब्रह्मण्य भारती समारोह आयोजित किया। अध्यक्षता हिन्दी और तमिल के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० एन० सुन्दरम ने की। हिन्दी के वयोवृद्ध प्रचारक और लेखक श्री एम० सुब्रह्मण्यम का स्वागत सुप्रतिष्ठित समाजसेवी और बिहार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री शोभाकान्तदासजी ने शाल ओढ़ाकर किया। प्रो० कामाक्षिराव स्मारक निधि एवं भाषणमाला के संयोजक डॉ० पी०के० बालसुब्रह्मण्यम ने भाषणमाला की योजना पर प्रकाश डाला। स्वागत वक्तव्य देते हुए समिति के अध्यक्ष डॉ० इन्दरराज बैद ने भारती-अनुशीलन की रूपरेखा प्रस्तुत की। नगर के विद्वान् समालोचकों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि भारती के समग्र साहित्य का हिन्दी में अनुशीलन और प्रकाशन समिति का ध्येय है। महाकवि भारती के विभिन्न रचनात्मक आयामों पर विद्वानों ने अपने-अपने अनुशीलन-प्रपत्र प्रस्तुत किये। जाने-माने साहित्यकार डॉ० बालशौरि रेड्डी ने भारती को श्रद्धा समर्पित करते हुए उस घटना का उल्लेख किया जब कवि भारतीय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से 1919 में मिले थे और उन्हें प्रभावित किया था।

आचार्य शुक्ल के सामाजिक सरोकार

वाराणसी। इस दौर में कोई तो है आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भूमिका को स्मरण करते हुए काफी सशक्त और संगठित हो चुके कारपोरेट जगत (पूँजीवाद) को खरी-खोटी सुना सके, उसके खिलाफ जनमानस को आन्दोलित और जागृत कर सके। ये बातें जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो० शिवकुमार मिश्र ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कही। वह गाँधी अध्ययन पीठ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, जनवादी लेखक संघ और भारत-ज्ञान विज्ञान समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे थे। विषय था ''आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के चिंतन के सामाजिक सरोकार।''

बतौर मुख्य अतिथि प्रो० बेनीमाधव शुक्ल ने कहा कि साहित्य वही श्रेष्ठ है जिसे जनमानस आत्मसात करे। कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्राध्यापक और आलोचक प्रो० शंभूनाथ ने कहा कि शुक्लजी कविता को उस चार्जर के रूप में आंकने वाले थे जो संवेदना की ठंडी होती बैटरी को चार्ज कर देती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के सामाजिक सरोकार विषय का प्रतिपादन करते हुए प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि शुक्लजी बड़े विज़न के बहुत बड़े आलोचक थे। कोई उनसे असहमत हो सकता है किन्तु उन्हें खारिज नहीं कर सकता।

जनवादी लेखक संघ, बलिया की गोष्ठी

जनवादी लेखक संघ के तत्वावधान में 'उदारीकरण के वर्तमान परिदृश्य में आम आदमी' शीर्षक विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। 'जलेस' बलिया के मन्त्री श्री अवध नारायण सिंह ने एक आलेख प्रस्तुत करते हुए उदारीकरण से आमजन के प्रति उत्पन्न हुए खतरों को रेखांकित किया। बीज वक्तव्य देते हुए श्री जैनेन्द्र पाण्डेय ने स्पष्ट किया कि आम-आदमी से अभिप्राय किसान, मेहनतकश मजदूर और पिछड़े आदिवासियों से है जो आज संकट में हैं। उदारीकरण वस्तुत: उधारीकरण है। सरकारी नीतियाँ भी पूँजीपतियों को ही लाभ पहुँचाने वाली हैं। डॉ० कृष्णकुमार सिंह ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में कहा कि आर्थिक लोकतन्त्र का अभाव राजनैतिक लोकतन्त्र को कमजोर कर देता है।

'जलेस' बलिया के अध्यक्ष डॉ० ब्रजभूषण श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि आर्थिक गुलामी ही वस्तुत: राजनैतिक गुलामी होती है। आर्थिक उदारीकरण के दौर में जनता को निर्मम बाजार के हवाले कर दिया गया है।

जटिल यथार्थ की सफल प्रस्तुति

''अपनी कहानियों में मिथिलेश्वर ने यथार्थ को उसकी जटिलता के साथ प्रस्तुत किया है। वैसे यथार्थ सरल होता भी नहीं। उसकी जटिलता में ही उसे जाना जा सकता है। इस मामले में ग्रामीण परिवेश के यथार्थवादी कहानीकार मिथिलेश्वर सफल रहे हैं।'' उक्त राय प्रख्यात आलोचक एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे०एन०यू०) नई दिल्ली के भारतीय भाषा विभाग के अध्यक्ष डॉ० चमन लाल ने जाहिर की। 'मिथिलेश्वर की पुरस्कृत-कहानियाँ' पुस्तक को लोकार्पित करते हुए वे अपने विचार व्यक्त कर रहे थे।

भारतीय बच्चों का बुद्धि-कौशल दुनिया में सर्वश्रेष्ठ : हिमांशु जोशी

हिन्दी भारत के जन-जन की भाषा है, स्पंदन की भाषा है, हृदय की भाषा है। यह केवल भाषा ही नहीं अपितु देश की संस्कृति व पहचान भी है। हिन्दी वैश्विक स्तर पर बहुत तीव्र गति से उभरती जा रही है। दुनिया के 157 विश्वविद्यालयों में हिन्दी की पढ़ाई हो रही है। विश्व के 42 देशों में तकरीबन तीन करोड़ लोग अप्रवासी भारतीय के रूप में हैं। वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को हिन्दी के माध्यम से जीवित रखे हैं। अभिमन्यु अनत मॉरीशस में हिन्दी में रचनाएँ रच रहे हैं। अमेरिका में 34 विश्वविद्यालयों में, रूस में 15-20 विश्वविद्यालयों में हिन्दी में अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। आज दुनिया में हिन्दी सभी भाषाओं से अधिक तीव्र गति से बढ़ रही है।

अमेरिका की सिलिकॉन वैली में एक तिहाई भारतीय ही हैं। 'नासा' में दस में से 6-7 वैज्ञानिक भारतीय हैं। ऑस्ट्रेलिया में भारतीयों पर हमले हो रहे हैं, वे नहीं चाहते कि शोषित लोग आगे बढ़ें। ब्रिटेन में आईक्यू टेस्ट हुआ था तो पहला आनेवाला भारतीय ही था। कुछ वर्षों के बाद इंग्लैण्ड में फिर आईक्यू टेस्ट होने पर भारतीय बच्चे ही प्रथम आए थे। इस देश के बच्चे दुनिया के बच्चों से अलग हैं क्योंकि इनमें निर्णय लेने की क्षमता बहुत बढ़ गई है। नेहरू ने कहा था कि देश का भविष्य देखना है तो बच्चों के भविष्य को देखें, बच्चों के चेहरे से देश का भविष्य प्रतिबिम्बित हो रहा है।

उक्त उद्‌बोधन सुप्रसिद्ध साहित्यकार व पत्रकार, हिमांशु जोशी (दिल्ली) ने व्यक्त किए। वे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा आयोजित 25 वें अखिल भारतीय दीक्षान्त समारोह में बतौर प्रमुख अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

नैतिकतावादी दृष्टिकोण था आचार्य शुक्ल का : दूधनाथ सिंह

लोक प्रवृत्ति की ध्वनि ही आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मूल्यांकन का मुख्य आधार है। हिन्दी साहित्य के इतिहास पर आचार्य शुक्ल ने अपनी पसंदगी और नापसंदगी स्पष्ट तौर पर जाहिर की है। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण शुद्धतावादी और नैतिकतावादी था। उक्त विचार वरिष्ठ कथाकार दूधनाथ सिंह ने महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय केन्द्र के 'सत्य प्रकाश मिश्र सभागार' में आयोजित गोष्ठी 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और आलोचना का वर्तमान' की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो० गोपेश्वर सिंह ने कहा कि आचार्य शुक्ल पर ब्राह्मणवादी और साम्प्रदायिक होने जैसे लगने वाले आरोपों को खारिज करते हुए उन पर सावधानी से अध्ययन करने की जरूरत है। आचार्य शुक्ल ने ही आलोचना को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया। वह साहित्य में मतवाद के सख्त खिलाफ थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं वरिष्ठ कथाकार विभूतिनारायण राय ने कहा कि आचार्य शुक्ल का हिन्दी साहित्य को योगदान महत्त्वपूर्ण है। उनके कार्यों को समग्रता में देखने की जरूरत है आचार्य शुक्ल की वैज्ञानिक दृष्टि को और विकसित करने की आवश्यकता है।

विश्व पंचायत में हिन्दी को मिलेगी प्रतिष्ठा

'हिन्दी राष्ट्रभाषा है'—का उल्लेख संविधान में नहीं है। 'भारत एक राष्ट्र है'—इसका भी उल्लेख संविधान में नहीं है। संविधान में जनमत की माँग के अनुरूप संशोधन होता रहा है। जनमत सर्वोपरि होता है। मनीषियों एवं देश की जनता द्वारा स्वीकृत भारत में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा है। जयंती प्रसाद नौटियाल ने भाषा शोध अध्ययन 2005 में स्पष्ट किया है कि विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या एक अरब, दो करोड़, पच्चीस लाख, दस हजार तीन सौ बावन है जबकि चीनी जानने वालों की संख्या नब्बे करोड़ चार लाख छह हजार, छह सौ पन्द्रह है। भारत में ही इसे बोलने व समझने वाले अस्सी करोड़, पचास लाख, इकहत्तर हजार चार सौ सरसठ लोग हैं। इन्होंने शोध अध्ययन से यह प्रमाणित कर दिया है कि विश्व में सर्वाधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा हिन्दी ही है न कि चीनी। इसलिए विश्व की पंचायत में सर्वाधिक लोगों (जनमत) की भाषा हिन्दी को अवश्य ही प्रतिष्ठा मिलेगी।

भारतीय अस्मिता, परम्परा व इतिहास को खंगालने की प्रेरणा देते राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रधानमन्त्री प्रा० अनन्तराम त्रिपाठी के ये शब्द अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली व राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 34वें अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर के उन बौद्धिक अनुष्ठानों के उद्देश्य की सटीक व्याख्या भी करते हैं। संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने हेतु जो उन्होंने तर्क प्रस्तुत किए इस पर देशभर से आए हिन्दी प्रेमियों से खचाखच भरा सभागार करतल ध्वनि से गूँज उठा।

हिन्दी विश्वविद्यालय में 'कथा समय' में 'हिन्दी साहित्य के दो दशकों की यात्रा' पर हुआ गम्भीर विमर्श

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'कथा समय' का आयोजन विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ की ओर से किया गया। 'कथा समय' के प्रथम अकादमिक सत्र में 'हिन्दी कहानी के दो दशकों की यात्रा' द्वितीय सत्र में 'हिन्दी के उपन्यास के दो दशकों की यात्रा', तृतीय सत्र में 'हिन्दी कथा आलोचना के दो दशकों की यात्रा' पर हिन्दी साहित्य के तीन पीढ़ियों के उपन्यासकार, कथाकार व आलोचकों ने विचार-विमर्श किया। 'कथा समय' के उद्‌घाटन समारोह में बीज वक्तव्य देते हुए सुप्रसिद्ध कथाकार और नाटककार असगर वजाहत ने कहा कि आज अभिव्यक्ति के माध्यम के लिए अखबारों में स्थान नहीं मिल रहा है, टीवी चैनलों में भी नहीं है, राजनीति में भी जगह नहीं मिल रही है। आज भी अभिव्यक्ति का आधार कथा साहित्य है। विचार को किनारे रखनेवाली कहानी रचनाएँ आ रही हैं जबकि नई रचनाओं से आन्दोलन को जो ऊर्जा मिलनी चाहिए थी वह नहीं प्राप्त हो रही है।

उद्‌घाटन भाषण देते हुए से०रा० यात्री ने कहा कि रचनाकार अपने कथ्य के साथ अपने शिल्प में भी एक विशेष किस्म का अलगाव अथवा भिन्नता प्रदर्शित करते हैं। कथ्य के साथ कथन का स्वरूप भी रचनाकार के व्यक्तित्व को रेखांकित करते हैं। आज जो परिवर्तन हो रहा है इसमें हमें वैचारिक व संवेदना की गहराई को तलाशने की जरूरत है। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि समाज का आईना साहित्य का आन्दोलन विहीन होना चिंतनीय है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के दौरान पूरा साहित्य आन्दोलनों के झंझावतों से जूझ रहा था। लेकिन आज हम कैसे विमुख हो रहे हैं। इस पर हमें सोचना होगा। विषय प्रवर्तन करते हुए साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो० सूरज पालीवाल ने कहा कि हिन्दी का कथ्य और उसके लोक दर्शन की परिकल्पना केवल इसलिए नहीं की गई है कि केवल कहानियों पर चर्चा की जाए, बल्कि इतिहास के जिस मोड़ पर हम खड़े हैं वह कितना खतरनाक स्थिति में है इसी बात को सारगर्भित करने के लिए 'कथा समय' का आयोजन किया गया है।

'हिन्दी कथा साहित्य के दो दशक' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार प्रो० गंगाप्रसाद विमल ने कहा कि पिछले दो दशक पिछली शताब्दी के अन्तिम दशक के निष्कर्ष और नये शताब्दी के प्रवेश दशक के निष्कर्ष का युग्म है। इस सत्र में कथाकार संजीव, वंदनाराग, डॉ० महुआ माजी, तेजेन्द्र शर्मा, वीरेन्द्र मोहन ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

'हिन्दी उपन्यास के दो दशक' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार भगवान दास मोरवाल ने कहा कि नई पीढ़ी लेखन को कैरियर के रूप में ले रही है। आज के दौर में कथा लेखन मिशन के तौर पर नहीं बल्कि व्यावसायिकता को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। इस सत्र में वीरेन्द्र यादव, नवीन चन्द्र लोहानी, विभूतिनारायण राय ने उपन्यास के दो दशकों पर विचार रखे।

'हिन्दी कथा आलोचना के दो दशक' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो० असगर वजाहत ने कहा कि आलोचना रचना, समय और पाठक के बीच में रहती है, एक-दूसरे से पारस्परिक रिश्ता बनाती है पर आज वे काम हमारी आलोचना नहीं कर रही है। आलोचना का उद्देश्य रचना की श्रेष्ठता व पूर्णता को स्थापित करना तथा पाठक व रचना के बीच पुल बनाना है। इस विषय पर प्रो० सूरज पालीवाल, प्रो० राकेश मिश्र, वंदना राग, महेन्द्र और एस०आर० हरनोट ने भागीदारी की।

'कथा समय' के समापन सत्र में मुख्य वक्ता

के रूप में साहित्यकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने कहा कि ये बात सामने आ रही है कि आज के लेखक आन्दोलन से मुक्त हो गए हैं। सारे आन्दोलन विचार की उपज से हुए हैं। आन्दोलन से मुक्त होने का अर्थ है विचारों से मुक्त होना। विचार आन्दोलित करता है, तहलका मचाता है। रचना में आन्दोलन खत्म हो गए, लेखक संगठन निष्क्रिय हो गये हैं।

समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति विभूतिनारायण राय ने कहा कि प्रेमचंद ने वर्णव्यवस्था, सूदखोरी, शोषणकारी महाजनी सभ्यता जैसी समस्याओं पर लिखा, ये समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। इन समस्याओं पर आज साहित्यकारों को ध्यान देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के अन्त में गाँधी हिल पर कथा पाठ का आयोजन एवं 'जिन लाहौर नईं देख्या' नाटक का मंचन किया गया।

दस पुस्तकों का लोकार्पण सम्पन्न

22 जनवरी को दिल्ली के मालवीय स्मृति भवन में आयोजित एक समारोह में प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की दस पुस्तकों का लोकार्पण कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी और वरिष्ठ साहित्यकार कन्हैयालाल नंदन ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने की।

'दिल्ली शहर-दर-शहर' का विमोचन सम्पन्न

8 जनवरी को दिल्ली में प्रसिद्ध आलोचक डॉ० निर्मला जैन की पुस्तक 'दिल्ली शहर-दर-शहर' का लोकार्पण जानी-मानी साहित्यकार श्रीमती कृष्णा सोबती की अध्यक्षता में साहित्य अकादेमी सभागार में आयोजित समारोह में प्रसिद्ध कवि श्री कुँवर नारायण किया।

प्रो० अशोक चक्रधर की पुस्तकों का लोकार्पण

विगत दिनों प्रसिद्ध व्यंग्यकार प्रो० अशोक चक्रधर के 60वें जन्मदिन के अवसर पर उनकी नई पुस्तक 'कुछ कर ना चंपू' और 'चंपू कोई बयान नहीं देगा' का लोकार्पण दिल्ली की मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित ने किया। कार्यक्रम के मुख्य प्रवक्ता प्रो० सुधीर पचौरी थे।

'विश्व हिन्दी पत्रिका' लोकार्पित

10 जनवरी को मॉरीशस में इन्दिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के सभागार में विश्व हिन्दी सचिवालय, शिक्षा, संस्कृतिक एवं मानव संसाधन मन्त्रालय, भारतीय उच्चायोग, इन्दिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र तथा हिन्दी संगठन के सामूहिक सहयोग से विश्व हिन्दी दिवस 2010 मनाया गया, जिसमें मुख्य अतिथि हंगरी के भारोपीय शिक्षा विभाग की डॉ० मारिया नेज्यैशी थीं। इस अवसर पर विश्व हिन्दी सचिवालय की महासचिव डॉ० विनोद बाला अरुण द्वारा सम्पादित तथा विश्व हिन्दी सचिवालय द्वारा प्रकाशित 'विश्व हिन्दी पत्रिका' का लोकार्पण मॉरीशस के राष्ट्रपति माननीय सर अनिरुद्ध जगन्नाथ के कर-कमलों द्वारा हुआ।

'बाँसुरी सम्राट् हरिप्रसाद चौरसिया' का लोकार्पण

15 फरवरी को नई दिल्ली के आई०आई०टी० स्थित सभागार में विश्वविख्यात बाँसुरीवादक पं० हरिप्रसाद चौरसिया की श्री सुरजीत सिंह द्वारा लिखित अधिकृत जीवनी 'बाँसुरी सम्राट् हरिप्रसाद चौरसिया' का लोकार्पण सुप्रसिद्ध कथा-साहित्य मर्मज्ञ तथा भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। सभागार में पण्डितजी के सुमधुर बाँसुरीवादन ने उपस्थित छात्रों-अध्यापकों व श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

एक साथ 91 पुस्तकों का लोकार्पण

7 फरवरी को बच्चों की पुस्तकों के अग्रणी प्रकाशक एस० चाँद एंड कम्पनी द्वारा प्रकाशित 91 पुस्तकों के लोकार्पण में पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी, प्रो० वेद प्रकाश, डॉ० किरण वालिया तथा श्री हिमांशु गुप्ता ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर बड़ी संख्या में शिक्षाविद्, शिक्षक, प्राचार्य, वैज्ञानिक और प्रकाशक उपस्थित थे। विश्व पुस्तक मेले में एक साथ 91 पुस्तकों का लोकार्पण अब एक रिकॉर्ड बन गया है।

डॉ० अनसूया के शोध ग्रन्थ का विमोचन

विगत दिनों महासमुंद में साहित्यकार डॉ० अनसूया अग्रवाल के शोध ग्रन्थ 'हिन्दी लोक साहित्यशास्त्र : सिद्धान्त और विकास' का विमोचन रायपुर में पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजनपीठ एवं छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य परिषद् द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'साहित्य शिरोमणि डॉ० पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी स्मृति एक दिवसीय वैचारिक अनुष्ठान' विषयक विराट् साहित्यिक समारोह में हुआ। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ प्रदेश के मुख्यमन्त्री डॉ० रमन सिंह ने कृति का विमोचन किया।

लेखक शिविर एवं भाषा, शिक्षा व संस्कृति पर संगोष्ठी

14-15-16 जनवरी को वाराणसी में पं० विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिवस पर उनकी स्मृति में विद्याश्री न्यास ने उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के सहयोग से कन्हैयालाल गुप्ता मोतीलाल स्मृति भवन (रथयात्रा) में भारतीय लेखक शिविर एवं 'भाषा, शिक्षा और संस्कृति' पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो० रमेशचन्द्र शाह थे तथा अध्यक्षता पं० वेणी माधव शुक्ल ने की। अनेकानेक विद्वानों ने पण्डितजी की स्मृतियों से जुड़े अपने रोचक संस्मरण सुनाए।

14 जनवरी को 'शिक्षा की भारतीय अवधारणा : परम्परा और प्रयोग' पर श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी के संचालन में प्रथम सत्र सम्पन्न हुआ। अध्यक्षीय सम्बोधन डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल ने दिया। 15 जनवरी को 'भारतीय भाषाएँ एवं बोलियाँ' विषय पर श्री माणिक गोविंद चतुर्वेदी की अध्यक्षता में परिचर्चा हुई, जिसमें प्रमुख वक्ता डॉ० अरुणेश नीरन थे। 'भारत में हिन्दी' विषय पर आयोजित चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा संचालन डॉ० राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने किया। इस सत्र में भाग लेने वाले विद्वानों ने देश के विभिन्न प्रान्तों में हिन्दी की स्थिति पर प्रकाश डाला। पंचम सत्र में 'भारतीय संस्कृति : इतिहास और भविष्य' विषय पर परिचर्चा हुई, जिसकी अध्यक्षता श्री रामाश्रय राय ने की तथा संचालन प्रो० बलराज पाण्डेय ने किया। सत्र के प्रमुख वक्ता प्रो० रमेशचन्द्र शाह थे। 16 जनवरी को छठे सत्र में 'भाषा, शिक्षा व संस्कृति' पर खुला अधिवेशन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत 14 जनवरी को श्री हरिराम द्विवेदी के संयोजन में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता वयोवृद्ध कवि श्री रामनवल मिश्र ने की तथा संचालन श्री कृष्ण तिवारी ने किया। 15 जनवरी को पण्डित विद्यानिवास मिश्र के रेडियो रूपक 'गार्गी वाचक्नवी' का सफल मंचन श्री एन०के० आचार्य की टीम द्वारा किया गया। इस आयोजन के अन्तर्गत छात्रों एवं अन्य लेखकों की निबन्ध एवं काव्य प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। प्रत्येक सत्र के विषय पर आधारित निबन्धों पर दो-दो पुरस्कार तथा काव्य प्रतियोगिता के लिए तीन पुरस्कार प्रदान किए गए।

अन्त में समापन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि प्रो० अवधराम थे तथा अध्यक्षता की न्यायमूर्ति श्री गणेश दत्त दूबे ने। इसमें वयोवृद्ध कवि श्री रामनवल मिश्र को 'लोक कवि सम्मान' प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष महोदय ने अंगवस्त्रम्, प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति-चिह्न के साथ माल्यार्पण करके सम्मानित किया। स्मृति सम्मान के अन्तर्गत 21000 रु० भी प्रदान किए गए। सत्र का कुशल संचालन डॉ० अरुणेश नीरन ने किया तथा न्यास के सचिव डॉ० दयानिधि मिश्र ने आभार प्रकट किया।

पुस्तक परिचय

प्राचीन भारत

लेखक

डॉ० राजबली पाण्डेय

सम्पादन एवं परिवर्धन :

डॉ० विभा उपाध्याय

पूर्णतया परिवर्धित संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 572 + 40 (चित्र)

सजि. : रु० 450.00 ISBN : 978-81-7124-719-6
अजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-720-2
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्राचीन भारत का इतिहास मानव इतिहास का एक बड़ा लम्बा अध्याय है। भारतीयों ने विस्तृत भूभाग पर सहस्राब्दियों तक जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रयोग और उससे अनुभव प्राप्त किया। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसमें उनकी देन न हो। अत: उनका इतिहास मनोरंजक और शिक्षाप्रद है। गत शतियों में इस विषय पर विदेशी और देशी विद्वानों ने लेखनी उठायी है। सबकी विशेषतायें हैं, परन्तु सबकी सीमायें और कुंठायें भी हैं। इससे भारत के प्राचीन इतिहास को समझने में अनेक समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। डॉ० पाण्डेय ने अपने तीस वर्ष के भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व तथा साहित्य के अध्ययन और मनन के आधार पर इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। इसमें प्राचीन भारत के सम्बन्ध में सुव्यवस्थित ज्ञान तो मिलेगा ही, साथ ही साथ अधकचरे अध्ययन से उत्पन्न बहुत-सी भ्रान्तियों का निराकरण भी होगा। भारतीय इतिहास की भौगोलिक परिस्थितियों से लेकर प्राचीन काल में उसके उदय, विकास, उत्थान तथा ह्रास का धारावाहिक वर्णन इसमें हुआ है। तथ्यों की प्रामाणिकता का निर्वाह करते हुए इसका प्रत्येक अध्याय उद्बोधक और व्यञ्जक है। इसमें ऐतिहासिक घटनाओं और व्यक्तियों को ठीक संदर्भ में रखकर उनको चित्रित करने तथा समझाने का प्रयत्न किया गया है। प्राचीन भारत के इतिहास पर कतिपय पुस्तकों के रहते हुए भी यह एक अभिनव प्रयास और इतिहास-लेखन की दिशा में नया चरण है। इसमें राजनीतिक इतिहास के साथ जीवन के सांस्कृतिक पक्षों का समुचित विवेचन किया गया है।

मूल पुस्तक में दी गई प्रस्तावना के इस उद्धरण ''नयी सामग्री का उपलब्ध होना, पुरानी सामग्री का नया परीक्षण, इतिहास के सम्बन्ध में नया दृष्टिकोण'' ने नए संस्करण के प्रस्तुतिकरण का अवसर प्रदान किया।

1960 ईस्वी से लेकर आज तक पुरातत्त्व की नई शोधों ने भारतीय प्रागैतिहास पर बहुत प्रकाश डाला है। इनके प्रकाश में ग्रन्थ में प्रागैतिहास के अध्याय का पुन: लेखन किया गया है। साथ-साथ इतिहास के विभिन्न काल-क्रमों की पुरातात्त्विक संस्कृति पर भी प्रकाश डाला गया है। भारतीय इतिहास की कुछ ज्वलंत समस्याओं पर भी नई शोधों के प्रकाश में नया लेखन प्रस्तुत है। उदाहरण के लिए कनिष्क की तिथि, भगवान् बुद्ध के निर्वाण की तिथि, मेहरौली के 'चन्द्र' की पहचान, गणराज्यों के पुनर्गठन का इतिहास, त्रिराज्यीय संघर्ष आदि। परिशिष्ट में साक्ष्यों पर कुछ विस्तार से चर्चा की गई है।

आधुनिक विज्ञापन : कला एवं व्यवहार

लेखक

डॉ० अर्जुन तिवारी

प्रथम संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 252

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-715-8
अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-716-5
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मीडिया की सभी विधाओं पर अंग्रेजी में पर्याप्त पुस्तकें हैं। उन्हीं पुस्तकों के अनूदित संस्करण से हिन्दी-जगत के पत्रकार कुछ सीखने का अधूरा प्रयास करते हैं। अपनी मातृभाषा में मौलिक ग्रन्थों का अभाव हर पत्रकार को खटकता रहा है। आज मैं नि:संकोच भाव से इस तथ्य को प्रकट करता हूँ कि पत्रकारिता के यशस्वी प्राध्यापक डॉ० अर्जुन तिवारी ने अपनी बहुमूल्य, प्रामाणिक 25 पुस्तकों द्वारा हिन्दी पत्रकारिता-जगत् को समृद्ध किया है जिनसे मीडिया के मर्मज्ञों की जिज्ञासा शांत होती है। डॉ० तिवारी की अद्यतन कृति 'आधुनिक विज्ञापन : कला एवं व्यवहार' को पढ़ते समय मुझे पत्रकारिता की एक अद्भुत परिभाषा मिली—

''चहकते, चमचमाते, दिलपकड़ विज्ञापनों के बीच एक दबी हुई सूचना ही पत्रकारिता है जिसमें लोक-सेवा के बहाने व्यवसाय-साधना की जाती है।''

इस एक वाक्य में ही डॉ० तिवारी ने पत्रकारिता और विज्ञापन के मूल स्वरूप को सुस्पष्ट कर दिया है। 'विज्ञापन-शासित मीडिया', 'विज्ञापन की अवधारणा', 'विज्ञापन : पब्लिक वेलफेयर का प्रमोटर', 'विज्ञापन, विपणन, प्रचार एवं जनसम्पर्क', 'मार्केटिंग', 'विज्ञापन के मॉडल', 'कॉर्पोरेट विज्ञापन', 'ब्राण्ड', 'ब्राण्ड एम्बेसडर', 'बजट', 'विज्ञापन का इतिहास', 'विज्ञापन और आधी दुनिया', 'विज्ञापन की आचार संहिता' जैसे 35 अध्यायों में डॉ० तिवारी ने विज्ञापन को एक मुकम्मल स्वरूप प्रदान किया है।

प्रिण्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में विज्ञापनों के भारतीय आकार-प्रकार की सोदाहरण प्रस्तुति इस ग्रन्थ की अपनी विशिष्टता है। शुष्क तथ्यों को साहित्यिक दृष्टि से रोचक बनाकर विज्ञापन कला के व्यावहारिक पक्षों के उद्घाटन में लेखक को सफलता मिली है। विज्ञापन एजेंसियों, विज्ञापकों, छात्रों एवं प्राध्यापकों के लिए यह ग्रन्थ संग्रहणीय होगा। **—प्रोफेसर जे०एस० यादव**

पूर्व निदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली
चेयरमैन, इण्टरनेशनल मीडिया इंस्टीच्यूट, नई दिल्ली

अमरशहीद गणेश शंकर विद्यार्थी

सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रथम संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 316

सजि. : रु० 275.00 ISBN : 978-81-89498-38-2
अजि. : रु० 160.00 ISBN : 978-81-89498-39-9
प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

गणेशशंकर विद्यार्थी का दर्शन करने का सौभाग्य तो हमें नहीं मिला। मेरे जन्म से तीन वर्ष बाद ही वे शहीद हो गये। वे साम्प्रदायिकता की बलिवेदी पर 25-3-1931 को शहीद हुए।

मुझे उनके दो समकालीन महापुरुषों के सान्निध्य से गणेशशंकर विद्यार्थी के जीवन और कृतित्व का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनमें से एक हैं श्री दशरथप्रसाद द्विवेदी जो गोरखपुर में मेरे निवास के सामने रहते थे। गणेशशंकरजी से आयु में वे एक वर्ष छोटे थे। दशरथजी थानेदारी के प्रशिक्षण हेतु मुरादाबाद जा रहे थे कि लखनऊ में उन्होंने गणेशशंकरजी का ओजस्वी भाषण सुना और उनकी वक्तृता से प्रभावित होकर गणेशशंकरजी की शरण में चले गये और वहाँ 'प्रताप' के सहायक सम्पादक बने।

दूसरे महापुरुष जिनसे मुझे गणेशशंकरजी के सम्बन्ध में और गहरी जानकारी मिली वह थे एक भारतीय आत्मा पं० माखनलाल चतुर्वेदी। माखनलालजी का गणेशशंकरजी से बहुत गहरा सम्बन्ध था। पं० माखनलालजी, गणेशशंकरजी के परिवार के एक सदस्य हो गये थे। अपनी लम्बी बीमारी के दिनों में पं० माखनलालजी कई वर्षों तक कानपुर में गणेशशंकरजी के यहाँ रहे।

विद्यार्थीजी ने अपनी 41 वर्ष की अल्पायु में पाँच बार जेल-यात्रा की और 25 मार्च 1931 को

साम्प्रदायिक दंगा, जो अंग्रेजों द्वारा आयोजित था, उसमें शहीद हो गये। उस समय के पुलिस हवलदार सोहराब खाँ ने सारी दास्तान बताई है।

अपने राजनीतिक जीवन में गणेशजी ने गाँव-गाँव का दौरा किया। उस समय साइकिल ही एकमात्र साधन था। किन्तु गणेशशंकरजी स्वयं साइकिल नहीं चलाते थे, लोग उन्हें साइकिल पर बैठा कर बीस-बीस मील तक ले जाते थे। वह जर्जर काया प्रतिक्षण देश के लिए समर्पित होती रहती थी। जब वे जेल जाते तो लौट कर हड्डियों का ढाँचा-मात्र होता था।

गणेशशंकरजी का स्मरण उस समर्पणमयी पत्रकारिता का स्मरण है जब पत्रकारिता, देशभक्ति व्यवसाय नहीं थी, एक मिशन, एक लक्ष्य था। पत्रकार की कलम तलवार से भी कहीं अधिक तेज और गहरा प्रहार करती थी। सत्ता की सारी शक्ति उस प्रहार से तिलमिला उठती थी। हथकड़ियाँ, बेड़ियाँ और जेल—यही सत्ता की अभिव्यक्ति थी।

आज देश को उस बलिदानी की याद करनी चाहिए जिसने साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए बलिदान दिया। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

सृष्टि-तत्त्व तथा राजा एवं प्रजा

लेखक :
भागर्व शिवरामकिंकर योगत्रयानन्द
अनुवादक :
एस०एन० खण्डेलवाल

पृष्ठ : 112 प्रथम संस्करण : 2010 ई०

अजि. : रु० 60.00 **ISBN : 978-81-7124-729-5**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

राजा तथा प्रजा का शारीरयन्त्र से तथा जगत् सृष्टि उपक्रम से सामञ्जस्य का अलौकिक विवरण परमपूज्य लेखक ने प्रस्तुत करके अपनी समन्वीय दृष्टि का उदाहरण प्रस्तुत किया है। विज्ञान, व्याकरण, सांख्य, वेद आदि का उद्धरण देकर इस ग्रन्थ में एक अभिनव दिशा की ओर संकेत दिया गया है, जिसके सम्बन्ध में कोई किसी भ्रम अथवा प्रश्नचिह्न के लिए कोई अवकाश ही नहीं रह जाता। यह धर्ममेघ समाधि का प्रतिफल है। जहाँ 'धर्मान् मेहति वर्षति' धर्म की ही वर्षा होती है, परन्तु यहाँ जिस धर्म का आश्रयण है, वह लौकिक भाषा से तथा लौकिक रूप से प्रतिच्छवित हो रहा भेदकारक धर्म नहीं है। इस धर्मदृष्टि का आश्रय लेने से राजा तथा प्रजा का जो अभिनव सम्बन्ध, शाश्वत सामञ्जस्य प्रतिफलित होता है, वही शासक तथा शासित का यथार्थ रूप है।

यह ग्रन्थ क्षुद्र कलेवर होने पर भी गहन अर्थ स्वयं में सँजोये हुए है। इसके वक्ता तो अविभ्रान्त रूप से ज्ञाननिधि थे, इसका पाठक (श्रोता) भी ज्ञाननिधि होना चाहिए। 'श्रोता वक्ता ज्ञाननिधि कथा राम कर गूढ़' तभी इस मणिकांचन संयोग से इसके गूढ़ गम्भीर अर्थ का उद्घाटन हो सकेगा। जो जितनी गहरी डुबकी लगा सकेगा, वह उतने ही अमूल्य रत्नों का आहरण कर सकेगा, यह सत्य है।

साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग

चतुर्थ भाग (पृष्ठ : 108)
लेखक : **महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज**
अनुवादक :
एस०एन० खण्डेलवाल
प्रथम संस्करण : 2010 ई०

अजि. : रु० 40.00 **ISBN : 978-81-7124-763-3**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग के चतुर्थ भाग का भाषानुवाद प्रस्तुत है। यह पहली बार प्रकाशित हो रहा है। इसके पूर्व इसके एक-दो व तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रातः-स्मरणीय ग्रन्थकार के जीवन में यह अलौकिकता रही है कि छात्रावस्था के प्रारम्भिक काल से ही उन्हें प्रकृत महापुरुषों के सम्पर्क का सुअवसर प्राप्त होता रहा है, जिसका संस्कार ग्रन्थकार को परम निःश्रेयस के पथ पर अग्रसर होते रहने की प्रेरणा देता रहा है। यह सौभाग्य का विषय है कि इस ग्रन्थ के माध्यम से हम भी उन महापुरुषों की शिक्षा तथा उनके पथ-प्रदर्शन का लाभ उठा सकते हैं। ग्रन्थकार ने अकपट भाव से उन महापुरुषों के पद-प्रान्त में उपस्थित होकर धैर्य के साथ उनसे प्राप्त ज्ञान को लिपिबद्ध करके जिज्ञासु वर्ग का परम उपकार किया है। जो सम्पदा उन्होंने उन महापुरुषों के चरणों में बैठकर अर्जित की थी, मानो इस ग्रन्थ के माध्यम से उन्होंने अकृपण भाव से उस सम्पदा को जनसाधारण में बाँट दिया है। यही परमदान है, जो अभूतपूर्व है।

दादी का पंचतंत्र

बाल कहानियाँ
श्रीप्रसाद
प्रथम संस्करण : 2010 ई०
पृष्ठ : 68
अजि. : रु० 40.00
ISBN : 978-81-89498-37-5

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

अनुक्रम : एक था बंदर, जैसे को तैसा, टिट्टिट् टिटहरी, सियार ऐसा था, गीदड़ और कौवा, ढोल की पोल, मित्रता, राजा डर गया, उल्लू और कौवा, बहेलिया, ज्ञानी।

'हंस' आत्मकथा अंक

सम्पादक : **प्रेमचंद**
प्रथम संस्करण : 1932 ई०
प्रथम आवृत्ति : 2008 ई०
द्वितीय आवृत्ति : 2010 ई०
पृष्ठ : 208

अजि. : रु० 200.00 **ISBN : 978-81-7124-631-1**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अतीत का पुनरवलोकन
'हंस' का आत्मकथा अंक

अतीत को स्मरण करना मनुष्य का स्वभाव है। समय आने पर साहित्यकार अन्यों की गाथा लिखने के साथ-साथ अपने विगत का भी स्मरण करता है। 'हंस' के यशस्वी संस्थापक और सम्पादक मुंशी प्रेमचंद ने जब 1932 ई० में अपने इस मासिक पत्र का 'आत्मकथा अंक' प्रकाशित किया था तब विभिन्न लेखकों एवं रचनाकारों से उनका संक्षिप्त आत्मवृत्त तथा रोचक संस्मरण जुटाने के लिए कितना श्रम किया होगा, यह जानना कठिन नहीं है। आज हिन्दी के कितने वरिष्ठ प्राध्यापक तथा उच्च श्रेणियों के छात्र हैं जो उन रायबहादुर सीताराम बी०ए० के बारे में जानते हैं जिन्होंने शेक्सपियर के नाटकों को हिन्दी में लाने का श्रम किया था। काशी के नागरी प्रचारिणी सभा के तीन संस्थापकों (बाबू श्यामसुन्दर दास तथा ठाकुर शिवकुमार सिंह के साथ) में से एक पं० रामनारायण मिश्र के बारे में हम कितनी जानकारी रखते हैं? शिवपूजन सहाय की सम्पादनकला तथा ग्रन्थ-संशोधन-क्षमता की जानकारी भी कितनों को है? इस 'आत्मकथा अंक' में प्रेमचंद ने अपने समानधर्मा कथा-लेखक त्रयी के अन्य दो कथाकारों पं० सुदर्शन तथा पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' के आत्मवृत्तान्त तो दिये ही हैं, हिन्दी में जासूसी उपन्यासों के प्रवर्तक गोपालराम गहमरी तथा अपने से बाद के मनोविज्ञान-आश्रित उपन्यासों के लेखक जैनेन्द्र के आत्मकथानकों को भी स्थान दिया है। हास्य रस के उस युग के प्रगल्भ लेखक अन्नपूर्णानन्द का अपनी परीक्षा का संस्मरण कम रोचक नहीं है।

आत्मकथा अंक के प्रारम्भ में जयशंकर प्रसाद की पद्यात्मक आत्मकथा छायावादी शैली में दी गई है। साहित्य के इतिहास के अध्येताओं को ज्ञात है कि उस युग में हंस, सुधा, माधुरी, सरस्वती आदि पत्रों में गद्य काव्य पर्याप्त संख्या में लिखे जाते थे। पौन शती पहले छपे इस दुर्लभ स्मृति-भण्डार का पुनः उपलब्ध होना सुखद अनुभूति है। इसकी उपादेयता, लोकप्रियता असंदिग्ध है। *अत्यन्त अल्प समय में इस पुस्तक की द्वितीय आवृत्ति इसकी महत्ता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।*

आगामी प्रकाशन

रहस्यमय सिद्धभूमि तथा सूर्य विज्ञान

मूल उपदेष्टा

महामहोपाध्याय

पद्मविभूषण डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

अनुवाद एवं व्याख्या

एस०एन० खण्डेलवाल

सूर्यविज्ञान सम्बन्धित इस ग्रन्थ के विषय में सुविज्ञ पाठकगण से यह कहना है कि इस ग्रन्थ को पढ़कर कोई भी त्रिकाल में सूर्यविज्ञान में निष्णात नहीं हो सकता। इसे पढ़कर योगिराजाधिराज विशुद्धानन्द परमहंसदेव के समान सूर्यविज्ञान जनित सृष्टि चमत्कार करने में भी सफल नहीं हो सकता, क्योंकि यह विज्ञान दीर्घकालीन अध्यवसाय, नियमानुवर्तिता तथा गुरुकृपा से ही प्राप्त हो सकता है। यह प्रायोगिक विज्ञान है। मात्र सैद्धान्तिक नहीं है। जबकि यह ग्रन्थ इसके सैद्धान्तिक पक्ष पर मात्र क्षीण प्रकाश प्रक्षेपण है।

तब इसे लिखने का तथा संयोजित करने का क्या प्रयोजन? यह ग्रन्थ पढ़कर अथवा कण्ठस्थ करके भी सूर्यविज्ञान आयन्त नहीं हो सकता, तब इसे भाषाबद्ध करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना तथा पाठकों द्वारा इसे पढ़कर केवल इसके सम्बन्ध में आलोचना-प्रत्यालोचना करना व्यर्थ श्रम मात्र नहीं तो और क्या है? आपात् दृष्टि से ऐसा प्रतीत होना सम्भव है। परन्तु वास्तविकता कुछ और है। हो सकता है कि इसे पढ़कर किसी भाग्यशाली के मन-मस्तिष्क में इस विज्ञान को प्राप्त करने की प्रकृत इच्छा का उदय हो। उसके अन्दर इसे प्राप्त करने की उद्दाम लालसा उत्पन्न हो। ऐसी स्थिति में नियम यह है कि जिसकी जिस विषय के प्रति यथार्थ तथा सात्विक इच्छा होती है, जो इस प्रकार की सद्इच्छा के आकर्षण तथा अतिरेक के कारण अपने भौतिक (अहं) अस्तित्व के विलोप के साथ-साथ सर्वतोभावेन सर्वेच्छामयी विज्ञाननिधि महाशक्ति के अंक में जा पड़ता है, उसकी वह इच्छा पूर्ण होकर रहती है।

अत: इस ग्रन्थ के संयोजन का मात्र उद्देश्य है ऐसी प्रेरणा देना तथा इच्छा का उद्बोधन करना, जिससे इस लोकोत्तर विज्ञान के प्रति रुचि का जागरण हो सके। प्रत्येक शास्त्र का यही आशय है। उस-उस शास्त्र का अवगाहन करके व्यक्ति उसमें वर्णित तत्त्व के प्रति जाग्रत तथा आकांक्षित होकर तद्नुरूप कर्म में व्याप्त हो जाता है। यही इस ग्रन्थ का प्रयोजन है।

इस ग्रन्थ में जो कुछ अंकित है उसमें मेरी कल्पना का लेशमात्र नहीं है। गुरुमुख से सुने गये, प्रामाणिक ग्रन्थों में वर्णित किये गये, तथा प्रत्यक्ष द्रष्टागण द्वारा देखकर पुस्तकाकृति में प्रकाशित किये गये तथ्यों पर यह ग्रन्थ आधारित है। इसमें योगिराजाधिराज विशुद्धानन्ददेव के शिष्य श्री अक्षयकुमार दत्त गुप्त, महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज महोदय के वचनों का मुख्यत: समावेश है। इनमें प्रत्येक की उपलब्धि को उनके नाम से मुद्रित किया गया जो मूल से हिन्दी भाषा में मेरे द्वारा अनूदित है। कहीं-कहीं जहाँ इन महापुरुषों द्वारा वर्णित अंश सूत्र रूप में तथा क्लिष्ट अथवा संकेत रूप में है, उनकी स्मति के अनुसार व्याख्या भी प्रस्तुत करने का साहस कर रहा हूँ। पुस्तक के प्रारम्भ में ज्ञानगंज सिद्धभूमि का भी यथासाध्य वर्णन अंकित है।

बाबू गुलाब राय के विविध निबन्ध

सम्पादक

विनोदशंकर गुप्त

प्रस्तुत पुस्तक 'बाबू गुलाबराय के विविध निबन्ध' में 'मेरे बुढ़ापे के पुरुषार्थ' शीर्षक के अन्तर्गत गुलाबरायजी कहते हैं—''न्यायार्जित धन को मैं एक दैवी वरदान समझता हूँ।'' यह उनके निष्कलुष चरित्र का प्रमाण है।

अपने 'बुढ़ापे के पुरुषार्थ' का वे उल्लेख करते हैं, परन्तु हमें उनकी पुरुषार्थ-वृत्ति में कहीं बुढ़ापा नज़र नहीं आता। ऐसा साधक कभी बूढ़ा नहीं होता। वह तो 'कुखन्नेवेह कर्माणि' का संकल्प लेकर चलता है और बस चलता ही रहता है—'चरैवेति'। मेरा मकान शीर्षक एक निबन्ध में उन्होंने एक स्वनिर्मित सवैये में अपनी जीवनचर्या का उल्लेख किया है—

तास छुए नहिं हाथन सौं, सतरंजहु में नहि बुद्धि लगाई।
जीवन को सुखपायु न रंचक लेखक में निज बैस गमाई॥

उनके बुढ़ापे के अहसास और 'बैस गमाई' जैसी उक्ति से भी हम सहमत नहीं हैं। उन्होंने अकबर इलाहाबादी को कहीं उद्धृत किया भी है—
बुढ़ापा वक्त की बेजा रवानी है।
अगर जिन्दादिली है, तो बुढ़ापा भी जवानी है॥

उम्र भर यथा शक्य उत्कृष्ट और भव्य भावोद्बोधक साहित्य की सर्जना करके भारती के मन्दिर को अगणित कृति-प्रसूनों के सम्भार और उनकी सुगन्ध से भर देने वाले वाग्देवी के इस अनथक उपासक की स्मृति निश्चय ही अभिवन्दनीय है।

इस पुस्तक में इक्कीस निबन्ध संगृहीत हैं। ये सभी यत्र-तत्र प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु किसी पुस्तक में इनका संग्रहण नहीं हो सका है। प्रकाशन का क्रम इन शीर्षकों के अन्तर्गत है—वैयक्तिक, संस्मरण, सांस्कृतिक-साहित्यिक, सामाजिक-राजनैतिक तथा व्यंग्य। इस संग्रह में भारतीय दर्शनों की रूपरेखा जैसे विशद, गम्भीर और सुविस्तृत लेख भी हैं। इन लेखों के गुणात्मक और ऐतिहासिक महत्त्व को स्वीकार करते ही बनता है।

बाबू गुलाबराय का जीवन ऋषि जनोचित था। उनका सम्पूर्ण चिन्तन भारतीय आर्ष-परम्परा के मेल में है। सम्पूर्ण हिन्दी-जगत आगरा के ही क्या, सारे साहित्य-जगत के बाबूजी की यश:गन्ध से परिव्याप्त है। **—डॉ० नारायण शर्मा 'सुमित्र'**

गुप्त साम्राज्य

पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित नवीन संस्करण

लेखक

परमेश्वरीलाल गुप्त

इतिहास-लेखन कला भी है और साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग भी। अक्सर इस सम्बन्ध में चर्चा होती रहती है। अकबरनामा, बाबरनामा, जहाँगीरनामा जैसे अनेक ग्रन्थ क्या इतिहास हैं या जीवन-चरित? इस सम्बन्ध में मत-मतान्तर होते रहते हैं। हमारे पुराण भी इतिहास हैं क्योंकि इसके माध्यम से भारत की प्राचीनतम परिस्थितियों की जानकारी मिलती है, लेकिन आज के देशी और विदेशी इतिहासकार इनको मिथक मानकर स्वीकार नहीं करते। प्राचीन भारतीय इतिहास के सूत्र इतने कम और इतनी अधिक दिशाओं में प्रक्षिप्त हैं कि उनको एक सुनिश्चित रूप देना सहज नहीं है। सुलभ सामग्री का विवेचन और विश्लेषण कर ही इतिहास का रूप तैयार होता है। इस दिशा में डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त का भगीरथ प्रयास प्रशंसनीय है। गुप्त साम्राज्य का राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास तैयार करने में उन्हें अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ा है। शोधपरक सामग्री, उत्खनन से प्राप्त सिक्के, टेराकोटा प्रभृति के विश्लेषण से इतिहास का रूप निर्मित होता है। इस ग्रन्थ के लेखक ने सन् 1970 ई० में इसे प्रकाशित कराया था। तब से शोधादि सामग्री तथा मुद्राओं से अनेक ऐसे तथ्य आए जिनसे पुनर्लेखन तथा नई सामग्री का विवेचन-विश्लेषण करना पड़ा। प्रस्तुत ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण सन् 1991 ई० में प्रकाशित हुआ। लेखक का श्रमसाध्य अनुसन्धान तब से जारी रहा। मुद्रा-शास्त्री होने की वजह से तथा नई-नई सामग्री प्राप्त होने से विषय-वस्तु में परिवर्तन, परिवर्धन और विवेचन करना पड़ा। भारत के प्राचीन इतिहास में गुप्त-वंश या गुप्त साम्राज्य बड़ी ही उत्कर्षपूर्ण विरासत रही है। लेखक आजीवन साधक के रूप में इस कार्य में निमग्न रहे हैं। ग्रन्थ के इस तीसरे संस्करण में इतिहास-सम्मत आधुनिकतम तथ्यों का समावेश किया गया

है जिससे स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पूर्वापेक्षा नई सामग्री पढ़ने को मिलेगी। परमेश्वरीलाल गुप्त इस धरती पर नहीं हैं, लेकिन उनका शोधसम्पन्न विवेचन पाठकों को आगे के अध्ययन में सहायता प्रदान करेगा।

''यह पुस्तक पहली बार 1970 ई० में प्रकाशित हुई थी। उसके लगभग तीस बरस बाद वह पुनर्मुद्रित हुई। उस समय अनेक कारणों से श्रेयस्कर यही जान पड़ा कि पुस्तक को यथावत् ऑफसेट पद्धति से मुद्रित किया जाय और नव-ज्ञात सामग्री और अपने संशोधित विचारों को अलग से 'पुनश्च' के रूप में जोड़ दिया जाय। इस अन्तराल में नयी शोध-सामग्री के रूप में कुछ अभिलेख और सिक्कों के निखात प्रकाश में आये हैं। अनेक स्थलों पर मुझे अपने पूर्वप्रतिपादित विचारों को नये सिरे से सोचने की आवश्यकता भी जान पड़ी। अत: यह अपने संशोधित-परिवर्तित रूप में नये सिरे से प्रकाशित की जा रही है।

मेरा यह प्रयास अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच समादरित हुआ और लोगों ने जिस रूप में इसकी सराहना की इसका प्रमाण यह संस्करण है जो आपके सामने आ रहा है। उसे मैं अपनी एक बड़ी उपलब्धि समझता हूँ, और यह मेरे लिए हार्दिक प्रसन्नता का विषय है।''

—डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

तत्वानुभूति

लेखक

महामहोपाध्याय

पद्मविभूषण डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

सम्पादक : **एस०एन० खण्डेलवाल**

प्रात:स्मरणीय महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराजजी की साधनोज्वल प्रज्ञा में जिस तत्वानुभूति का प्रतिफलन हुआ था, यह उसी का संकलन है। तत्त्व से यहाँ षट्त्रिंश त्तव किंवा पंचतत्त्वादि परब्रह्मरूप सत्ता है, जो तत्वातीत होकर भी सर्वतत्त्वमय है। इनका तत्त्वातीत रूप मन-वाणी-अनुभूति, सबसे परे है। जीवदशा में इनके इस रूप की अनुभूति कर सकना भी असम्भव है, यहाँ तक की इनकी धारणा भी इस देहयन्त्र से कोई कैसे कर सकता है? तथापि महापुरुष के अन्त:चक्षु इनके तत्त्वमय स्वरूप की अनुभूति कर ही लेते हैं, यही है परमतत्त्व की अनुग्रह रूप कृपा। स्वप्रयत्न से कोई भी इस तत्त्वानुभूति का अधिकारी नहीं हो सकता। यह कृपा-सापेक्ष है।

यह अनुग्रहानुभूति सामान्य जन के लिए दुष्प्राप्य है। इस अनुभूति प्रभा को धारण करने योग्य जिस चित्तफलक की आवश्यकता है, वह पाकर भी मनुष्य उस पर संश्लिष्ट कल्मष का मार्जन नहीं कर सका है।

ऐसी स्थिति में महापुरुष की तत्त्वानुभूतिपूर्ण वाङ्मयी त्रिपथगा में, ज्ञान-भक्ति-कर्म की अन्त: सलिला में निमज्जन करके जिज्ञासुवर्ग अवश्य कृतार्थ होगा और उसके इस स्नान से स्वच्छ-धौत-निष्कल्मष चित्तफलक पर किंचित परिमाण में वह अनुभूति अवश्य प्रतिच्छवित हो सकेगी।

वाक्योग

अध्यात्म तत्त्व-चिन्तन

लेखक : **प्रो० कल्याणमल लोढ़ा**

सम्पादक : **डॉ० अवधेश प्रसाद सिंह**

आचार्य कल्याणमल लोढ़ा द्वारा रचित ग्रन्थ **'वाक्योग : अध्यात्म तत्त्व-चिन्तन'** में भारतीय अध्यात्म, जीवन दर्शन एवं संस्कृति के कई महनीय तत्त्वों पर बहुत ही गम्भीर एवं अन्वेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अशेष सारस्वत साधना के प्रतीक पुरुष आचार्य लोढ़ा ने इसके पूर्व भी भारतीय धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म से सम्बन्धित अनेक विषयों पर कई ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें भारतीय जनमानस को हमेशा से उद्बुद्ध करने वाले अनेक तत्त्वों पर गहन विचार-विमर्श किया गया है। अलग-अलग पुस्तकों में सोम तत्त्व, प्रणव तत्त्व, कर्म तत्त्व, पुनर्जन्म तत्त्व, मोक्ष तत्त्व, प्राण तत्त्व, भक्ति तत्त्व, श्रद्धा तत्त्व, काम तत्त्व, नीति तत्त्व आदि अनेक तत्त्वों पर विशद एवं विश्लेषणात्मक विचार उपलब्ध हैं, जो पाठकों को उन तत्त्वों पर और भी गम्भीर अध्ययन हेतु प्रेरित करते हैं।

भारतीय मनीषा के गम्भीर अध्येता होने के नाते आचार्य लोढ़ा ने भारतीय अध्यात्म, दर्शन, तत्त्व-चिन्तन, धर्म, संस्कृति आदि का जितना ही गहन मनन किया है उसे उतने ही रूपों में पुनर्प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। उन्हें जब भी अवकाश मिला है उन्होंने उन विषयों पर प्रचुर मात्रा में लिखा है। वाक् का विशेष साधक होने के कारण वाक् के प्रति उनका आकर्षण सर्वाधिक रहा है। वाक् को अपनी साहित्यिक साधना की चरम विभूति के रूप में ग्रहण करते हुए उन्होंने भारतीय मनीषियों द्वारा की गई वाक् की अत्यन्त गूढ़, व्यापक और गम्भीर व्याख्याओं पर विशेष रूप से विवेचन करने की चेष्टा की है। उन्होंने अपनी अनेक कृतियों का नामकरण भी इसी वाक् को केन्द्र में रख कर किया है। **वाक्पथ, वाग्विभव, वाक्तत्त्व, वाक्सिद्धि, वाग्दोह, वाग्मिता** आदि इसके उदाहरण हैं। वस्तुत: वाक् के विभिन्न रूपों की विवेचना उनकी अन्यतम उपलब्धि है। वे मानते हैं कि ''वाक् ही सृष्टि का मूल मन्त्र है—ज्योति का रूप। सारा विश्व वाक् का ही स्वरूप है।'' इसके लिए वे वेदों, उपनिषदों, पुराणों आदि से असंख्य उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और कहते हैं कि जो वाक् की सामर्थ्य नहीं जानते वे नष्ट हो जाते हैं क्योंकि वाक् से ही परमार्थ को जाना जा सकता है एवं उससे आत्मरूप बना जा सकता है। ''वाक् मन में प्रतिष्ठित हो और मन वाक् में। यही मेरे भीतर प्रत्येक तत्त्व में आविर्भूत हो। वाक् और मनस-तत्त्व दोनों युग्म हैं और अभिन्न। वाक् की उपेक्षा से कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। भारतीय संस्कृति का मेरुदंड वाक् सिद्धि है। वाक् से ही प्राणियों में जीवन, प्राणदर्शन, चित्त शक्ति प्राप्त होती है।''

'वाक्योग : अध्यात्म तत्त्व-चिन्तन' नामक इस ग्रन्थ में आचार्यवर ने मानवीय चिंतन को उत्कर्ष प्रदान करने वाले विभिन्न तत्त्वों—ब्रह्म तत्त्व, नाद तत्त्व, मन्त्र तत्त्व, धर्म तत्त्व, रहस्य तत्त्व, चेतना तत्त्व एवं काव्य तत्त्व के माध्यम से भारतीय आर्ष-चिंतन को अध्यात्म और दर्शन, रहस्यवाद, मानवतावाद एवं पाश्चात्य दर्शन के आलोक में विवेचित किया है और उनका गम्भीर अवगाहन-अन्वेषण करते हुए आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उनकी महत्ता एवं उपयोगिता सिद्ध की है। क्योंकि आधुनिक विज्ञान भी आज अध्यात्म के निकट आने लगा है। राबर्ट ब्लीचफोर्ड, हेराल्ड शोलिंग, आइंस्टीन, जेम्स जीन जैसे अनेक वैज्ञानिकों ने विज्ञान को अध्यात्म से जोड़ कर देखने की चेष्टा की है।

यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक-यथार्थ

लेखिका

डा० (कु०) ऋतु वार्ष्णेय

लेखिका ने आधुनिक-युग में परिवर्तित अथवा परिवर्तमान-परिवेश में यथार्थ को दृष्टि में रखते हुए यशपाल की सृजन-यात्रा को प्रस्तुत पुस्तक में उकेरा है। उन्होंने 'दादा-कामरेड', 'देश-द्रोही', 'पार्टी-कामरेड', 'मनुष्य के रूप', 'भूखा-सच' और 'मेरी-तेरी उसकी बात' जैसे यशपाल के राजनीतिक उपन्यासों का परिचय देते हुए उनमें अनुस्यूत सामाजिक-यथार्थ का सुष्ठु और प्रशंसनीय अंकन किया है। 'दिव्या', 'अमिता' और 'अप्सरा का श्राप' प्रभृति यशपाल के ऐतिहासिक-उपन्यासों में निहित ऐतिहासिक-यथार्थ का अत्यन्त ही सुन्दर गम्भीर विद्वत्ता-पूर्ण आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने में डा० ऋतु वार्ष्णेय पूर्ण सफल रही हैं।

स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ

प्रो० कुसुमलता केडिया

प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र

द्वितीय संस्करण : 2009 ई०

सजि. : रु० 180.00

अजि. : रु० 120.00

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

खुशबू अंतहीन (कविता संग्रह) अक्षय गोजा, प्रकाशक : मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली-110092, द्वितीय संस्करण, मूल्य : 100/-रु०

× × × निरन्तर प्रगति के लिये संघर्ष करता हुआ मनुष्य जीवन के विभिन्न स्तरों से गुजरता है और संघर्ष की समस्याओं, पीड़ाओं, सफलताओं, असफलताओं के बीच अपने ही सत्य से साक्षात्कार करता है। कदम-कदम पर मानव-दानव की युद्ध-क्रीड़ा के बीच वह महसूस करता है × × ''आखिर जीत होती है मानव की ही / चाहे कितने विलम्ब से सही।''

रोज़ एक कविता : रोज़ एक पाठक, विष्णुप्रिया, प्रकाशक : हिन्दी हृदय, 1 सुब्रह्मण्यन् एवेन्यू, वाल्मीकि नगर, तिरुवान्मियूर, चेन्नै-600041, मूल्य : पत्रंपुष्पं

× × × धुर दक्षिण के चेन्नैनगर में रहते हुए डॉ० एस० सुब्रह्मण्यन् 'विष्णुप्रिया' जी अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम हिन्दी-भाषा को बनाकर, संकल्पपूर्वक जो साहित्य-साधना कर रहे हैं उसी की फलश्रुति है 'रोज़ एक कविता : रोज़ एक पाठक'। स्थानाभाव के कारण समीक्षा नहीं अपितु आपके हिन्दी-व्रत और साहित्य-साधना के लिये अभिनन्दन।

आने वाले कल की कहानियाँ, दयानन्द वर्मा, प्रकाशक : माइंड एंड बॉडी रिसर्च सेन्टर, W-21, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1, नई दिल्ली-110048, प्रथम संस्करण, मूल्य : 120/-रु० मात्र

× × × सप्रेम चपत लगाते हुए इन व्यंग्य-कथाओं का अनूठा बाँकपन सहज ही पाठक को अपनी ओर खींच लेता है। संग्रह की सभी कहानियाँ जीवन के हर क्षेत्र पर काबिज़ होते बाजारवाद की पड़ताल करती हैं। वैज्ञानिक उपलब्धियों और उनके खोखलेपन के बीच बाजार के दाँव-पेंच, मीडिया के प्रसार-विस्तार एवं उनके बीच गुजरते लोगों की मानसिकता मिलजुल कर व्यंग्य की रचना कर देते हैं और मुस्कान आ ही जाती है।

गहरी है यह नदिया, (उपन्यास), अनन्तकुमार पाषाण, प्रकाशक : जीवन प्रभात प्रकाशन, 221, गुरुगोविन्द सिंह इंडस्ट्रियल एस्टेट, गोरेगाँव-पूर्व, मुम्बई-400063, मूल्य : 60/-रु० मात्र

× × × हमारा देश विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का मिलन बिन्दु रहा है। दीर्घकालीन इतिहास परम्परा ने इस देश के भूगोल में क्रमशः विश्व की समग्र सांस्कृतिक विरासत सहेज ली है। किन्तु यह सांस्कृतिक इयत्ता मानव-सापेक्ष है। किसी ईकाई में बँधे हुए मनुष्य का जीवन, उसका संघर्ष, उसकी भावनाएँ-संवेदनाएँ व्यापक हो जाती हैं। उसी व्याप्ति के बीच भारतीय ईसाई एवं दूसरे समुदायों के अन्तर्सम्बन्ध के बीच आज़ादी के पूर्व दून स्कूल एवं दिल्ली-स्थित कॉलेज छात्रों के माध्यम से भौतिक शरीर और आत्मा एवं ऐन्द्रिक सुख—वासना और प्रेम को रेखांकित करता उपन्यास है 'गहरी है यह नदिया'।

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा, (नाटक), डॉ० रासानि, अनुवाद : वाई०सी०पी० वेंकटारेड्डी, प्रकाशक : शांतिप्रिय प्रकाशन, यरविंकापल्ली, वेल्लमद्दी वाया-पटनम-515501, जिला-अनंतपुर (आन्ध्र प्रदेश), प्रथम संस्करण, मूल्य : 50/-रु० मात्र

× × × सनातन धर्म के मध्यकालिक सम्प्रदायभेद से उपजे शैव-वैष्णव संघर्ष की पृष्ठभूमि में जन्मी तेलुगु वाङ्मय की 'मीरा' तरिगोंडा वेंगमांबा के जीवन-वृत्त का नाट्य-रेखांकन है प्रस्तुत नाटक। 18-19वीं सदी की यह भक्त-साधिका महान योगिनी एवं कवियित्री थी। आधुनिक तेलुगू साहित्य में वेंगमांबा प्रस्थान बिन्दु भी हैं। डॉ० रासानि के इस नाटक का हिन्दी अनुवाद वाई०सी०पी० रेड्डी ने प्रस्तुत किया है जो स्वयं तेलुगु-हिन्दी के विद्वान भी हैं। वैसे नाट्य-भाषा की दृष्टि से यह अनुवाद पुनर्-संशोध्य है।

आनन्दमय दिव्य जीवन की खोज, खेमचन्द्र चतुर्वेदी, प्रकाशक : साहित्यागार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर, प्रथम संस्करण, मूल्य : 250 रुपये

सहज-सरल तरीके से धर्म-दर्शन, वेद-उपनिषद, जैनागम-बौद्धागम के बीच से गुजरते हुए लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयत्न है 'आनन्दमय दिव्य जीवन की खोज'।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 **फरवरी-मार्च 2010** **अंक : 2-3**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)